04 - पत्रकारों की स्वतंत्रता को बल देती सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी

05 - डिजिटल सम्प्रेषण को गुणवत्ता देते चिट्ठी युगीन लोग

A Daily News Magazine
भोपाल
बुधवार, 09 अक्टूबर, 2024

06 - लोगों की सेहत पर पड़ रहा विपरीत प्रभाव, नगर पालिका नहीं दे रही ध्यान

07- वो महकते-चहकते ख़त

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-42 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

कविता
मेरे जीवन का
लहू है

कविता
मेरी साँसों का
सरगम है

कविता
उम्मीद के पंछी की
उड़ान है

कविता
प्रेम का
घर है

कविता
आकाश का धरती से
मिलन है

कविता
अमृत का
घट है।

– दुर्गाप्रसाद झाला

प्रसंगवश

आधुनिक टेक्नालॉजी के जरिए लड़ाई में भारत तीन दशक पीछे है

ले.जन. एच.एस. पनाग (रिटा.)

हाल ही में सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में एक विद्वान मित्र ने किसी भी सेना के लिए वे 15 सामरिक बातें गिनाई हैं, जिनका पालन आज सैन्य टेक्नालॉजी में भारी विकास के कारण बिल्कुल नया रूप ले चुके युद्धक्षेत्र के लिए बेहद जरूरी हैं। ये सबक रूस-यूक्रेन युद्ध और इजरायल-गज़ा/ हमास/ ईरान युद्ध से हासिल हुए हैं। इन लड़ाइयों में अत्याधुनिक हथियारों और सपोर्ट सिस्टम का सफलता के साथ प्रयोग किया गया है।

मैं यहां इन बुनियादी सामरिक जरूरतों-मसलन फायर पावर, सुरक्षा, और गतिशीलता- से संबंधित बातों की चर्चा करूंगा। टेक्नालॉजी में तमाम विकास के बावजूद, जमीन की रक्षा या उस पर कब्जा जमीन पर उतरकर ही किया जा सकता है। वैसे, सैन्य टेक्नालॉजी और इन तीन बुनियादी उपायों का प्रभुत्व कई वर्षों से युद्धनीति को स्वरूप प्रदान करता रहा है।

निगरानी और टोही व्यवस्था के उपग्रह, ड्रोन, विमान, रडार, इलेक्ट्रॉनिक/साइबर खुफियागिरी जैसे साधनों ने युद्धक्षेत्र को पारदर्शी बना दिया है। ये टेक्नालॉजी स्थिर और गतिशील लक्ष्यों की सटीक पहचान कर सकती है और उन्हें हवा या जमीन पर तैनात 'प्रीसीजन गाइडेड म्यूनीशन' (पीजीएम) से 100 प्रतिशत निशाना बनाया जा सकता है। इसमें कटौती करने वाली वजहें हैं- संसाधन और लागत, और गतिज युद्ध सामग्री की मारक क्षमता, जो इस बात पर निर्भर करती है कि लक्ष्य को कितनी मजबूत सुरक्षा हासिल है। वैसे, इस सीमा को सस्ते ड्रोनों और गहरी मार करने वाली युद्ध सामग्री के इस्तेमाल से कुछ हद तक तोड़ा जा सकता है। बचाव के मोर्चे पर हम प्रथम विश्वयुद्ध वाली मशहूर खंदकों और 'टनेल डिफेंस' की वापसी भी देख रहे हैं। कमांड व कंट्रोल सिस्टम, फायर कंट्रोल, गाइडेड मिसाइलों/म्यूनीशनों आदि को नाकाम करने वाली इलेक्ट्रॉनिक और साइबर जैमिंग आदि हमलावर पक्ष और बचाव पक्ष के लिए भी खतरे बढ़ा देती है।

ऐसे माहौल में फायर पावर और सुरक्षा तथा बचाव पक्ष को गतिशीलता के मामले में स्पष्ट बढ़त हासिल होती है। हमलावर को जमीन पर कब्जा करने के लिए मजबूरन खुले में आकर कार्रवाई करनी पड़ती है। जब तक सुरक्षा और फायर सपोर्ट का 70-80 फीसदी हिस्सा नष्ट नहीं किया जाता। यही वजह है कि यूक्रेन या गाज़ा में सेनाओं की संयुक्त कार्रवाई (जो द्वितीय विश्वयुद्ध और उसके बाद भी लड़ाइयों में काफी प्रचलित थी) के बावजूद बड़े भूभाग पर कब्जा नहीं किया जा सका है।

वैसे, बढ़त एक सापेक्ष उपलब्धि है, क्योंकि हमलावर और बचाव पक्ष खुफियागीरी, टोही तथा निगरानी कार्रवाइयों के खिलाफ जवाबी उपाय कर सकते हैं। इलेक्ट्रॉनिक तथा साइबर युद्धों, ड्रोन, हवा/जमीन से की जाने वाली मार के खिलाफ सुरक्षा कवच बनाया जा सकता है, जैसा कि यूक्रेन ने कुर्स्क आक्रमण के दौरान बनाया था। लागत और संसाधन इसमें भी कमजोरी की वजह बन सकते हैं।

सार यह कि युद्धनीति में बुनियादी बदलाव आ गया है। विशाल फौजी डिवीजन और कोर आकार की सैन्य टुकड़ी के साथ संयुक्त सैन्य कार्रवाई के दिन गए। अब सारे युद्ध कुशल संयुक्त आर्म्स ब्रिगेड, छोटी यूनिटों और नयी टेक्नालॉजी के पूर्ण उपयोग के लिए बनाए गए संगठनों की मदद से लड़े जाएंगे।

अधिकतर आधुनिक सेनाएं अब तक बहुआयामी टेक्नालॉजी से लैस अत्याधुनिक वेपन सिस्ट्म्स का इस्तेमाल करती रही हैं। ताकतवर और अमीर देश महंगी सैन्य टेक्नालॉजी पर लंबे समय से एकाधिकार रखते थे। चूंकि सैन्य टेक्नालॉजी का हमेशा दोहरा इस्तेमाल किया जाता रहा है, इसके असैनिक-व्यावसायिक संस्करण को सरल, सस्ता और फौरन उपयोग के काबिल बनाना जरूरी हो गया। यह टेक्नालॉजी आज बड़े पैमाने पर सस्ती और प्रभावी वेपन सिस्ट्म्स उत्पादित कर रही है।

फिलहाल जो नयी वेपन सिस्ट्म्स सामने हैं उनमें ड्रोन जैसे मनुष्य द्वारा संचालित 'एआई' (आर्टिफ़ीशियल इंटेलिजेंस) और रोबो सिस्टम शामिल हैं, जो सस्ते, कुरबान किए जाने योग्य हैं और जिन्हें भारी संख्या में उत्पादित किया जा सकता है। यूक्रेन की रक्षा महंगे नहीं बल्कि भारी संख्या में उत्पादित एफपीवी ड्रोनों ने की है, जो सैकड़ों गुना सस्ते हैं और जिनका इस्तेमाल अग्रिम मोर्चे पर तैनात सैनिक भी कर सकता है। यूक्रेन के लॉन्ग रेंज ड्रोन काफी सस्ते हैं। इन ड्रोनों ने न केवल रूसी नौसैनिक बेड़े को पश्चिमी ब्लैक सी से भगा दिया बल्कि 1700 किमी दूर मॉस्को को भी निशाना बनाया।

जरा सोचिए, 500 डॉलर के ड्रोन 1 करोड़ डॉलर के टैंक को नष्ट कर रहे हैं या 2000 डॉलर के ड्रोन का मुक़ाबला करने के लिए 20 लाख डॉलर की मिसाइल का इस्तेमाल करना पद रहा है। अगले करीब दो दशकों में महंगे अत्याधुनिक सिस्ट्म्स के साथ एआई या रोबो वाले सस्ते सिस्ट्म्स का भी उपयोग किया जाने लगेगा। और आगे चलकर एआई या रोबो वाले सस्ते सिस्ट्म्स ही सबसे ज्यादा इस्तेमाल में होंगे।

सेना के सेक्शन से लेकर कोर तक कमांड के सभी स्तर पर युद्धक्षेत्र में पारदर्शिता बरतनी होगी। ऐसा न कर पाने वाली सेना बराबरी की लड़ाई नहीं लड़ पाएगी। जो पक्ष ज्यादा पीजीएम तैनात करेगा वह बढ़त ले लेगा। यूक्रेन और हमास ने इस मॉडल के प्रयोग का प्रदर्शन कर दिया है।

मौजूदा कम्यूनिकेशन और गाइडेड वेपन सिस्ट्म्स काफी मात्र में इलेक्ट्रानिक/साइबर सिग्नल भेजते हैं, जिनके चलते उन्हें ईडब्लू और सीडब्लू की मदद से रोकना, भटकाना आसान हो जाता है। ये सिग्नल अपने स्त्रोत का सटीक पता बता देते हैं। अब स्त्रोत के महत्व के हिसाब से उन्हें जमीन, हवा या ड्रोन पर तैनात पीजीएम से मिनटों के अंदर मार गिराया जाता है। पारदर्शी युद्धक्षेत्र और पीजीएम सेना की सुरक्षा को जरूरी बनाते हैं। सीमाओं की सुरक्षा की स्थायी व्यवस्था के लिए सेना और साजोसामान को भूमिगत रखना पड़ेगा। इस मामले में 'टनेल डिफेंस' व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करते हैं। परोक्ष उपायों के अलावा सुरक्षा या आक्रमण के लिए तैनात सेना को एंटी ड्रोन या हवाई सुरक्षा के कवच के साथ इलेक्ट्रानिक/साइबर युद्ध कवच भी मुहैया कराना पड़ेगा। मुझे कोई संदेह नहीं है कि भारतीय सेना यूक्रेन-रूस, और इजरायल-हमास/हिज्बुल्लाह/ईरान/हाउती लड़ाइयों से उभरते सबक का अध्ययन कर रही है। लेकिन बदलाव का खाका अभी सामने नहीं आया है। मेरा आकलन यह है कि भारतीय सेना उभरती टेक्नालॉजी को पूर्ण परिवर्तन की खातिर नहीं बल्कि चरणबद्ध बदलाव के लिए अपना रही है, जबकि पूर्ण परिवर्तन वक्त की मांग है। चीन ने अपना परिवर्तन 2015 से ही शुरू कर दिया था और 2035 तक वह इसे पूरा कर लेगा। अफसोस कि हमने पिछले एक दशक में इस दिशा में लगभग कोई प्रगति नहीं की जबकि चीन सैन्य दृष्टि से हमसे कहीं आगे बढ़ चुका है।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

हरियाणा में बीजेपी की हैट्रिक, मिली प्रचंड जीत

लगातार तीसरी बार बन रही सरकार, कांग्रेस के साथ हो गया 'खेला'

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा के परिणामों में बीजेपी तीसरी बार सरकार बनाने जा रही है। राज्य में ऐसा करने वाली पहली पार्टी होगी। पार्टी को कुल 90 सीटों में से 49 सीटों पर बढ़त है। 41 सीटों पर जीत मिल चुकी है उधर, कांग्रेस को 3 सीटों पर बढ़त है। 33 सीटों पर जीत दर्ज कर चुकी है। मुख्यमंत्री नायब सैनी

और कांग्रेस नेता भूपेंद्र हुड्डा अपनी-अपनी सीटों पर बढ़त बनाए हुए हैं।

उधर, कांग्रेस ने चुनाव आयोग पर आरोप लगाया है कि जानबूझकर चुनाव आयोग की वेबसाइट पर रिजल्ट धीमे-धीमे शेयर किया जा रहा है। क्या भाजपा प्रशासन पर दबाव बनाने की कोशिश कर रही है। मतगणना सुबह 8 बजे शुरू हुई। रुझान आते ही कांग्रेस ने बढ़त बना ली थी और कुछ देर तक एक तरफा जीत की ओर थी। पार्टी ने 65 सीटों को छू लिया था। भाजपा कम होकर 17 सीटों पर आ गई थी। लेकिन 9.30 बजे भाजपा टक्कर में आ गई।

आम आदमी पार्टी की जम्मू-कश्मीर में लग गई लॉटरी

केजरीवाल हरियाणा में खाता नहीं खोल पाए पर घाटी से मिला सरप्राइज गिफ्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू कश्मीर विधानसभा चुनाव के रिजल्ट आ गए हैं। जहां एक तरफ कांग्रेस-एनसी गठबंधन का विजय रथ धूम मचा चुका है वहीं इसी बीच आम आदमी पार्टी ने भी अपना खाता खोल दिया है। जम्मू कश्मीर की 90 विधानसभा सीटों में से डोडा सीट पर आम आदमी पार्टी के प्रत्याशी मेहराज मलिक ने जीत दर्ज की है। डोडा विधानसभा में एएपी की जीत 4,770 वोटों से हुई है। उन्हें कुल 22,944 मिले हैं। जबकि दूसरे नंबर रहे बीजेपी के गजय सिंह राणा को 18,174 वोट मिले हैं। जबकि तीसरे नंबर जम्मू एंड कश्मीर नेशनल कॉन्फ्रेंस के उम्मीदवार रहे हैं। मेहराज मलिक ने अपने एक्स हैंडल पर अपनी जीत के घोषणा का वीडियो शेयर किया है। जिसमें

मतगणना केंद्र से अधिकारी डोडा से उनकी जीत का ऐलान कर रहे हैं। जम्मू कश्मीर में 10 साल बाद विधानसभा चुनाव हो रहे हैं। इससे पहले साल 2014 में बीजेपी को डोडा सीट पर जीत मिली थी। उसे पहले यहां पर कांग्रेस का कब्जा रहा है। हालांकि अब इस सीट पर आम आदमी पार्टी के उम्मीदवार ने ऐतिहासिक जीत दर्ज की है। इस विधानसभा चुनाव में डोडा सीट पर करीब 73 हजार लोगों ने मतदान किया था।

जम्मू-कश्मीर में इंडिया गठबंधन को मिला बहुमत

- एनसी-कांग्रेस ने किया किला फतह, बीजेपी के सपने चकनाचूर
- फारुक अब्दुल्ला का बड़ा ऐलान, उमर अब्दुल्ला बनेंगे सीएम

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव के परिणाम आ गए हैं। नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) और कांग्रेस गठबंधन की सरकार बन रही है। गठबंधन को 48 सीटों पर जीत मिली है। जिसमें से नेशनल कॉन्फ्रेंस ने 42 सीटें जीत ली हैं। वहीं कांग्रेस को 6 सीटों पर जीत मिली है। वहीं बीजेपी 29 सीटों पर जीत हासिल कर चुकी है। पीडीपी ने 3 सीटें जीत ली है। एक सीट आम आदमी पार्टी को मिली है। 7 सीटों पर निर्दलीय भी जीत दर्ज कर चुके हैं। 90 सीटों वाली विधानसभा में बहुमत का आंकड़ा 46 है। इस बीच, नेशनल कांफ्रेंस के अध्यक्ष फारुक अब्दुल्ला ने कहा- उमर अब्दुल्ला जम्मू-कश्मीर के अगले सीएम होंगे। उमर अब्दुल्ला दो सीट पर चुनाव लड़े। बडगाम में उन्हें जीत मिली, गांदरबल का किला भी उन्होंने फतह कर लिया है। जम्मू-

कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती की बेटी इल्तिजा मुफ्ती श्रीगुफवारा-बिजबेहरा सीट से हार गईं। उन्होंने कहा- मैं लोगों के फैसले को स्वीकार करती हूं। उधर भाजपा अध्यक्ष रविंद्र रैना नौशेरा सीट से हार गए हैं। जम्मू-कश्मीर में 18 सितंबर से 1 अक्टूबर तक 3 फेज में 63.88 फीसदी वोटिंग हुई थी। 10 साल पहले 2014 में हुए चुनाव में 65 फीसदी वोटिंग हुई थी। इस बार 1.12 फीसदी कम वोटिंग हुई। फारुक अब्दुल्ला ने कहा, जनता ने जनादेश दे दिया है। इससे साबित होता है कि 5 अगस्त को 370 हटाने का जो फैसला लिया गया, उसे लोगों ने स्वीकार नहीं किया।

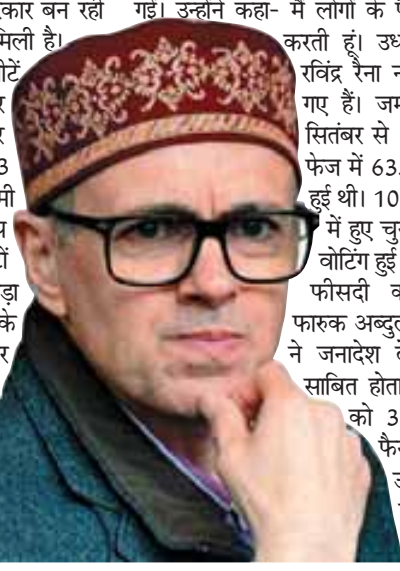

पीएम आवास योजना के लिए आवास सखी ऐप लॉन्च

योजना के बारे में मिलेगी जानकारी ; ग्राम सड़क सर्वे और प्लानिंग ऐप भी हुआ लॉन्च

भोपाल/सीहोर (नप्र)। प्रधानमंत्री आवास योजना के दूसरे चरण में बनाए जाने वाले मकानों के लिए अब लोगों को घरों के डिजाइन और राज मिस्त्री की जानकारी आसानी से मिल सकेगी। इसके लिए केंद्रीय पंचायत और ग्रामीण विकास विभाग के मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने एक ऐप आवास सखी के नाम पर लॉन्च किया है।

वहीं, केंद्रीय पंचायत और ग्रामीण विकास विभाग ने एक अन्य ऐप ग्राम सड़क सर्वे और प्लानिंग लॉन्च किया है। यह ऐप सड़क विहीन गांवों की जानकारी देगा। साथ ही अधिकतम लोगों को फायदा पहुंचाने वाले रूट की जानकारी देगा। जिसके आधार पर सड़क निर्माण किया जा सके।

ये दोनों ही मोबाइल ऐप मंगलवार को सीहोर जिले

के भैरूंदा में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, केंद्रीय पंचायत और ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान और अन्य मंत्रियों की मौजूदगी में लॉन्च किया गया है।

पीएम आवास योजना से 3 शर्तें हटाई गई- पीएम आवास के लिए पात्रता में आड़े आ रहीं तीन शर्तों को हटा दिया है। यह शर्तें मोबाइल, मोटर साइकिल और ढाई एकड़ सिंचित व पांच एकड़ असिंचित जमीन को लेकर थी। यह होने पर आवास योजना के लिए अपात्र घोषित कर दिया जाता था। इन शर्तों को हटने के बाद एक बड़ा वर्ग पीएम आवास योजना के लिए पात्रता के दायरे में आएगा।

कार्यक्रम में ग्राम विकास सम्मेलन के दौरान मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान, मंत्री प्रहलाद पटेल समेत अन्य उपस्थित थे।

ऐसे काम करेगा सखी ऐप

- आवास सखी मोबाइल ऐप के माध्यम से हितग्राही मोबाइल ऐप पर योजनाओं के बारे में जानकारी हासिल कर सकेंगे।
- ऐप हितग्राहियों को उनके घर के डिजाइन, बीआईएस प्रमाणित सामग्री और ग्रामीण राजमिस्त्री की जानकारी देगा।
- यह मोबाइल ऐप आवास योजना के हितग्राहियों के लिए ऑनलाइन सुविधा केंद्र की तरह काम करेगा।

ग्राम सड़क सर्वे और प्लानिंग ऐप

- इस ऐप से वर्ष 2011 की जनगणना के आधार पर उन गांवों और बस्तियों का पता लगाया जा रहा है जहां अब तक सड़क नहीं बन पाई है।
- सर्वे के बाद सड़क बनाने की योजना और सड़क कहां से होकर गुजरेगी। यह सब एक खास तरह के जीआईएस नक्शे में दिखाया जाएगा।
- इसकी जानकारी को एक बड़ी योजना पीएम गति शक्ति पोर्टल पर डाला जाएगा।
- इससे पता चलेगा कि अधिक से अधिक लोगों को लाभ पहुंचाने के लिए सड़क किधर से गुजरनी चाहिए।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 36.3 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ बुधवार, 09 अक्टूबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

लेबनान पर समंदर के रास्ते हमला करेगा इजराइल

भूमध्य सागर से सटे 60 किमी इलाके में न जाने की चेतावनी; 120 मिसाइलों से जमीनी हमला किया

बेरूत/तेल अवीव (एजेंसी)। इजराइली सेना ने कहा कि वह जल्द ही लेबनान के दक्षिणी तटीय इलाके में ऑपरेशन शुरू करेगी। सेना ने लेबनान के लोगों को समुद्र तटों से दूर रहने की सलाह दी है। न्यूज एजेंसी के मुताबिक मछुआरों को भूमध्य सागर से सटे 60 किलोमीटर तक के इलाके में ना जाने की चेतावनी दी गई है। इजराइली सेना ने कहा कि उन्होंने सोमवार को एक घंटे के भीतर साउथ लेबनान में हिजबुल्लाह के 120 से ज्यादा ठिकानों को निशाना बनाया। लेबनान

की हेल्थ मिनिस्ट्री के मुताबिक इस हमले में 10 फायर फाइटर्स (दमकलकर्मी) की मौत हो गई। इसके अलावा अभी भी कई लोग मलबे में दबे हुए हैं। हवाई हमलों के साथ-साथ इजराइली सेना का दक्षिण लेबनान में हिजबुल्लाह के ठिकाने पर ग्राउंड ऑपरेशन भी जारी है। इस दौरान सोमवार को दो इजराइली सैनिकों की मौत हो गई। लेबनान के ग्राउंड ऑपरेशन में अब तक 11 इजराइली सैनिकों की जान जा चुकी है। हिजबुल्लाह ने सोमवार को 190 रॉकेट्स दागे।

संक्षिप्त समाचार

सप्तम मां कालरात्रि

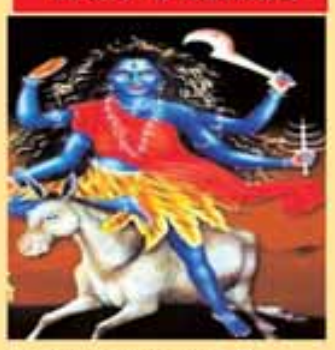

मां के सप्तम रूप का नाम है माँ कालरात्रि। यह मां का अति भयावह व उग्र रूप है। सम्पूर्ण सृष्टि में इस रूप से अधिक भयावह और कोई दूसरा नहीं। किन्तु तब भी यह रूप मातृत्व को समर्पित है। देवी मां का यह रूप ज्ञान और वैराग्य प्रदान करता है।

बेंगलुरु में बर्थडे केक खाने से बच्चे की हो गई मौत

बेंगलुरु (एजेंसी)। बेंगलुरु के भुवनेश्वरी नगर इलाके में सोमवार को बर्थडे केक खाने से 5 साल के एक बच्चे की मौत हो गई। उसके माता-पिता की हालत गंभीर है। दोनों अस्पताल के आईसीयू में भर्ती हैं। हालत गंभीर बताई जा रही है। कपल की पहचान बलराज और नागलक्ष्मी के रूप में हुई है।

उनके बच्चे का नाम धीरज था। बलराज स्वीगी कंपनी में डिलीवरी बॉय का काम करते हैं। रविवार, 6 अक्टूबर को एक कस्टमर ने केक का ऑर्डर कैंसिल कर दिया था, जिसके बाद बलराज केक अपने घर ले आए थे। हालांकि कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में कहा जा रहा है कि बलराज ने अपने बेटे के बर्थडे पर स्वीगी के जरिए एक बेकरी से केक ऑर्डर किया था। उन्होंने अपने बेटे धीरज का जन्मदिन मनाया। पूरे परिवार ने साथ मिलकर केक काटा और खाया। फिर डिनर करके सो गए। अस्पताल पहुंचने से पहले ही बच्चे की मौत हुई सोमवार सुबह तीनों के पेट में तेज दर्द होने लगा।

उत्तराखंड में यूसीसी का ड्रॉफ्ट तैयार, जल्द होगा लागू

देहरादून (एजेंसी)। उत्तराखंड में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) को लागू करने को लेकर अंतिम रिपोर्ट तैयार कर ली गई है। राज्य सरकार की तरफ से बनाई गई यूसीसी कमेटी इस रिपोर्ट को जल्द ही मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी को सौंपेगी। यह रिपोर्ट उत्तराखंड में यूसीसी लागू करने के लिए

तैयार की गई सिफारिशों का मसौदा है, जिसमें विवाह, तलाक, उत्तराधिकार, और गोद लेने जैसे व्यक्तिगत कानूनों को समान रूप से लागू करने के प्रावधान शामिल हैं। सीएम धामी ने हाल ही में घोषणा की थी कि सरकार 9 नवंबर को उत्तराखंड स्थापना दिवस पर यूसीसी लागू करना चाहती है। उत्तराखंड ऐसा करने वाला देश का पहला राज्य होगा। 13 मार्च को यूसीसी बिल को राष्ट्रपति से मंजूरी मिली थी।

सस्टेनेबल लिविंग मतलब न्यूनतम में गुजारा: लोकेंद्र ठक्कर

भोपाल। हम जब सस्टेनेबल या टिकाऊपन की बात करते हैं तो यह क्या होता है? सबसे अधिक सस्टेनेबल टीशर्ट क्या है। मुझे लगता है कि सबसे अधिक सस्टेनेबल टीशर्ट है जो इस वक्त आपने पहले रखी है। इसका अर्थ है आप कितने न्यूनतम में गुजारा कर सकते हैं। इसलिए हर वस्तु खरीदने के पहले खुद से पूछिए कि क्या वास्तव में उसकी आवश्यकता है। अधिकांश बार आपको जवाब ना का ही मिलेगा।

ये बातें पर्यावरणविद् और एप्को (पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन) से जुड़े लोकेंद्र ठक्कर ने कही। वे स्वर्गीय पुष्पेंद्र पाल सिंह (पीपी सर) के जन्मदिवस के मौके पर आयोजित कार्यक्रम में पर्यावरण, पत्रकारिता और हम विषय पर बोल रहे थे।

ठक्कर ने पीपी सर के व्यक्तित्व को पर्यावरण हितैषी बताते हुए कहा कि वे निजी जीवन में भी सस्टेनेबल लिविंग का ख्याल रखते थे। उन्होंने कहा मैंने पुष्पेंद्र जी को कभी अलग-अलग कपड़ों में या ब्रांडेड कपड़ों में नहीं देखा। पुष्पेंद्र जी को कभी हमने ब्रांडेड कपड़ों में नहीं देखा। पुष्पेंद्र जी से हमें सस्टेनेबल लाइफस्टाइल की सीख मिलती है। वे एक लिविंग लिडेंज थे, जिनसे हम सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए।

उन्हें याद करते हुए वे कहते हैं कि पुष्पेंद्र जी कागज का भी सही इस्तेमाल करते थे। बैक ऑफ द इनवेलेप कैल्कुलेशन का मतलब क्या है, लोग लिफाफों का इस्तेमाल भी करते थे। टिश्यू पेपर का इस्तेमाल हाल के दिनों में काफी बढ़ा है, जो कि पहले देखने को नहीं मिलता था। पहले हम टीश्यू की जगह कपड़ों का

इस्तेमाल करते थे।

उन्होंने पत्रकारिता में तकनीक को लेकर बताते हुए कहा कि पर्यावरण को लेकर के मुझे लगता है कि पर्यावरण और पत्रकारिता इन दोनों विषयों पर बहुत बड़ी चुनौती है। तकनीक की वजह से रिपोर्टिंग आसान हुई है, लेकिन आप क्या लिख रहे हैं यह काफी महत्वपूर्ण हो गया है। निष्पक्ष रूप से पत्रकारिता करना मुश्किल हो गया है और एक पत्रकार को बहुत सारी बाधाओं के बीच काम करना पड़ता है। पत्रकारिता के लिए अपनी पहचान को बनाए रखना चुनौतीपूर्ण है। पहले पर्यावरण की हल्की रिपोर्टिंग होती थी लेकिन अब काफी खबरें हो रही हैं और काफी गहराई से। मेरी अपनी जानकारी अखबारों से काफी बढ़ती है। पर्यावरण की रिपोर्टिंग में काफी तरक्की हुई है लेकिन रिपोर्टिंग को लेकर अभी काफी चुनौतियां हैं। तकनीक की सहायता से यह कैसे बेहतर होगा यह देखना पड़ेगा।

कार्यक्रम में मौजूद पीपी सर के विद्यार्थी, साथी और परिवार के सदस्य मौजूद थे। उन्होंने उनसे जुड़े अपने संस्मरण साझा किए।

मीडिया शिक्षक जयंत तोमर ने पीपी सिंह की स्मृतियों को दर्ज करने की आवश्यकता बताई। वरिष्ठ पत्रकार सरमन नगेले ने पीपी सर के साथ बिताए वक्त का उल्लेख कर उनके व्यक्तित्व की चर्चा की।

वरिष्ठ पत्रकार पंकज शुक्ला ने पीपी सर को याद करते हुए कहा कि वे अजातशत्रु की तरह थे और उनका कोई शत्रु नहीं थी। भले ही कोई उन्हें अपना शत्रु मानता हो। उन्होंने हमें अक्षर को देखना, समझना सिखाया और आखर को पहचानने की क्षमता दी है। वरिष्ठ पत्रकार संदीप कुमार ने बताया समय को पढ़ने की अद्भुत क्षमता थी उनके अंदर। बिना किसी अपेक्षा के वे दूसरों के लिए काम करते थे और उनका यह गुण हमें सीखना चाहिए। उन्होंने हमें समझाया कि कैसे अपने निजी पसंद-नापसंद को नजरअंदाज करके प्रोफेशन में आगे बढ़ना चाहिए। पीपी सर की छोटी बहन योगिता सिंह ने बताया कि भैया हमारे बड़े भाई थे लेकिन उन्होंने मुझे बेटी की तरह पाला। वह अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देते थे और बुखार में भी वह कहते मैं ठीक हूं और काम में लग जाते थे। उन्होंने कहा, भले ही वह मेरे भाई हों लेकिन मुझे अब लगता है कि उनमें कोई अलग ही शक्ति थी, मानो विवेकानंद हों।

कार्यक्रम के सूत्रधार राकेश मालवीय ने पीपी सर के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर करते हुए उनका स्मरण किया। स्वागत उद्बोधन रितेश पुरोहित ने दिया। आरंभ में अनिल धीमन और राजेश कुमार ने पीपी सर के पसंद के गीतों को गा कर श्रद्धांजलि दी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने वायु सेना दिवस पर गगन प्रहरियों को दीं शुभकामनाएं

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भारतीय वायु सेना दिवस पर समस्त गगन प्रहरियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। सोशल मीडिया पर जारी संदेश में उन्होंने लिखा है कि वायु सेना के शूरवीरों ने सदैव अपने अदम्य साहस, शौर्य तथा कर्तव्य निष्ठा से भारत माता की सेवा की है। देशवासियों को वायुसेना पर गर्व है।

माँ नर्मदा के जल को निर्मल रखने मुख्य सचिव की अध्यक्षता में अंतर्विभागीय कार्यकारिणी समिति गठित

भोपाल (नप्र)। राज्य शासन ने प्रदेश में जीवन दायिनी माँ नर्मदा के जल को निर्मल तथा अविरल प्रवहमान एवं समग्र विकास के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में गठित मंत्री-मण्डल समिति द्वारा लिये गये निर्णयों तथा निर्देशों के पालन के लिए अन्तर्विभागीय कार्यकारिणी समिति का गठन मुख्य सचिव की अध्यक्षता में किया है।

समिति में अपर मुख्य सचिव, पंचायत एवं ग्रामीण विकास, वन, प्रमुख सचिव, नगरीय विकास एवं आवास तथा राजस्व विभाग सदस्य होंगें। प्रमुख सचिव योजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी समिति के सदस्य सचिव होंगे।

पिकअप की टक्कर से पति-पत्नी की मौत, नाती गंभीर

महिला को 150 फीट तक घसीटता ले गया ; हाथ का पंजा कटकर दूर जा गिरा

सेंधवा (नप्र)। बड़वानी के सेंधवा में तेज रफ्तार पिकअप वाहन ने सड़क किनारे खड़े तीन लोगों को टक्कर मार दी। दंपती और उनका एक साल का नाती छिटककर दूर जा गिरे। दंपती की मौके पर ही मौत हो गई जबकि बच्चा गंभीर है। उसे सेंधवा के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

पिकअप महिला को करीब 150 फीट तक घसीटता ले गया। शव पिकअप वाहन के नीचे बाइक के साथ दबा मिला। एक हाथ का पंजा भी कटकर दूर जा गिरा। पिकअप का ड्राइवर मौके से भाग निकला।

सड़क किनारे खड़े होकर चाय पी रहे थे- पुलिस के मुताबिक, हादसा मंगलवार सुबह करीब 6 बजे हुआ। संजय मंडले उर्फ संजू सेंधवा (44) की अभिनव कॉलोनी में रहते थे। ऑटो रिक्शा चलाते थे। वे पत्नी कल्पना (40) और नाती अंशु के साथ शहर से 16 किमी दूर महाराष्ट्र बॉर्डर पर बने बड़ी बिजासन माता के मंदिर दर्शन करने जा रहे थे।

नेशनल हाईवे पर गवाड़ी गांव में ग्रामीण श्रद्धालुओं को चाय बांट रहे थे। पति-पत्नी अपनी बाइक खड़ी कर चाय पीने लगे। इसी दौरान इंदौर में सब्जी खाली कर मुंबई की ओर जा रहे तेज रफ्तार पिकअप वाहन ने उनको टक्कर मार दी।

श्रद्धालुओं को चाय बांटने के लिए लगा था स्टॉल- प्रत्यक्षदर्शी राजेंद्र गुप्ता ने बताया, नवरात्रि में माता के दर्शन के लिए पैदल जाने वाले श्रद्धालुओं को चाय बांटने के लिए गवाड़ी में पेट्रोल पंप के आगे स्टॉल लगाते हैं। सुबह करीब 6 बजे बाइक सवार पति-पत्नी और एक बच्चा चाय पीने रुके थे। सड़क किनारे बाइक के पास ही वे लोग चाय पी रहे थे। इसी बीच पिकअप वाहन ने उनको टक्कर मार दी। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि शायद पिकअप वाहन के ड्राइवर को झपकी लग गई थी। जिसके चलते पिकअप दंपती को टक्कर मारते हुए आगे जाकर रुका।

पिकअप जब्त, ड्राइवर की तलाश जारी- हादसे की सूचना मिलते ही बिजासन चौकी प्रभारी धनेश्वर पाटील फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे। घायल बच्चे को एंबुलेंस से इलाज के लिए सेंधवा पहुंचाया। उन्होंने बताया कि पिकअप वाहन जब्त कर लिया गया है। मामले की जांच की जा रही है। आरोपी को जल्द पकड़ लिया जाएगा।

नाती की मन्नत उतारने जा रहे थे मंदिर

संजय के भतीजे यश ने बताया, मेरी चचेरी बहन दीपाली दो दिन पहले ही महाराष्ट्र के शिरपुर स्थित अपने ससुराल से मायके सेंधवा आई थी। नवरात्रि के चलते मन्नत लेकर दीपाली पैदल अपनी रिश्तेदार के साथ बड़ी बिजासन माता के दर्शन के लिए मंगलवार सुबह करीब 4.30 बजे घर से निकली थी।

विनेश फोगाट जहां जाएंगी, कांग्रेस का सत्यानाश ही होगा

बृज भूषण सिंह ने जताई प्रतिक्रिया,कहा-कांग्रेस को तो डुबो दिया

गोंडा (एजेंसी)। हरियाणा विधानसभा चुनाव में कांग्रेस उम्मीदवार विनेश फोगाट की जीत गई हैं। विनेश फोगाट की जीत पर पूर्व बीजेपी सांसद बृज भूषण शरण सिंह ने प्रतिक्रिया व्यक्त की है। मंगलवार को उन्होंने कहा-हमारा नाम लेकर अगर वे (विनेश फोगाट) जीत गईं तो इसका मतलब हम महान आदमी हैं। कम से कम मेरे नाम में इतना दम तो है कि मेरा नाम लेकर उनकी नइया पार हो गई लेकिन कांग्रेस को तो डुबो दिया...राहुल बाबा का क्या होगा। भारतीय कुश्ती संघ के पूर्व अध्यक्ष बृज भूषण शरण सिंह ने कहा कि विनेश फोगाट जहां-जहां जाएंगी, कांग्रेस का सत्यानाश ही होगा।

यह लड़ाई देश की सबसे मजबूत दमनकारी शक्तियों के खिलाफ थी

विनेश बन गईं विधायक, उनकी जीत पर बोले बजरंग पूनिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। रेसलर विनेश फोगाट ने विधानसभा चुनाव जीत लिया है। कांग्रेस ने जुलाना से विनेश को टिकट दिया था। उन्होंने भाजपा को योगेश कुमार को हरा दिया है। पेरिस ओलंपिक के बाद विनेश फोगाट के साथ बजरंग पूनिया भी कांग्रेस में शामिल हुए थे। विनेश की जीत के बाद उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, देश की बेटी विनेश फोगाट को जीत की बहुत बहुत बधाई। यह लड़ाई सिर्फ एक जुलाना सीट की नहीं थी, सिर्फ 3-4 और प्रत्याशियों के साथ नहीं थी, सिर्फ पार्टियों की लड़ाई नहीं थी। यह लड़ाई देश की सबसे मजबूत दमनकारी शक्तियों के खिलाफ थी, और विनेश विजेता रहीं।

7500 पुलिसकर्मियों के भरोसे थी 15 लाख की भीड़

चेन्नई एयर शो में गई थी 5 लोगों की जान

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु के चेन्नई में मरीना बीच पर वायुसेना के एयर शो के दौरान भगदड़ में मारे गए 5 लोगों के अंतिम संस्कार सोमवार को हुए। करीब 200 घायल लोग अभी भी अस्पताल में भर्ती हैं। 8 अक्टूबर को भारतीय वायुसेना के 92वें स्थापना दिवस से पहले 6 अक्टूबर को चेन्नई में एयर शो हुआ था। इस एयर शो को लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड में दर्ज कराने के लिए 15 लाख लोगों की भीड़ जुटाने का लक्ष्य था। स्थानीय प्रशासन का दावा है कि इससे ज्यादा लोग पहुंचे, इसलिए व्यवस्थाएं बिगड़ गईं। भारी भीड़ और गर्मी के चलते 5 लोगों की मौत हो गई। एयर शो का नाम लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में शामिल हो गया है। एयर शो 11 बजे शुरू होना था, लेकिन लोग 7 बजे से पहुंचने लगे। मेट्रो-बस स्टेशनों पर भारी भीड़ थी। फिर भी प्रशासन ने भीड़ का अंदाजा नहीं लगाया।

चीन सिर्फ प्रतिद्वन्द्वी नहीं उससे हमें बड़ा खतरा...

एयर चीफ के बयान पर ड्रैगन का आया जवाब,कहा-भारत हमें प्रतिद्वंद्वी न माने

बीजिंग (एजेंसी)। चीनी सरकार का मुखपत्र कहे जाने वाले ग्लोबल टाइम्स ने विशेषज्ञों के हवाले से एक रिपोर्ट करते हुए कहा है कि भारतीय वायुसेना (आईएएफ) को चीन को प्रतिद्वंद्वी की तरह नहीं देखना चाहिए। चीनी अखबार में यह टिप्पणी भारत के एयर चीफ मार्शल एपी सिंह के बयान के जवाब के तौर पर आई है। सिंह ने सोमवार को एक इंटरव्यू में माना था कि भारत सैन्य प्रौद्योगिकी और रक्षा उत्पादन में चीन से काफी पिछड़ गया है। सिंह ने तकनीक, रक्षा उत्पादन और बुनियादी ढांचे में चीन की प्रगति को स्वीकार किया है। फर्स्टपोस्ट की रिपोर्ट कहती है कि चीन का यह कहना कि भारत उसे प्रतिद्वंद्वी ना माने, कई सवाल खड़े करता है। दरअसल यह पहचानना जरूरी है कि चीन की भूमिका प्रतिद्वंद्वी से आगे तक है। वह भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा है। चीन खुद बड़े स्तर पर अपनी सैन्य क्षमताओं को मजबूत करने के लिए काम कर रहा है लेकिन भारत को वह मजबूत होते नहीं देखना चाहता है। एक्सपर्ट के इस दावे को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है कि चीन भारत की हवाई युद्ध में बढ़त को लगातार कम कर रहा है।

कांग्रेस ने लोकसभा-विधानसभा चुनावों में खर्च किए 585 करोड़

चुनाव आयोग को बताया-स्टार कैंपेनर्स की हवाई यात्रा में 105 करोड़ खर्च हुए

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव 2024 और आंध्र, अरुणाचल, ओडिशा, सिक्किम विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने 585 करोड़ रुपए खर्च किए हैं। पार्टी ने 20 मार्च से 1 जून तक हुए कुल 5 चुनावों के खर्च का ब्योरा चुनाव आयोग को सौंपा है। रिपोर्ट में कांग्रेस ने बताया कि 585 करोड़ में से 410 करोड़ रुपए ऐड और मीडिया कैंपेन पर खर्च किए गए हैं। वहीं, 46 करोड़ रुपए सोशल मीडिया और ऐप के वर्चुअल कैंपेन के लिए खर्च किए गए हैं। दरअसल, सभी पार्टियों को अपना चुनावी खर्च का ब्योरा चुनाव आयोग को रिजल्ट घोषित होने के 75 से 90 दिनों के अंदर देना होता है। समय सीमा खत्म होने पर भी जब पार्टियां जानकारी नहीं देती है तो चुनाव आयोग पार्टियों को नोटिस भेजता है, जिसका पार्टियां महीनों तक जवाब नहीं देती हैं।

यूनिफॉर्म, बुक्स के लिए दबाव डाला तो मान्यता होगी रद्द

स्कूल संचालक पर होगी एफआईआर, न्यू अकैडमिक सेशन से पहले आदेश

भोपाल (नप्र) भोपाल के किसी भी स्कूल ने पेरेंट्स पर यूनिफॉर्म या बुक्स के लिए दबाव डाला तो स्कूल की मान्यता रद्द कर दी जाएगी। स्कूल संचालक, प्राचार्य के खिलाफ भी केस दर्ज किया जाएगा। नए शिक्षा सत्र के 6 महीने पहले भोपाल में जिला शिक्षा अधिकारी (डीईओ) नरेंद्र कुमार अहिरवार ने इसके आदेश जारी कर दिए हैं। कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह भी अगले शिक्षा सत्र के लिए निर्देश जारी कर चुके हैं।

डीईओ ने बताया, सभी प्राइवेट स्कूल (एमपी बोर्ड, सीबीएसई, आईसीएसई) के प्रिंसिपल को निर्देश जारी किए गए हैं। उन्हें कहा गया है कि वे पेरेंट्स को किसी एक दुकान से बुक्स, यूनिफॉर्म और दूसरी चीजें खरीदने के लिए मजबूर न करें। शिकायत मिलने पर मान्यता रद्द करने की कार्रवाई की जाएगी। सीबीएसई और आईसीएसई की मान्यता रद्द करने के लिए प्रस्ताव बनाएंगे।

स्कूल संचालकों के लिए गाइडलाइन

- अगले शिक्षण सत्र से पहले किताब के लेखक और प्रकाशक के नाम, मूल्य के साथ क्लावाइस पुस्तक और यूनिफॉर्म विक्रेताओं की लिस्ट स्कूल के नोटिस बोर्ड पर चस्पा करना होगी।
- किसी भी तरह की शिक्षण सामग्री पर स्कूल का नाम नहीं होना चाहिए। स्कूल के नोटिस बोर्ड पर लिखना होगा कि शिक्षण सामग्री कहां मिलेगी।
- किताबों के अलावा यूनिफॉर्म, टाई, जूते, कॉपियां आदि भी उन्हीं की शालाओं से उपलब्ध या विक्रय कराने का प्रयास नहीं किया जाएगा।
- स्कूल की स्टेशनरी या यूनिफॉर्म पर स्कूल का नाम प्रिंट कराकर दुकानों से नहीं बेचा जाएगा।
- एक विशेष दुकान से सामग्री बेचना प्रतिबंधित किया गया है।

इसलिए पड़ी जरूरत

यूनिफॉर्म हो या बुक्स या फिर किसी भी प्रकार की स्टेशनरी, अभिभावकों को मनमानी कीमत चुकानी पड़ रही है। पहली से आठवीं तक की किताबों के सेट 2500 से 6000 रुपए तक मिलते हैं। यदि पेरेंट्स दूसरी दुकानों पर जाते हैं तो वहां नहीं मिल पाती। ऐसा ही यूनिफॉर्म को लेकर भी है। स्कूल का लोगो लगी यूनिफॉर्म निर्धारित दुकानों से ही मिलती है। बेल्ट, टाई भी पेरेंट्स मनमाने दाम पर खरीदने को मजबूर होते हैं। इस बार छह महीने पहले आदेश जारी करने का मकसद यह है कि पेरेंट्स को कोई दिक्कतें न हो। साथ ही स्कूल और बुक्स दुकान संचालकों की मनमानी पर भी रोक लग सके।

छह महीने पहले कार्रवाई कर चुका प्रशासन

प्राइवेट स्कूलों की मोनोपोली में ब्रेक लगाने के लिए इस साल जिला प्रशासन कई स्कूल और बुक्स की दुकानों पर नकेल कस चुका है। छह महीने पहले एमपी नगर समेत कई इलाकों में कार्रवाई की गई थी।

34,368 छात्राओं को नहीं मिल रही स्कॉलरशिप

गांव की बेटी और प्रतिभा किरण योजना के लाभ से वंचित छात्राएं, प्राचार्यों से मांगी रिपोर्ट

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश की 34 हजार बेटियों को राज्य सरकार की गांव की बेटी और प्रतिभा किरण योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा है। 12वीं की पढ़ाई के बाद ग्रेजुएशन कर रहीं इन स्टूडेंट्स को शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में पढ़ने के दौरान अलग-अलग योजनाओं में 500 रुपए महीने स्कॉलरशिप दिए जाने का प्रावधान उच्च शिक्षा विभाग ने किया है। लेकिन, इनके खातों में सरकार पैसा जमा नहीं कर पा रही है।

अब सभी सरकारी कॉलेजों के प्राचार्यों से इस संबंध में रिपोर्ट मांगी गई है। योजना में निजी कॉलेज में पढ़ने वाली बेटियों को भी लाभ दिए जाने की व्यवस्था है लेकिन इनके बारे में अभी फैसला नहीं हुआ है। उच्च शिक्षा विभाग द्वारा संचालित ये दोनों ही योजनाएं बेटियों को हायर एजुकेशन के लिए प्रोत्साहित करने के लिए हैं। इसमें गांव में रहकर पढ़ने वाली बेटियों के लिए गांव की बेटी और शहरी क्षेत्र में रहकर पढ़ाई करने वाली बीपीएल कैटेगरी की छात्राओं को 500 रुपए महीने प्रोत्साहन राशि दी जाती है।

3 नए जिलों में अब तक रिकॉर्ड तैयार नहीं

गांव की बेटी योजना के लिए प्रदेश के मऊगंज, पांढुर्णा, मैहर जिलों के लिए अब तक अलग से रिकॉर्ड नहीं तैयार किए जा रहे हैं। इसके आधार पर प्रदेश के सभी 52 जिलों में इस योजना में 1 लाख 47 हजार 679 बेटियों के आवेदन संबंधित कॉलेज के प्राचार्य के माध्यम से किए गए हैं। इसके विपरीत 30 हजार 461 बेटियों के आवेदन पेंडिंग हैं और उन्हें 500 रुपए महीने के हिसाब से दी जाने वाली स्कॉलरशिप नहीं मिल रही है। निवाड़ी जिले में तो एक भी आवेदन नहीं भरा गया है। इसी तरह प्रतिभा किरण योजना के अंतर्गत शहरी इलाकों की 11235 बेटियों को इस योजना का लाभ दिलाने के लिए आवेदन किया गया लेकिन 3907 बेटियों को पिछले साल तक इस योजना का लाभ नहीं मिल पाया है।

गांव की बेटी और प्रतिभा किरण योजना में ऐसे मिलेगा लाभ- जो छात्रा गांव में रहकर पढ़ने और फर्स्ट डिवीजन पास होने के बाद ग्रेजुएशन कर रही हो उसे गांव की बेटी योजना और जो शहर में रहकर स्नातक की पढ़ाई कर रही हो, उसे प्रतिभा किरण योजना के अंतर्गत 500 रुपए प्रतिमाह दिए जाएंगे। इस तरह 10 माह के शैक्षणिक सत्र में इस बेटी को 5000 रुपए प्रतिवर्ष मिलेंगे।

सभी चिकित्सकीय प्रक्रियाओं की जानकारी अस्पतालों के बोर्ड पर प्रदर्शित करना अनिवार्य : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

आयुष्मान योजना में निःशुल्क उपचार की जानकारी दिखेगी बोर्ड पर

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल के निर्देश पर आयुष्मान भारत 'निरामयम्' योजना के अंतर्गत सूचीबद्ध निजी चिकित्सालयों में निःशुल्क उपचार की जानकारी प्रदर्शित करने के आदेश जारी किए गए हैं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा है कि प्रदेश के सभी नागरिकों को योजना का पूरा लाभ मिले, इसके लिए यह आवश्यक है कि सूचीबद्ध चिकित्सालयों में प्रवेश द्वार के समीप बड़े अक्षरों में यह जानकारी प्रदर्शित की जाये कि किन चिकित्सकीय प्रक्रियाओं के लिए वह चिकित्सालय सूचीबद्ध है। इसके साथ ही, यह भी स्पष्ट किया जाये कि आयुष्मान योजना के तहत हितग्राहियों को निःशुल्क और कैशलेस उपचार की सुविधा मिलेगी।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल, डॉ. प्रभाकर तिवारी ने भोपाल जिले के सभी अस्पताल/ नर्सिंग होम संचालकों को निर्देशों का पालन सुनिश्चित करने को कहा है। उन्होंने कहा कि आयुष्मान योजना की जानकारी को नागरिकों के लिए सुलभ और सरल बनाना अत्यंत महत्वपूर्ण है, ताकि हितग्राही बिना किसी कठिनाई के इस योजना का लाभ उठा सकें।

नशा मुक्ति का संदेश देने बच्चों ने बनाई मानव श्रृंखला

गायत्री परिवार भोपाल मद्य निषेध सप्ताह के तहत चला रहा नशा मुक्ति अभियान

भोपाल (नप्र)। भोपाल गायत्री परिवार और सामाजिक न्याय विभाग के संयुक्त तत्वावधान में मद्य निषेध सप्ताह के अंतर्गत नशा मुक्ति अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत सोमवार को गायत्री शक्ति पीठ परिसर में बच्चों व उनके परिजनों ने मानव श्रृंखला बना कर व्यसन मुक्ति का संदेश दिया। कार्यक्रम में संयुक्त संचालक

आरके सिंह द्वारा नशा मुक्ति की शपथ दिलाई गई। गायत्री शक्तिपीठ के व्यवस्थापक रामचंद्र गायकवाड ने बताया कि 2 अक्टूबर से शुरु हुए इस अभियान का समापन 8 अक्टूबर को हुआ।

कार्यक्रम में नशा मुक्ति पर केंद्रित मानव श्रृंखला एवं रैली निकाली गई, जिसमें बच्चों द्वारा नशे के दुष्परिणामों को बताया गया।

कार्यक्रम में नशा मुक्ति के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले सामाजिक संभाग के दिनेश सिंगूने, मुनीश शुक्ला, शरद श्रीवास्तव, फोटोग्राफर आनंद सक्सेना, पत्रकार संतोष योगी का सम्मान भी किया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से जन अभियान परिषद से कोकिला चतुर्वेदी, शिवराज कुशवाहा,,अशोक सक्सेना, श्याम शर्मा,राम प्रकाश गुप्ता, ओ पी ताम्रकार, सी एल चौरासे ,घनश्याम पाटीदार, डॉ. दयानंद समेले, अनिल जोशी आर वी चोरिया, अनमोल पाठक, गोपाल, कमल वर्मा, विद्यालय के शिक्षिका शामिल हुए। कार्यक्रम का संचालन रमेश नागर ने किया। उल्लेखनीय है कि कार्यक्रम में गायत्री परिवार द्वारा संचालित राम विद्यालय हिंदी एवं इंग्लिश मीडियम के छात्र छात्राओं ने बड़ी संख्या में कार्यक्रम में भाग लिया।

भोपाल में बनेगी मॉडल सड़क, जिसका मटेरियल रियूज करेंगे

50 करोड़ में टू लेन से फोरलेन में बदलेगा भोजपुर रोड, 200 पेड़ कटेंगे

भोपाल (नप्र)। भोपाल की 11 मील से बंगरसिया तक 6 किमी सड़क प्रदेश में मॉडल बनेगी। इस सड़क में एफडीआर (फुल डेप्थ रिक्लेमेशन) टेक्नोलॉजी का उपयोग होगा। यानी, मौजूदा सड़क के मटेरियल

को रियूज किया जाएगा। पीडब्ल्यूडी जल्द सड़क बनाना शुरू करेगा। 11 मील से बंगरसिया तक की सड़क की हालत खराब है। चूंकि, यह सड़क धार्मिक नगरी भोजपुर को जोड़ती है। इसलिए हर रोज हजारों लोग परेशान होते हैं। भोजपुर में दुनिया का सबसे बड़ा शिवलिंग है। यहां हर साल भोजपुर महोत्सव भी मनाया जाता है। जिसमें देश-विदेश के कवि, साहित्यकार और टीवी-फिल्म कलाकार भी शामिल होते हैं, लेकिन 6 किमी लंबी सड़क के गड्ढे उन्हें परेशान कर देते हैं। ऐसा ही श्रद्धालुओं के साथ भी होता है, लेकिन आने वाले कुछ महीनों बाद सड़क की तस्वीर ही बदल जाएगी।

कई जिलों का रास्ता भी- 11 मील से बंगरसिया तक सड़क बनने से रायसेन, विदिशा, बैतूल समेत कई जिलों के लोगों को भी बड़ी राहत मिलेगी।

टू लेन सड़क फोरलेन होगी- पीडब्ल्यूडी के चीफ इंजीनियर संजय मस्के ने बताया, भोपाल के 11 मील से बंगरसिया तक फोरलेन बना रहे हैं। इसमें नई एफडीआर तकनीक का उपयोग करेंगे। सड़क को तोड़ने में जो भी मटेरियल निकलेगा, उसे रियूज करेंगे। यह प्रदेश में मॉडल रोड बनेगी। जल्द ही काम की शुरुआत कर देंगे।

पेड़ के बदले 80 लाख रुपए दिए- 6 किलोमीटर में करीब 200 पेड़ भी कटेंगे। ज्यादातर पेड़ यूकेलिप्टस के है। इसके लिए पीडब्ल्यूडी ने वन विभाग को 80 लाख रुपए भी जमा किए हैं। अनुमति नहीं मिलने की वजह से पेड़ नहीं काटे जा सके थे।

शंकराचार्य बोले-एमपी में भी गाय को माता का दर्जा मिले

अविमुक्तेश्वरानंद ने कहा- मोहन यादव भोपाल के गोपाल, पहल करें, कांग्रेस-भाजपा ने धोखा दिया

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में गाय के लिए कानून को सरकार ने और मजबूत किया तो हम प्रशंसा क्यों नहीं करेंगे? लेकिन कोर्ट के आदेश के बाद भी अग्नि संस्कार न कराकर मुर्गी-मछलियों के लिए दाने बनाए जा रहे हैं। यहां की सरकार को गाय को माता का दर्जा देना चाहिए।

भोपाल पहुंचे ज्योतिष पीठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने मप्र में गौ हत्या के कानून को लेकर सरकार की ओर से गई सख्ती की तारीफ की। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और भाजपा ने गौ रक्षा के मुद्दे पर हमें धोखा दिया है। कांग्रेस का तो चुनाव चिन्ह दो बैलों की जोड़ी था। उन्होंने नहीं किया। फिर हमने भाजपा पर भरोसा किया लेकिन उन्होंने भी हमें धोखा दिया।

शंकराचार्य ने कहा- अब हम जनता की अदालत में इस मुद्दे को लेकर जा रहे हैं। जिस दिन इस देश का बहुसंख्यक मतदाता एकजुट हो जाएगा, उस दिन सरकार गौ को माता मानने पर मजबूर हो जाएगी। उन्होंने सीएम डॉ मोहन यादव से गाय को माता का दर्जा देने की मांग भी की। मंगलवार को जवाहर चौक के पास झरनेश्वर आश्रम में शंकराचार्य ने ये बातें कहीं।

बोले- सरकार ने अच्छा काम किया तो तारीफ की- अविमुक्तेश्वरानंद ने सीएम डॉ. मोहन यादव की तारीफ की और कहा- जब कोई अच्छा काम करता है तो हम दिल खोलकर उसकी तारीफ करते हैं। अगर बुरा करता है तो उतनी ही तेजी से प्रहार भी करते हैं। जिसकी हमने निंदा की है, अगर वह अच्छा करता तो हम उसके प्रशंसक भी हो जाते हैं। बस काम अच्छा होना चाहिए। मध्य प्रदेश में गाय के लिए कानून था, सरकार ने उसको और मजबूत किया है। ऐसे में हम प्रशंसा नहीं क्यों नहीं करेंगे?

सीएम मोहन यादव को शंकराचार्य ने कहा- भोपाल के गोपाल- शंकराचार्य ने कहा- मोहन यादव भोपाल के गोपाल हैं। यह इसीलिए कहा कि, वह गाय के लिए काम कर रहे थे, लेकिन अभी हमने देखा कि हम लोगों ने न्यायालय से लड़कर एक कानून बनवाया। उस

कानून में यह था कि गाय का अंतिम संस्कार किया जाएगा। क्योंकि, चमड़े के लिए गाय को मारा जा रहा है, तो हमने कहा कि चमड़े लगेगा ही नहीं। न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी। भोपाल के झरनेश्वर आश्रम में स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद को एक भक्त ने तलवार भेंट की।

अग्नि संस्कार के बजाय बनाया जा रहा मुर्गी-मछलियों का दाना- उन्होंने कहा- अग्नि संस्कार का आदेश कोर्ट से मिल गया। मप्र में अग्नि संस्कार होने लगा। इन्होंने अग्नि संस्कार की व्यवस्था बनाई और उसी हॉल में पार्टिशन करके मुर्गी-मछलियों को खिलाने के लिए दाना बनाने की मशीन लगा दी। यानी अग्नि संस्कार के नाम पर जब मरी हुई गाय कमरे में जाएगी तो उसका अग्नि संस्कार नहीं होगा। उसके दाने बन जाएंगे।

ये क्यों कर रहे हो। उसके लिए हमारे लड़के अनशन पर बैठे हुए हैं। धरने पर बैठे हुए यह हमको करना पड़ रहा है। यह क्यों करना पड़ रहा है। जब हमारे मुख्यमंत्री जी गो भक्त हैं तो गाय के मांस से यह सब बनाने की उनको क्या जरूरत पड़ गई ? यह जो दोहरा चरित्र है, वह ठीक नहीं।

सीएम शिंदे की तरह मोहन यादव भी गाय को माता का दर्जा दें- शंकराचार्य ने कहा- मोहन यादव सामने आएं। हम भोपाल के गोपाल के रूप में उनकी आरती उतारेंगे। वे हिम्मत करें। उन्होंने यादव वंश में जन्म लिया। जैसे महाराष्ट्र की सरकार ने साहस करते हुए गाय को माता का दर्जा दिया है आप भी कहो कि हां मध्य प्रदेश गाय को माता मानता है। बहुसंख्यक जनता की आवाज को हम मानते हैं, सरकार का यही काम है।शंकराचार्य ने कहा- मोहन यादव सामने आएं। हम भोपाल के गोपाल के रूप में उनकी आरती उतारेंगे।

राजनीति छोड़िए और गाय के मामले में एकदम साफ रहिए- उन्होंने कहा- गाय के बारे में अगर आपको सर्वे कराना है तो करा लीजिए गणना करा लीजिए। अगर मध्य प्रदेश के बहुसंख्यक लोग गाय को मां न कहते हों, तो हम पीछे हो जाएंगे। अगर कहते हैं, कि आपको इसका एहसास है तो फिर आपको गाय को मां कहने में क्यों विलंब हो रहा है? अभी तक ट्वीट क्यों नहीं आया है कि बड़ा अच्छा किया एकनाथ शिंदे ने मैं भी करूंगा।

अभी तक तो आगे आकर बोल देना चाहिए था। विलंब हो रहा है इसलिए हम मोहन यादव से अनुरोध करना चाहेंगे कि तुच्छ राजनीति छोड़िए और गाय के मामले में एकदम साफ रहिए। क्योंकि कोई अपने आपको कितना भी हिंदू कहे लेकिन जब तक वह गो भक्त नहीं होगा, हिंदू नहीं हो सकता।

म.प्र. के 21 जिलों से मानसून की विदाई रुकी

प्रदेश के पूर्वी हिस्से में बूंदाबांदी; भोपाल, इंदौर-ग्वालियर में तेज धूप

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में भोपाल, इंदौर, ग्वालियर समेत 34 जिलों से मानसून विदा हो गया है। जबलपुर समेत बाकी के 21 जिलों में मानसून की विदाई लो प्रेशर एरिया (निम्न दाब क्षेत्र) और साइक्लोनिक सर्कुलेशन ने रोक दी है। इसकी वजह से प्रदेश के पूर्वी हिस्से में बारिश हो रही है जबकि पश्चिमी हिस्से में तेज धूप निकल रही है।

मौसम विभाग के अनुसार, मंगलवार को पूरे प्रदेश में तेज धूप खिल सकती है। इससे दिन में गर्मी और उमस का असर देखने को मिलेगा। अगले 3 दिन तक ऐसा ही मौसम रहने का अनुमान है।

इससे पहले सोमवार को प्रदेश के कई शहरों में गर्मी का असर रहा। ग्वालियर में 35.6 डिग्री सेल्सियस, गुना में 35.4 डिग्री, रतलाम में 35 डिग्री और नौगांव में 35.2 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया गया। वहीं, भोपाल में पारा 33.1 डिग्री, इंदौर में 33.8 डिग्री, उज्जैन में 34.5 डिग्री और जबलपुर में 32.6 डिग्री सेल्सियस रहा। इस दिन कहीं भी बारिश नहीं हुई लेकिन पूर्वी हिस्से में बादल छाए रहे।

इन जिलों से हो चुकी मानसून की विदाई

2 अक्टूबर: ग्वालियर, मुरैना, भिंड, दतिया, शिवपुरी और श्योपुर।

5 अक्टूबर: नीमच, मंदसौर, रतलाम, उज्जैन, देवास, आगर, शाजापुर, भोपाल, सीहोर, विदिशा, रायसेन, राजगढ़, गुना, अशोकनगर, झाबुआ, आलीराजपुर, बड़वानी, इंदौर, खरगोन, खंडवा, हरदा, नर्मदापुरम, सागर, दमोह, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर और पन्ना।

बिजली कंपनी को आर्थिक क्षति पहुंचा रहे मीटर शंट करने वाले गिरोह का पर्दाफाश

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के जबलपुर सिटी सर्किल के शहर संभाग (पूर्व) के अंतर्गत बिजली विभाग की टीम ने पुलिस के साथ मिलकर मीटर शंट करने वालों के खिलाफ बड़ी काईवाई की है। बिजली विभाग की टीम ने बड़ी संख्या में विद्युत मीटर जप्त करने मे सफलता पाई है।

अधीक्षण अभियंता संजय अरोड़ा और कार्यपालन अभियंता एल. के. नामदेव ने बताया कि बिजली कंपनी के कुछ मीटर रीडरों और गिरोह के सरगना मजीद खान और उसके साथी कैलाश कोरी के द्वारा उपभोक्ताओं को कम बिजली बिल आने का लालच देकर अच्छी खासी रकम लेकर मीटर शंट किए जाते थे। मजीद खान और कैलाश कोरी दोनों के घर पर विद्युत चोरी भी पाई गई है। आरोपी कैलाश कोरी के विरुद्ध विद्युत अधिनियम की धारा 135 (ख)150 (2) 138 (घ) , 139, और 151 (ख) के तहत प्रकरण पंजीबद्ध करने हेतु थाना प्रभारी घमापुर को आवेदन दिया गया है एवं एफ आई आर दर्ज की गई है।

उल्लेखनीय है कि बाहरी व्यक्ति और कुछ बिजली कंपनी के मीटर रीडर उपभोक्ताओं के बिजली मीटर शंट कर बड़े पैमाने पर आर्थिक क्षति पहुंचा रहे थे। इसके लिए इन्होंने बकायदा एक गिरोह बना लिया था। जबलपुर सिटी सर्किल के अधीक्षण अभियंता श्री संजय अरोड़ा ने बताया है कि इस गिरोह में विभागीय नियमित और आउटसोर्स के कर्मचारी भी यदि सम्मिलित पाए जाते हैं तो उनके विरुद्ध सख्त कानूनी कार्यवाही की जावेगी।

भोपाल के मरघटिया महावीर मंदिर से निकली राम बारात

सागर की दुलदुल घोड़ी, नर्मदापुरम के ढोल और नर्तक दल रहे आकर्षण का केंद्र

भोपाल (नप्र)। शारदीय नवरात्र पर पुराना शहर की सड़कों पर भव्य राम बारात निकाली गई। बारात शाहजहानाबाद मरघटिया महावीर मंदिर से शाम सात बजे शुरू हुई। भगवान राम विद्युत सज्जायुक्त हंस रथ में अपने भ्राता लक्ष्मण और महर्षि विश्वामित्र के साथ विराजमान थे। रथ के आगे और पीछे तीन बैंड चल रहे थे, जो रामजी की निकली सवारी और अवध से चले राम मिथिला की ओर जनकपुरी में बाजे शहनाई आदि गीतों की धुन बजा रहे थे। रास्ते में कई स्थानों पर लोगों ने भगवान की आरती उतारी, पुष्प वर्षा की। सबसे आगे भगवान गणेश बग्गी

में विराजे थे, उनके पीछे भरत व शत्रुधन का रथ चल रहा था।

सागर से आई दुलदुल घोड़ी, नर्मदापुरम के ढोल और नृतक दल भी बारात की शोभा बढ़ा रहे थे। मरघटिया महावीर मंदिर से शुरु होकर बारात शहर में विविध स्थानों से होकर करीब 7 किमी का सफर तय कर 6 घंटे में रात 12 बजे जनकपुरी पहुंची। यहां वरमाला रस्म के बाद आतिशबाजी हुई, लड्डू बांटे गए। महिलाओं ने बधाई गीत गाए। जय-जय श्री राम के जयघोष से जनकपुरी गुंजायमान हो उठी। भगवान ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी बने बाराती।

सेवा संकल्प युवा संगठन के युवाओं ने किया स्वागत

सेवा संकल्प युवा संगठन के संयोजक चेतन भार्गव एवं अध्यक्ष प्रकाश मालवीय ने बताया कि संगठन के युवाओं ने सबसे पहले भगवान गणेश ,भरत व शत्रुघन भगवान श्री राम की विद्युत सज्जायुक्त रथ में की आरती उतार कर पुष्प वर्षा की एवं श्री राम बारात आयोजक सामिति के अध्यक्ष राजेंद्र गुप्ता और चल समारोह संयोजक राजू कुशवाहा, नारायण सिंह कुशवाहा, संजय अग्रवाल, मनोज घट, सहित सभी सदस्यों का गमछा पहनाकर स्वागत किया । युवाओं ने बारात में प्रभु श्री राम की जयघोष की इस अवसर पर संगठन के यश जैन, विवेक श्रीवास्तव, अंकित शर्मा, विवेक साहू , मुकेश लोधी, सहित सभी सदस्य मौजूद रहे।

संपादकीय

धार्मिक आजादी पर अमेरिकी रिपोर्ट?

भारत में धार्मिक स्वतंत्रता पर अमेरिकी आयोग की रिपोर्ट को भारत द्वारा पक्षपाती बताकर खारिज किया जाना अपेक्षित ही था। ऐसी रिपोर्टें जमीनी सच्चाई से ज्यादा दुनिया में अमेरिकी चौधराहट को मजबूत करने के लिए जारी की जाती हैं। वो इस वास्तविकता पर गौर नहीं करती कि धार्मिक स्वतंत्रता के नाम पर खुद अमेरिका में क्या हो रहा है। बहरहाल, अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता पर 2024 की वार्षिक रिपोर्ट में अमेरिकी आयोग ने भारत को 'धार्मिक स्वतंत्रता के गंभीर उल्लंघन में लिप्त होने' के लिए 'विशेष चिंता वाले देश' के रूप में सूचीबद्ध करने की सिफ़ारिश की है। भारत ने रिपोर्ट को ख़ारिज करते हुए आयोग को एजेंडा वाला पक्षपाती संगठन बताया है। यह रिपोर्ट यूनाइटेड स्टेट्स कमीशन ऑन इंटरनेशनल रिलीजियस फ्रीडम (यूएससीआईआरएफ) ने जारी की है। यह कोई सरकारी संगठन नहीं है। इस रिपोर्ट पर मीडिया के सवालों का जवाब देते हुए भारतीय विदेश मंत्रालय प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा, 'यूएससीआईआरएफ पर हमारे विचार सर्वविदित हैं। यह राजनीतिक एजेंडा वाला पक्षपाती संगठन है। यह तथ्यों को गलत तरीके से प्रस्तुत करता और भारत के बारे में प्रेरित नैरेटिव फैलाता है। हम इस दुर्भावनापूर्ण रिपोर्ट को खारिज करते हैं, जो केवल यूएससीआईआरएफ को और बदनाम करने का काम करती है। यही नहीं उन्होंने यह भी कहा कि हम यूएससीआईआरएफ से आग्रह करेंगे कि वह इस तरह के एजेंडा संचालित प्रयासों से दूर रहे। उसे यह सलाह भी दी जाएगी कि वह अपने समय का उपयोग संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में मानवाधिकार मुद्दों को उठाने में करें। गौरतलब है कि वाशिंगटन डीसी स्थित द्विदलीय अमेरिकी संघीय सरकारी एजेंसी यूएससीआईआरएफ ने भारत पर एक अपडेट जारी किया था, जिसमें धार्मिक स्वतंत्रता की स्थिति में गिरावट को चिह्नित किया गया था। रिपोर्ट में कहा गया है कि धार्मिक स्वतंत्रता की स्थिति वर्ष 2024 में और भी खराब होती जाएगी, विशेष रूप से देश के आम चुनावों से पहले और तुरंत बाद के महीनों में। रिपोर्ट 2024 में भारत में हुए विभिन्न धार्मिक स्वतंत्रता उल्लंघनों का जिक्र करते हुए देश के कानूनी ढांचे में बदलावों का विवरण है, जिसमें राज्य-स्तरीय धर्मांतरण विरोधी और आतंकवाद विरोधी कानूनों जैसे भेदभावपूर्ण कानूनों को मजबूत करना, साथ ही 2019 के नागरिकता (संशोधन) अधिनियम (सीएए) को लागू करने के नियमों का प्रकाशन और उत्तराखंड में राज्य-स्तरीय समान नागरिक संहिता (यूसीसी) विधेयक पारित करना शामिल है। रिपोर्ट में 'उपासना स्थलों और मुस्लिम संपत्ति का अधिग्रहण और विध्वंस' शीर्षक वाले खंड में कहा गया है कि 2024 की शुरुआत से भारतीय अधिकारियों ने मस्जिदों के स्थलों पर हिंदू मंदिरों के निर्माण सहित उपासना स्थलों के अधिग्रहण की सहूलियत दे दी है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि जनवरी 2024 में अयोध्या में राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा के बाद छह राज्यों में धार्मिक अल्पसंख्यकों के खिलाफ़ हमलों और असहिष्णुता की कई घटनाएं हुईं। विध्वंस के अलावा सरकार ने वैकल्पिक उद्देश्यों के लिए कई मस्जिदों को अपने कब्ज़े में ले लिया है, जो सीधे तौर पर भारत के उपासना स्थल (विशेष प्रावधान) अधिनियम का उल्लंघन है। रिपोर्ट यह भी कहती है कि अधिकारी राज्य स्तरीय नीतियों, विशेष रूप से धर्मांतरण विरोधी कानूनों का उपयोग 'भारत भर में धार्मिक अल्पसंख्यकों को निशाना बनाने के लिए' कर रहे हैं। इस रिपोर्ट में आंशिक सच्चाई हो सकती है, लेकिन पूरी रिपोर्ट का रूझान इस बात की ओर है कि धार्मिक स्वतंत्रता की आड़ में भारत और भारत सरकार को बदनाम कैसे किया जाए। इस रिपोर्ट का असली मकसद बिल्कुल साफ है। बेहतर होता कि यूएससीआईआरएफ अपने गिरेबान में भी झांकती, जहां अमेरिका में हिंदू मंदिरों पर हमले हो रहे हैं और सरकार खामोश है।

नजरिया

ललित गर्ग

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

पत्रकारों की स्वतंत्रता को बल देती सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी

सुप्रीम कोर्ट ने एक महत्वपूर्ण टिप्पणी में शुक्रवार को कहा कि पत्रकारों के विरुद्ध सिर्फ इसलिए आपराधिक मामला नहीं दर्ज किया जाना चाहिए क्योंकि उनके लेखन को सरकार की आलोचना के रूप में देखा जाता है। जस्टिस हृषिकेश राय और जस्टिस एसवीएन भट्टी की पीठ ने कहा कि लोकतांत्रिक देश में विचार व्यक्त करने की आजादी का सम्मान किया जाना चाहिए और संविधान के अनुच्छेद-19(1)(ए) के तहत पत्रकारों के अधिकार सुरक्षित किए गए हैं। सही मायनों में सुप्रीम कोर्ट ने यह कहकर सत्ताधीशों को आईना ही दिखाया है कि सरकार की रीति-नीतियों व निर्णयों की आलोचना करना पत्रकारों का अधिकार है। यह टिप्पणी उन पत्रकारों के लिये जहां राहतकारी है, वही पत्रकारिता को अधिक निडर, निर्भीक एवं बेबाक तरीके से अपना धर्म को निभाने को प्रेरित करती है। असल में विभिन्न राज्यों में विभिन्न राजनीतिक दलों की सरकारों के खिलाफ मुखर आलोचनात्मक होने पर पत्रकार दमन का शिकार बने हैं। कई राज्यों में उनकी गिरफ्तारी भी हुई, मारपीट हुई और गंभीर धाराओं में गिरफ्तारी दिखायी गई। कई पत्रकारों के संदिग्ध परिस्थितियों का शिकार बनने की खबरें भी यदा-कदा आती रहती हैं। यहां तक कि कुछ पत्रकारों पर उन धाराओं में मुकदमे दर्ज किये जाते हैं, जो कि राष्ट्र विरोधी तत्वों के खिलाफ दर्ज होते हैं। हद तो तब हो जाती है जब मुकदमें गैरकानूनी गतिविधियां निवारण अधिनियम के तहत भी दर्ज होते हैं। ऐसे मामलों में पत्रकारों की जमानत कराना भी टेढ़ी खीर बन जाती है। निश्चित तौर पर ऐसे कदम पूर्वाग्रह एवं दुराग्रह से प्रेरित होकर ही उठाये जाते हैं। निश्चय ही उन निर्भीक पत्रकारों के लिये सुप्रीम कोर्ट की हालिया टिप्पणी सुकून देने वाली है, जो राजनीतिक दुराग्रह एवं पूर्वाग्रह के शिकार बने हैं।

भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में प्रेस की स्वतंत्रता एक मौलिक जरूरत है। आज हम एक ऐसी दुनिया में जी रहे हैं, जहाँ अपनी दुनिया से बाहर निकल कर आसपास घटित होने वाली घटनाओं के बारे में जानने का अधिक वक्त हमारे पास नहीं होता। ऐसे में पत्रकार विभिन्न संकटों को झेलते हुए हमारे लिए एक खबर वाहक का काम करते हैं। पत्रकार केवल खबरे पहुंचाने का ही माध्यम नहीं है बल्कि यह नये युग के निर्माण और जन चेतना के उद्बोधन एवं शासन-प्रशासन के प्रति जागरूक करने का भी सशक्त माध्यम है। पत्रकार देश की राजनीति, सरकारों और उसके लिए आवश्यक सदाचार का माध्यम रही है। हिंसा, विपत्तियां और भ्रष्टाचार को लेकर भी अनेक पक्ष उसने समय-समय पर प्रस्तुत किये हैं। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट ने यह टिप्पणी उत्तर प्रदेश में एक पत्रकार के विरुद्ध दर्ज मुकदमे की सुनवाई के दौरान की, उसने लोकतांत्रिक देश में विचार व्यक्त करने की आजादी का सम्मान किये जाने की बात कहकर पत्रकारों को अधिक प्रखर, निष्पक्ष एवं तीक्ष्ण होकर अपना धर्म निभाने का रास्ता साफ किया है। देखना है कि अदालत के इस फैसले का सरकारों एवं राजनीतिक दलों पर कितना असर होता है? अक्सर नेता, अधिकारी एवं मंत्री आलोचना बर्दाश्त न करके मीडियाकर्मियों के खिलाफ आक्रामक हो जाते हैं। अक्सर वे अपनी ताकत का इस्तेमाल करते हुए पत्रकारों को दबाने एवं अपनी शर्तों पर पत्रकारिता कराने को बाध्य करते हैं। लोकसभा चुनाव के बाद ऐसी ही आक्रामकता राहुल गांधी में देखने को मिली जब उन्होंने प्रेस वार्ता में एक महिला पत्रकार को बेहूदे तरीके से किसी पार्टी विशेष की पक्षधर होने का आरोप लगाया, इसी तरह अखिलेश यादव ने भी एक पत्रकार को भला-बूरा कहा। ये दृश्य समूचे देश ने देखें।

यह एक स्वस्थ, आदर्श एवं जागरूक लोकतंत्र राष्ट्र के लिये अच्छा है कि अदालतें समय-समय पर अभिव्यक्ति की आजादी को संबल प्रदान करते हुए निर्भीक एवं स्वतंत्र पत्रकारिता को बल देती रही है। लेकिन विडंबना है कि आजादी के सात दशक बाद भी हमारे राजनेता एवं सरकारें रह-रहकर पत्रकारों को डराने-धमकाने से बाज नहीं आते। हम देश में आम जनमानस को भी इतना जागरूक एवं सतर्क नहीं कर पाये कि वे अपने निष्पक्ष सूचना पाने के अधिकार के प्रति जागरूक हो सकें। यही वजह है कि सच्चाई से पर्दा उठाने की कोशिश में वह निर्भीक पत्रकार के बचाव में खड़े नजर नहीं आते। वे ध्यान नहीं रखते कि उनके हित से जुड़ा कुछ सच सत्ताधीश छुपाना चाहते हैं। गलत नीतियां एवं भ्रष्टाचार इसीलिये पनपता है। राजनेता सत्ता की सुविधा के लिये मनमाफिक प्रचार तो चाहते हैं, लेकिन अपने दागों, भ्रष्ट आचरण एवं गलत नीतियों से जुड़े सच को सात पर्दों में रखना चाहते हैं।

निस्संदेह, सजग, सतर्क और निर्भीक पत्रकार एक सशक्त विपक्ष की भूमिका निभाकर सत्ताधीशों को राह ही दिखाता है। यही कारण है कि पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना गया है। अकबर इलाहाबादी ने इसकी ताकत एवं महत्व को इन शब्दों में अभिव्यक्ति दी है कि 'न खींचो कमान, न तलवार निकालो, जब तोप हो मुकाबिल तब अखबार निकालो।' उन्होंने इन पंक्तियों के जरिए प्रेस को तोप और तलवार से भी शक्तिशाली बता कर इनके इस्तेमाल की बात कह गए हैं। अर्थात् कलम को हथियार से भी ताकतवर बताया गया है। पर खबरनवीसों की कलम को तोड़ने, उन्हें कमजोर करने एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को निस्तेज करने के लिए बुरी एवं स्वार्थी ताकतें सत्ता, तलवार और तोप का इस्तेमाल कर रही हैं। लेकिन तलवार से भी धारदार कलम इसीलिये इतनी प्रभावी है कि इसकी वजह से बड़े-बड़े राजनेता, उद्योगपतियों और सितारों को अर्श से फर्श पर आना पड़ा।

पत्रकार कई संकटों का सामना कर रहे हैं- संघर्ष और हिंसा, आतंक एवं अलगाव, युद्ध एवं राजनीतिक वर्चस्व, गरीबी एवं बेरोजगारी, लगातार सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ, पर्यावरणीय संकट और लोगों के स्वास्थ्य और भलाई के लिए चुनौतियाँ आदि जटिलतर स्थितियों के बीच पत्रकार की महत्वपूर्ण भूमिका है। लोकतंत्र, कानून के शासन और मानवाधिकारों को आधार देने वाली संस्थाओं पर गंभीर प्रभाव के कारण ही यह भूमिका महत्वपूर्ण है। बावजूद इसके मीडिया की स्वतंत्रता, पत्रकारों की सुरक्षा और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर लगातार हमले हो रहे हैं। कभी-कभी भारत में प्रेस की स्वतंत्रता पर सख्त पहरे जैसा भी प्रतीत होता है, जो दुर्भाग्यपूर्ण है। जबकि बड़ी सचाई है कि इन्हीं पत्रकारों के बल पर हमें आजादी मिली है। देश में आजादी के बाद भी बड़े राजनेता मीडिया द्वारा किसी नीति या फैसले के खिलाफ की गई आलोचना को सहजता से लेते थे। हालांकि आलोचना का अर्थ हर समय निंदा करना नहीं होता। किसी भी मुद्दे के पक्ष और विपक्ष का तार्किक विश्लेषण करना होता है। पत्रकारिता यही करती है। वह लोकहित में सरकार को कदम उठाने का रास्ता सुझाती रहती है, इसीलिए उसकी विश्वसनीयता होती है। मगर सरकारें जब उसके मूल स्वभाव को ही बदलने का प्रयास करती हैं, तो उसकी विश्वसनीयता पर प्रहार करती हैं। ऐसे में पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा स्तंभ न होकर प्रचारतंत्र में तब्दील होने लगती है। पत्रकारिता आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियों को दूर करने में मदद करती है। उसका लाभ उठाने के बजाय अगर उसका गला घोटने का प्रयास होगा, तो सही अर्थों में विकास का दावा नहीं किया जा सकता, नया भारत-सशक्त भारत निर्मित नहीं किया जा सकता। अगर कोई सरकार सचमुच उदारवादी और लोकतांत्रिक होगी, तो वह आलोचना से कुछ सीखने का प्रयास करेगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भी एक आजाद एवं जीवंत प्रेस के प्रति हमारे अविश्वसनीय समर्थन को दोहराने की बात कही है जो लोकतंत्र के लिए बेहद जरूरी है।'

आज हर हाथ में पत्थर है। आज समाज में नायक कम खलनायक ज्यादा हैं। प्रसिद्ध शायर नज़्मी ने कहा है कि अपनी खिड़कियों के कांच न बदलो नज़्मी, अभी लोगों ने अपने हाथों से पत्थर नहीं फेंके हैं।÷ प्रेस ने समय-समय पर ऐसी स्थितियों के प्रति सावधान किया गया है, 'डर पत्थर से नहीं, डर उस हाथ से है जिसने पत्थर पकड़ रखा है।' महावीर, बुद्ध एवं गांधी का उदाहरण देते हुए बहुत सफाई के साथ प्रेस ने समाज को सजग किया है। प्रेस की आजादी का मुख्य रूप से यही मतलब है कि शासन की तरफ से इसमें कोई दखलंदाजी न हो, लेकिन संवैधानिक तौर पर और अन्य कानूनी प्रावधानों के जरिए भी प्रेस की आजादी की रक्षा जरूरी है। यही काम सुप्रीम कोर्ट ने किया है, जो पत्रकारों के सम्मुख उपस्थित विभिन्न झंझावातों एवं संकटों के बीच अपने प्रयासों के दीप जलाये रखने का आह्वान हैं। भारत में प्रेस की स्वतंत्रता को लहूलुहान करना और उसे जंजीरों में जकड़ने की कोशिशें करना विडम्बनापूर्ण है। इन त्रासद एवं विडम्बनापूर्ण स्थितियों में कैसे भरेगी कलम उड़ान! यही सुप्रीम कोर्ट की चिन्ता है, जिसे सत्ताधीशों को समझना होगा।

एंटीबायोटिक प्रतिरोध

डॉ. सत्यवान सौरभ

लेखक स्तंभकार हैं।

21वीं सदी का एक नया महामारी खतरा

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने वैश्विक स्वास्थ्य के लिए शीर्ष 10 खतरों को जारी किया, जिनमें से एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध (एआर) का बहुत बड़ा योगदान है, जो तपेदिक दवा प्रतिरोधी सूक्ष्म जीव के कारण हर साल 1.6 मिलियन मौतों के साथ है। एनवायरनमेंट इंटरनेशनल जर्नल द्वारा 'उच्च आर्कटिक मिट्टी के पारिस्थितिकी तंत्र में एंटीबायोटिक प्रतिरोध जीन के चालकों को समझना' अध्ययन से पता चलता है कि कुल 131 एंटीबायोटिक-प्रतिरोधी जीन (एआरजी) सामग्री का पता चला था, जिनमें से ब्लेन्डम-1 जीन, जो पहली बार 2008 में भारत में सतही जल में पाया गया था, केवल 11 वर्षों में आर्कटिक में फैल गया है। यह दर्शाता है कि एंटीबायोटिक प्रतिरोध 21वीं सदी का एक नया महामारी खतरा है। यह अब एक स्थानीय समस्या नहीं है और इसे वैश्विक स्वास्थ्य चिंता के रूप में देखा जाना चाहिए। 'एंटी-माइक्रोबियल रेजिस्टेंस बेंचमार्क' नामक एक रिपोर्ट में कहा गया है कि सालाना एआर बैक्टीरिया के कारण दुनिया भर में 700,000 मौतें होती हैं। भारत में एंटीबायोटिक की खपत में वृद्धि देखी गई है- 2000 की तुलना में 2015 में लगभग 65 प्रतिशत, जबकि इसी अवधि में खपत की दर 3.2 से बढ़कर 6.5 बिलियन दैनिक निर्धारित खुराक (डीडीडी) हो गई है।

जैविक और सामाजिक दोनों कारणों से सूक्ष्मजीव दवाओं के प्रति प्रतिरोधी बन सकते हैं। जैसे ही वैज्ञानिक कोई नई रोगाणुरोधी दवा पेश करते हैं, इस बात की अच्छी संभावना होती है कि वह किसी समय पर अप्रभावी हो जाएगी। यह मुख्य रूप से सूक्ष्मजीवों के भीतर होने वाले परिवर्तनों के कारण होता है। ये परिवर्तन विभिन्न तरीकों से हो सकते हैं। जब सूक्ष्मजीव प्रजनन करते हैं, तो आनुवंशिक उत्परिवर्तन हो सकते हैं। कभी-कभी, यह ऐसे जीन वाले सूक्ष्मजीव का निर्माण करेगा जो रोगाणुरोधी एजेंटों के सामने जीवित रहने में उसकी मदद करते हैं। इन प्रतिरोधी जीन को ले जाने वाले सूक्ष्मजीव जीवित रहते हैं और प्रतिकृति बनाते हैं। नए उत्पन्न प्रतिरोधी सूक्ष्मजीव अपने माता-पिता से जीन लेते हैं और अंततः प्रमुख प्रकार बन जाते हैं। सूक्ष्मजीव अन्य सूक्ष्मजीवों से जीन ले सकते हैं। दवा प्रतिरोध प्रदान करने वाले जीन आसानी से सूक्ष्मजीवों के बीच स्थानांतरित हो सकते हैं।

सूक्ष्मजीव आम रोगाणुरोधी एजेंटों के प्रति प्रतिरोधी बनने के लिए अपनी कुछ विशेषताओं को बदल सकते हैं। यह पहले से ही प्रतिरोधी सूक्ष्मजीवों के वातावरण में होता है। कुछ दवाओं के उपयोग के लिए सिफारिशों का पालन न करने से रोगाणुरोधी प्रतिरोध का जोखिम बढ़ सकता है। जिस तरह से लोग रोगाणुरोधी दवाओं का उपयोग करते हैं, वह एक महत्वपूर्ण योगदान कारक है। कुछ व्यक्तिपरक कारण। डॉक्टर कभी-कभी 'बस मामले में' रोगाणुरोधी दवाएं लिखते हैं, या वे व्यापक स्पेक्ट्रम रोगाणुरोधी दवाएं लिखते हैं जब कोई विशिष्ट दवा अधिक उपयुक्त होती है। इन दवाओं का इस तरह से उपयोग करने से एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध का जोखिम बढ़ जाता है। यदि कोई व्यक्ति रोगाणुरोधी दवाओं का कोर्स पूरा नहीं करता है, तो कुछ रोगाणु जीवित रह सकते हैं और दवा के प्रति प्रतिरोध विकसित कर सकते हैं। प्रतिरोध तब भी विकसित हो सकता है जब लोग ऐसी स्थितियों के लिए दवाओं का उपयोग करते हैं जिनका वे इलाज नहीं कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, लोग कभी-कभी वायरल संक्रमण के लिए एंटीबायोटिक लेते हैं। इसके अलावा नीम हकीमों या फार्मासिस्ट द्वारा सुझाए गए एंटीबायोटिक भी इस मुद्दे को बढ़ाने में योगदान करते हैं।

खेत के जानवरों में एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग दवा प्रतिरोध को बढ़ावा दे सकता है। वैज्ञानिकों ने मांस और खाद्य फसलों में दवा प्रतिरोधी बैक्टीरिया पाए हैं जो उर्वरकों या दूषित पानी के संपर्क में आते हैं। इस तरह से, जानवरों को प्रभावित करने वाली बीमारियाँ इंसानों में फैल सकती हैं। जो लोग गंभीर रूप से बीमार होते हैं, उन्हें अक्सर रोगाणुरोधी दवाओं की उच्च खुराक दी जाती है। यह एएमआर सूक्ष्मजीवों के प्रसार को बढ़ावा देता है, विशेष रूप से ऐसे वातावरण में जहाँ विभिन्न बीमारियाँ मौजूद हैं। एंटीबायोटिक दवाओं के दुरुपयोग और अति प्रयोग के साथ-साथ संक्रमण की रोकथाम और नियंत्रण में कमी के कारण एंटीबायोटिक प्रतिरोध में तेज़ी आती है। प्रतिरोध के प्रभाव को कम करने और इसके प्रसार को सीमित करने के लिए समाज के सभी स्तरों पर कदम उठाए जा सकते हैं।

एंटीबायोटिक प्रतिरोध के प्रसार को रोकने और नियंत्रित करने के लिए, व्यक्तियों को केवल प्रमाणित स्वास्थ्य पेशेवर द्वारा निर्धारित किए जाने पर ही एंटीबायोटिक्स का उपयोग करना चाहिए। यदि आपका स्वास्थ्य कार्यकर्ता कहता है कि आपको एंटीबायोटिक्स की आवश्यकता नहीं है, तो कभी भी एंटीबायोटिक्स की मांग न करें। एंटीबायोटिक्स का उपयोग करते समय हमेशा अपने स्वास्थ्य कार्यकर्ता की सलाह का पालन करें। कभी भी बची हुई एंटीबायोटिक्स को साझा या उपयोग न करें। नियमित रूप से हाथ धोकर, स्वच्छतापूर्वक भोजन तैयार करके, बीमार लोगों के साथ निकट संपर्क से बचकर, सुरक्षित यौन संबंध बनाकर और टीकाकरण को अद्यतित रखकर संक्रमण को रोकें। सुरक्षित भोजन के लिए (डब्ल्यूएचओ) की पाँच कुंजियों (साफ़ रखें, कच्चे और पके हुए को अलग करें, अच्छी तरह से पकाएँ, भोजन को सुरक्षित तापमान पर रखें, सुरक्षित पानी और कच्चे माल का उपयोग करें) का पालन करते हुए स्वच्छतापूर्वक भोजन तैयार करें और स्वस्थ पशुओं में वृद्धि को बढ़ावा देने या बीमारी की रोकथाम के लिए एंटीबायोटिक्स के उपयोग के बिना उत्पादित खाद्य पदार्थों का चयन करें।

एंटीबायोटिक प्रतिरोध के प्रसार को रोकने और नियंत्रित करने के लिए नीति निर्माताओं को चाहिए कि वे सुनिश्चित करें कि एंटीबायोटिक प्रतिरोध से निपटने के लिए एक मजबूत राष्ट्रीय कार्य योजना लागू हो। एंटीबायोटिक-प्रतिरोधी संक्रमणों की निगरानी में सुधार करें। संक्रमण की रोकथाम और नियंत्रण उपायों की नीतियों, कार्यक्रमों और कार्यान्वयन को मजबूत करें। गुणवत्ता वाली दवाओं के उचित उपयोग और निपटान को विनियमित और बढ़ावा दें। एंटीबायोटिक प्रतिरोध के प्रभाव के बारे में जानकारी उपलब्ध कराएँ। एंटीबायोटिक प्रतिरोध के प्रसार को रोकने और नियंत्रित करने के लिए, स्वास्थ्य पेशेवरों को यह सुनिश्चित करके संक्रमण को रोकना चाहिए कि उनके हाथ, उपकरण और पर्यावरण साफ हैं। वर्तमान दिशा-निर्देशों के अनुसार, केवल तभी एंटीबायोटिक्स लिखें जब उनकी आवश्यकता हो। निगरानी टीमों को एंटीबायोटिक-प्रतिरोधी संक्रमणों की रिपोर्ट करें। अपने रोगियों से बात करें कि एंटीबायोटिक्स को सही तरीके से कैसे लिया जाए, एंटीबायोटिक प्रतिरोध और दुरुपयोग के खतरे। अपने रोगियों से संक्रमण को रोकने के बारे में बात करें (उदाहरण के लिए, टीकाकरण, हाथ धोना, सुरक्षित सेक्स और छींकते समय नाक और मुंह को ढंकना)।

एंटीबायोटिक प्रतिरोध के प्रसार को रोकने और नियंत्रित करने के लिए, स्वास्थ्य उद्योग को नए एंटीबायोटिक्स, टीके, निदान और अन्य उपकरणों के अनुसंधान और विकास में निवेश करना चाहिए। एंटीबायोटिक प्रतिरोध के प्रसार को रोकने और नियंत्रित करने के लिए, कृषि क्षेत्र को केवल पशु चिकित्सा पर्यवेक्षण के तहत पशुओं को एंटीबायोटिक्स देना चाहिए। विकास को बढ़ावा देने या स्वस्थ पशुओं में बीमारियों को रोकने के लिए एंटीबायोटिक्स का उपयोग न करें। एंटीबायोटिक्स की आवश्यकता को कम करने के लिए पशुओं का टीकाकरण करें और उपलब्ध होने पर एंटीबायोटिक्स के विकल्प का उपयोग करें। पशु और पौधों के स्रोतों से खाद्य पदार्थों के उत्पादन और प्रसंस्करण के सभी चरणों में अच्छे तरीकों को बढ़ावा दें और लागू करें। खेतों पर जैव सुरक्षा में सुधार करें और बेहतर स्वच्छता और पशु कल्याण के माध्यम से संक्रमण को रोकें।

मानव, पशु और पर्यावरण के स्वास्थ्य के नज़रिए से रोगाणुरोधी प्रतिरोध को तत्काल संबोधित करने की आवश्यकता है। सभी देशों को वैश्विक दुनिया में जहाँ हम रहते हैं, मनुष्यों, जानवरों और पर्यावरण के बीच एआरजी और एंटीबायोटिक दवाओं के प्रसार को सीमित करने के लिए मिलकर काम करने की आवश्यकता है। हालाँकि अधिकांश देशों द्वारा राष्ट्रीय कार्य योजनाएँ बनाई गई हैं, लेकिन ये योजनाएँ अभी भी कागज़ से ज़मीन पर नहीं उतर पाई हैं क्योंकि एंटीबायोटिक दवाओं का स्वतंत्र रूप से उपयोग जारी है।

केवल 9 क्यों हर दिन विशेष बनाएं

अभिव्यक्ति

अदिति सिंह भदौरिया

लेखक स्तंभकार हैं।

भारतीय परम्पराओं में धर्म का एक विशेष स्थान है। आज जिन दिनों की खूबसूरती को हम अनुभव कर रहें है, उनकी महिमा तो शब्दों के भी परे है। माता रानी के दिनों में हमें ना सिर्फ माँ का आशीष मिलता है, बल्कि उनके सहज व्यक्तित्व के पीछे एक शक्तिशाली व्यक्तित्व के भी दर्शन होते है। स्त्री की कोमलता के साथ-साथ स्त्री की ताकत का दर्शन हमें माता रानी का विशाल व्यक्तित्व दिखाता है। इन नौ दिनों में बेटियों को ख़ास स्थान दिया जाता है। माता के स्वरूप में मानते हुए हम छोटी-छोटी कन्याओं का पूजन करते है और उनसे आशीर्वाद लेते है। लेकिन यह सब बस नौ दिनों तक ही क्यों सीमित हो जाता है?

क्या इन विशेष दिनों के अतिरिक्त हमने यह कभी समझने की भी कोशिश की ही कि साल के बाकी 356 दिनों में हमारी बेटियाँ किस मानसिक तनाव या फिर किस दुविधा में अपना जीवन बीताने पर मजबूर हो रही है। आज 10 अक्टूबर को 6 विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस 8 के रूप में मनाया जाता है।

क्या हम सच में हमने कभी अपने आस-पास के लोगों के मानसिक तनाव को समझने की कोशिश भी की है? अपने आस-पास की तो बात छोड़िये कभी अपने घर की बेटी या बहुओं की तकलीफ को समझने की कोशिश की है? बात- बात पर किसी के भी सामने अपने मन की भडास को मजाक का नाम देकर अपनी पत्नी को अपमानित कर देना, उसके खाने में कमियाँ निकालते हुए कठोर शब्दों का प्रयोग करना या तुम सीखकर ही क्या आई हो, इस प्रकार के शब्दों से अपनी पत्नी या अपनी बहू का अपमान करकर हम जिस मानसिक तनाव को उपहार में उसे दे रहे है क्या कोई पूजा-पाठ उसका प्रयश्चित करवा पाएगी। अरे, मैंने तो मजाक किया था? यह शाब्दिक प्रहार भीतर तक कितनी वेदना पहुचाते है, यह शायद हमें तब पता चलता है जब हमारे अपनों में से कोई एक बेहद गम्भीर बीमारी का शिकार हो जाता है। फिर भी हम उसे ही दोष देते है 6 आखिर तुम इतना सोचती क्यों हो?8 विवाह के शुरुआती वर्षों में जब एक लडकी को प्रेम के साथ-साथ अपनेपन की भी ज़रूरत होती है तब हम उसे ताने या कठोर व्यवहार से उसके मांस- पटल पर एक प्रहार सा करते है। फिर उस मानसिक तनाव को चिडचिडाने का नाम देकर प्रताड़ना शुरू कर देते है। ऐसी कई मानसिक तनाव है जो भारतीय घरों में अपने ही परिवार द्वारा दी जाते है, जो बाद में किसी ना किसी भयानक बीमारी का रूप लेकर आपके आगामी जीवन को एक कष्टदायक मोड़ पर लाकर खड़ा कर देती है।

मैं यह नहीं कहना चाहती कि मानसिक तनाव सिर्फ महिलाओं को ही होता है। आज के दौर में पुरषों को भी तनाव के एक कठिन दौर से गुजरना पड़ता है। वैवाहिक जीवन में पत्नी के परिवार का अत्याधिक हस्तक्षेप किसी भी पुरुष के आत्मसमान पर करारी चोट है। एक बार में यदि पुरुष अपने परिवार को बचाने के लिए प्रयास करते हुए अपनी पत्नी के परिवार से ही मिलजुल कर रहता है, यह बात कब उसकी कमजोरी में तब्दील हो जाती है, यह उसे पता ही नहीं चलता। अपने भीतर के स्वाभिमान से संघर्ष करते हुए, वह कितने मानसिक तनाव का शिकार होता है। इस बात से उसके अपने ही अनजान रहते है।

कामकाजी पुरुष एवमं महिलाओं दोनों को ही अपने-अपने क्षेत्र में नियमित संघर्ष का सामना करना पड़ता है। यह बात कई बार मानसिक तनाव का कारण बनती है।

सिर्फ परिपक्व इन्सान ही मानसिक तनाव के कारण किसी गंभीर बीमारी का शिकार नहीं होते बल्कि आजकल बढ़ते कॉम्पीटीशन के दौर में बच्चे भी बहुत तनाव का सामना करते है। हम कितनी भी बात कर लें या कितना भी लिख लें, पर जब तक हम अपनों के साथ अपनापन नहीं बाटेंगे तब तक समाज से तनाव का दौर खत्म नहीं होगा। हमें अपनी तकलीफों के साथ-साथ अपनों की तकलीफों को भी समझना होगा। 6 सब ठीक है 8 इन शब्दों को बोलने वाली आवाज़ के पीछे के दर्द को भी महसूस करना होगा, तभी हम आज के इस मानसिक तनाव को एक गंभीर बीमारी का रूप में बदलने से रोक सकते है।

किन्ही विशेष दिनों में नहीं बल्कि हर दिन को अपने लिए विशेष बनाए। डब्लूएचओ के अनुसार दुनिया भर में लगभग 45 करोड़ लोग मानसिक विकारों से पीड़ित है। यानि, दुनिया में चार लोगों में से एक व्यक्ति किसी ना किसी समय मानसिक विकार या तंत्रिका संबंधी विकार से प्रभावित होता है।

मानसिक बीमारियों में सिजोफ्रेनिया, द्विध्रुवी विकार, अवसाद, पैनिक डिसऑर्डर और आब्सेसिव -कंपल्सिव डिसऑर्डर शामिल है। यह सभी मात्र एक बीमारी नहीं बल्कि हमारे भीतर से खत्म हो रही मानवता का भी एक भयानक रूप है। अब बस हमें अपने भीतर की कोमलता को एक नया रूप देने की ज़रूरत है।

किन्ही विशेष दिनों में नहीं बल्कि हर दिन को अपने लिए और अपनों के लिए विशेष बनाए। परमात्मा द्वारा दिए गए जीवन की कद्र करें और दूसरों के जीवन की तकलीफों को मिटाने की कोशिश करें।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

मनमोहन हर्ष

लेखक व्यंग्यकार हैं।

'पतली गली से 'पॉजिटिविज्म' की ठौर

'हटकरजी' की महिमा और शानो-शौकत पर 'छींटाकशी' की आदत से हम लाचार है। जब हम कई-कई दिन तक 'हटकरजी' के दर पर मत्था टेकने नहीं जाते तो हमें बुलाने के लिए वे संदेशे भेजते रहते है। मगर इस बार तो जिस अंदाज में 'हटकरजी' ने हमें दरबार में 'लाइन हाजिर' होने का फरमान भेजा उससे तो अपुन की सांसे ही ऊपर-नीचे होने लगी।

'हटकरजी' के एक खास हलकारे ने इतवार के रोज सुबह-सुबह ही बाकायदा राजा-महाराजाओं के जमाने वाले सीन की माफिक 'डंडे पर लिपटे, कपड़े में खुदे' उनके फरमान के साथ हमारे 'गरीबखाने' की 'सांकल' खटखटाई। हम उनींदे से उठे और दरवाजे पर 'हटकरजी' के उस 'दमदूत' को देखकर सकपकाते हुए कांपने के कगार पर पहुंच गए। हलकारे ने 'हटकरजी' का फरमान जो किसी 'गैरजमानती वारंट' की मानिंद था, पढ़कर सुनाया कि आज ही दोपहर को ठीक बारह बजे हम बिना किसी बहाने और 'चूं-चपड़' के उनके दरबार में हाजिर हो। 'हटकरजी' ने जिस प्रकार छुट्टी के रोज बारह बजे का टाइम सिलेक्ट किया, उससे हमे अंदेशा होने लगा कि अब तो अपुन की 'बारह बजना' तय है। हम 'नाचीज' से ऐसी क्या गुस्ताखी हो गई है कि 'इतिहास में पहली बार' ऐसे खौफनाक अंदाज में मुनादी करते हुए एक हलकारे के साथ 'हटकरजी' ने हमको 'सम्मन' भेजा है। 'हटकरजी' के हलकारे को 'बाइज्जत' विदा करने के बाद चाय की चुस्कियों से बढ़ती टेंशन को 'काफूर करने' की नाकाम कोशिशों के बीच हम गुजिस्तां दिनों के घटनाक्रम को 'रिकॉल' कर ये सोचने लगे कि आखिरकार ऐसा क्या अपराध हो गया है कि 'हटकरजी' ने ऐसा विकराल रूप अख्तियार कर लिया।

ईश कृपा से हमें याद आया कि कुछ रोज पहले एक 'सम्पादकजी' ने 'हटकरजी' पर अपुन के व्यंग्य कॉलम में सब जगह उनका नाम 'हटकरजी' की बजाय डटकरजी छापने की भारी भूल कर दी थी। अब हम तो 'हटकरजी' की रग-रग जानते है और उनको काबू में रखने के लिए विद्वान ज्योतिषियों के परामर्श से निकलने वाली रिसर्च के आधार पर कई टोने-टोटके और 'रेमेडीज' आजमाते रहते हैं। ऐसा ही एक जंतर हम जो अक्सर काम में लेते है वह यह है कि हम 'हटकरजी' का नाम सदा 'इन्वर्टेड कोमा' में ही लिखते है, जिससे वे हमारे शिकंजे में रहे। मगर अब 'सम्पादकजी' को क्या पता कि जाने-अनजाने में उन्होंने या फिर उनकी टीम ने कितनी भारी भूल और चूक कर दी है। एक तो 'हटकरजी' को डटकरजी बना दिया और तिस पर हमारा व्यंग्य छापते समय वे 'इन्वर्टेड कोमा' भी खा गए। 'हटकरजी' जैसे शहंशाह के नाम से छेड़खानी और फिर शेर को 'इन्वर्टेड कोमा' के पिंजरे से आजाद करने की कीमत तो अब चुकानी ही पड़ेगी। हमने अपनी खाल बचाने के लिए सोचा कि 'सम्पादकजी' को अपनी ढाल बनाकर साथ में ले चले और अगर बात ज्यादा बढ़ गई तो उनको 'हटकरजी' के सामने पेश करके घटनाक्रम का सिलसिलेवार खुलासा कर खुद को निर्दोष साबित कर देंगे। मगर हाय री किस्मत, 'हटकरजी' के सम्मुख पेश होने की डेडलाइन के करीब आते-आते हमने बीसियों बार 'सम्पादकजी' को कॉल किया, मगर उनका फोन कभी 'स्विच ऑफ' और कभी 'नॉट रीचेबल' निकला। 'या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता, नमस्तस्य-नमस्तस्य नमो नमः...' का पाठ मन में दोहराते हुए माता को मनाते हुए हम अकेले ही चल दिए 'हटकरजी' की अदालत में पेशी पर। हॉट सीट पर बैठे 'हटकरजी' हमेशा की तरह 'चेलेचांटियों' से घिरे प्रवचनों का मायाजाल बिखेर रहे थे।

हम मुजरिम की मानिंद दबे पांव पहुंचे और चुपके से कोने में दुबक कर बैठ गए। 'हटकरजी' ने सेकंड के सौवें हिस्से में ही हमारी आमद को नोटिस करते हुए सीधे 'रैडार' पर ले लिया। खुले दरबार में मौजूद लोगों की निगाहे हम पर और 'हटकरजी' के 'न्याय' पर जा टिकी। 'हटकरजी' सिंहासन से उठे, हौले-हौल कदम बढ़ाते हुए उस कटघरे तक पहुंचे जहां हम गर्दन झुकाए, मुंह लटकाए और हाथ आगे की ओर बांधे खड़े थे। मन ही मन 'सम्पादकजी' को कोसते हुए 'हटकरजी' के वज्र प्रहार से बचाने के लिए वाहे गुरू से अरदास कर रहे थे। 'हटकरजी' ने हमारी ठोडी को अपनी चार अंगुलियों से सहारा देते हुए लटकी हुई गर्दन को ऊपर की ओर झटके के साथ धकेला। फिर गरजते हुए कहा कि ''सुना है हमारी 'किस्सागोई' और 'बातपोशी' से खिलवाड़ करते हुए अब तुम मेरे नाम से भी 'खेला' करने लगे हो। खैर कोई हमको 'हटकरजी' कहे या 'डटकरजी' हमें क्या फर्क पड़ता है। अरे 'नाम' में क्या रखा है, सदा वास्ता 'काम' से रखो। नीली छतरी वाले के दरबार में 'कर्म' की क्वालिटी ही काऊंट होती है। हम तो सदा से ही डटकर मैदान में उतरते है और हमें दुनियां में रोजमर्रा के सफर में जो-जो नजारा और मंजर दिखाई देता है, उस पर बिना किसी लाग-लपेट के विधाता जैसी 'उखत' (समझ या बुद्धि) देता है, उसी के अनुरूप 'डटकर' और 'जमकर' टीका करते है और करते रहेंगे।'' 'हटकरजी' के उद्गारों ने हमें भाव विह्वल कर दिया। हमें लगा कि 'हटकरजी' इस मोड़ पर भी हम जैसे नुगरों को ये सिखा गए कि जब कोई पीठ पीछे किसी के नाम और काम के साथ लगातार खिलवाड़ करे तो भी पतली गली से 'पॉजिटिविज्म' की ठौर पकड़कर कैसे 'राह पकड़ तू एक चलाचल, पा जाएगा मधुशाला...' के मंत्र संग अपने सफर को निर्बाध जारी रखा जा सकता है। अब आप हमारी इन पंक्तियों में रचे 'शब्दों के भ्रमजाल' में फंसकर हमको कतई सीरियस मत मान लेना। हम तो 'हटकरजी' के नाम की खाने और कभी-कभार रंगे हाथो पकड़े जाने पर शब्दों के जाल से 'टेम्परेरीली' घड़ियाली टपकाने में माहिर है।

लेख

एकता कानूनगो बक्षी

समीक्षक

डिजिटल सम्प्रेषण को गुणवत्ता देते चिट्ठी युगीन लोग

मनुष्य के शारीरिक बदलाव की बात करें तो धरती पर अवतरित हुए हमारे शुरुआती पूर्वज शायद आज हमें अपनी संतान मानने से ही इनकार कर देंगे। बिना दुम वाले, बड़ा माथा लिए दो पैरों पर घूमते हम लोग उन्हें शायद अचंभित कर देने वाले जीव ही प्रतीत होंगे। यहां तक कि हमारी दैनिक दिनचर्या और भी अधिक उन्हें निरर्थक और विवेकहीन लग सकती है। जहां हम पड़ोस के खेत में उगाए पेड़ से आम,अमरूद तोड़कर खाने और अपनों के बीच समय गुज़ारने की जगह अधिक जटिल विकल्प चुनते हैं और दुनिया के किसी एक छोर पर अपने कुनबे से बेहद दूर छोटे से केबिन के अंदर एक स्क्रीन के सामने बैठ कर अपनी रोजी रोटी की जुगाड़ कर रहे होते हैं। वहीं कुत्ता,बिल्ली,गाय जैसे बाकी जीव जंतु उन्हें हमारी अपेक्षा अधिक सहज व प्राकृतिक लग सकते हैं। यकीनन विकास की अपनी एक कीमत होती है जिस के लाभ उठाने के लिए उसकी जटिलता को भी गले लगाना ही होता है।

यह बड़ा सुखद है कि चिट्ठी युगीन कई बुजुर्ग नई तकनीक में हम सबके के लिए मिसाल कायम करने मैदान में उतर आए हैं। वे नई तकनीक से तो जुड़े पर अपने चिट्ठी युगीन व्यवहार,आदर्श को उन्होंने ज़रा भी नही बदला। इनके द्वारा भेजे शार्ट मैसेज सर्विस पर कुछ पंक्तियों में ही सीमित संदेश भी छाप छोड़ जाते हैं। वह खास महक जब लिखने से पहले कई बार मंथन किया जाता था। यह मंथन का सॉफ्टवेयर लंबे समय तक प्राकृतिक रूप से उनके भीतर काम करता रहा इसलिये इतना फ़ास्ट/तेज़ हो गया है कि उन्हें गुणवत्तापूर्ण संदेश लिखने में ज़रा भी समय नही लगता है। इनके संदेशों में समय की बचत के लिए उपयोग होने वाली बेपरवाह स्लैंग भाषा का उपयोग भी नही होता वही आदरसूचक और विनम्रता दर्शाते शब्दों की बहुतायत होती है। इनका संदेश स्पष्ट और प्रासंगिक होता है। इनके संदेशों में यथायोग्य संबोधन भी मौजूद होता है। चिट्ठियों की तरह ही नई तकनीक के प्रयोग से लिखे इनके संदेश भी विरासत की तरह संग्रहित करने योग्य होते हैं।

किसी भी विकास के लिए सर्जनात्मक परिवर्तन की लहर हमेशा से आवश्यक रही है। बात मनुष्य की करें तो हमारा विकास भी धीमी रफ्तार से छोटे छोटे बदलाव से ही सम्भव हो पाया है। विकास की इस प्रक्रिया में प्रायः कुछ पुरानी विशेषताएं या खामियां लुप्त होती चली जाती हैं और उनकी जगह परिष्कृत स्वरूप और नए परिवर्तनों के कारण कुछ अन्य कमियों के साथ बेहतर चीजों की संभावना भी बनी रहती है। इसी तरह विकास आगे बढ़ता रहता है।

मनुष्य के शारीरिक बदलाव की बात करें तो धरती पर अवतरित हुए हमारे शुरुआती पूर्वज शायद आज हमें अपनी संतान मानने से ही इनकार कर देंगे। बिना दुम वाले, बड़ा माथा लिए दो पैरों पर घूमते हम लोग उन्हें शायद अचंभित कर देने वाले जीव ही प्रतीत होंगे। यहां तक कि हमारी दैनिक दिनचर्या और भी अधिक उन्हें निरर्थक और विवेकहीन लग सकती है। जहां हम पड़ोस के खेत में उगाए पेड़ से आम,अमरूद तोड़कर खाने और अपनों के बीच समय गुज़ारने की जगह अधिक जटिल विकल्प चुनते हैं और दुनिया के किसी एक छोर पर अपने कुनबे से बेहद दूर छोटे से केबिन के अंदर एक स्क्रीन के सामने बैठ कर अपनी रोजी रोटी की जुगाड़ कर रहे होते हैं। वहीं कुत्ता,बिल्ली,गाय जैसे बाकी जीव जंतु उन्हें हमारी अपेक्षा अधिक सहज व प्राकृतिक लग सकते हैं। यकीनन विकास की अपनी एक कीमत होती है जिस के लाभ उठाने के लिए उसकी जटिलता को भी गले लगाना ही होता है।

तकनीकी विकास से हुए परिवर्तन ने मानो मानव जीवन को पंख ही लगा दिए हैं। भविष्य की पीढ़ी पूर्णतःअलग ही संसार देखने वाली है, हमारे आज के कुछ बुजुर्गों के लिए इस तरह रफ्तार से आगे बढ़ता जीवन भी चकित कर देने जैसा हो सकता है। तकनीक से आए बदलाव और आविष्कारों का असर इतना कारगर है कि उसने ना केवल हमे शारीरिक रूप से बदला अपितु हमारी समझ और जीवन शैली में परिवर्तन के साथ हमारे व्यक्तित्व को भी बदलने की कोशिश की है।

ज्यादा गुज़रे हुए ज़माने में न जाते हुए अगर थोड़ा सा हाल ही के बीते समय पर एक नजर डालें तो हमे समाज का एक बड़ा वर्ग चिट्ठी,पत्री लिखता दिखाई देगा। संदेश और जानकारी को एक दूसरे तक पहुंचाने के लिए हस्त लिखित चिट्ठियां लंबे समय तक आमजन की लोकप्रिय,सुलभ, विश्वसनीय तकनीक बनी रही। हस्तलिखित पत्राचार समाज तकनीकी रूप से जितना आज के समय से अलग था उतना ही बौद्धिक और नैतिक रूप से भी वो आज के आम इंसान से काफी भिन्न संस्कारित था।

हर दौर की तरह मौजूदा समय में ही तीन पीढ़ी के लोग उपस्थित हैं। जिनके भीतर हुए बदलाव को हम गहराई से समझ सकते हैं। बात यदि केवल संवाद और पत्राचार की ही करें तो पहली पीढ़ी में वे लोग हैं जिनके दौर में चिट्ठियां खूब लिखी पढ़ी जाती थीं और चिट्ठियों पर निर्भरता भी काफी अधिक थी। आज की पीढ़ी में कुछ वे लोग हैं जो चिट्ठियां शौक से कभी कभार लिखते हैं किन्तु दैनिक जीवन मे उनके उपयोग की जगह नई तकनीक जैसे शार्ट मैसेज सर्विस,ईमेल आदि का अधिक उपयोग करना पसंद करते हैं। दोनों तरह के इन लोगों के बीच एक और पीढ़ी है जिसने चिट्ठियां भी खूब लिखी हैं पर अब वे नए ज़माने के साथ कदमताल करते हुए चिट्ठियों को पीछे छोड़ नई तकनीक को अपना चुके हैं और उसमे भी ऐसी महारथ हासिल कर चुके हैं कि युवा पीढ़ी भी उनकी लगन और सीखने की प्रवृत्ति से प्रेरणा लेने को विवश हो जाती है। जीवन का व्यापक अनुभव उनके पास जो होता है।

मैं खुद अपने आप को आज के ईमेल ,व्हाट्स एप्प पीढ़ी का मानती हूँ पर मेरा जीवंत संबंध इन दोनों वरिष्ठ पीढ़ी के लोगो से है। कागज़,कलम के बल पर अपनी छाप छोड़ने वाली चिट्ठी को सामाजिक,वैचारिक और व्यावहारिक बदलाव के पहलू से समझना काफी दिलचस्प है।

चलिए बीते दिनों में झांक कर देखते हैं कि चिट्ठियों ने उस समय के मनुष्य को किस तरह से गढ़ रखा था। एक आम इंसान की दिनचर्या पर गौर करें तो हम पाएंगे कि उस जीवन में हस्तलिखित चिट्ठी बड़ा महत्वपूर्ण स्थान रखती थी। कितनी ही व्यस्त दिनचर्या क्यों न हो चिट्ठी को बिना धैर्य के न तो पढ़ा जा सकता था ना ही लिखा जा सकता था। चिट्ठी लिखने-पढ़ने के लिए अलग से कुछ समय देना ज़रूरी होता था। लिखने वाले को शांत चित्त और एकाग्र होने की बेहद आवश्यकता होती थी।

प्रेषित करने के पूर्व चिट्ठियों में लिखी गयी विषयवस्तु का भी गंभीरता से अवलोकन किया जाता होगा। चिट्ठी में लिखे गए संदेश की तीन से चार दिन बाद प्रासंगिकता बनी रहेगी या नही यह भी ध्यान में रखा जाता होगा क्योंकि चिट्ठी अपने गंतव्य स्थान तक पहुचने में ही कम से कम तीन दिन तो लगा ही देती थी, तो कुछ बातें जिनसे तात्कालिक दुख, परेशानी होने की संभावना रहती थी, जिनका कोई अस्तित्व ही चिट्ठी मिलने तक नही रहता है, उसका उल्लेख पत्र से दूर रखा जाता और उसे अपने स्तर पर ही सुलझा लिया जाता। दूर बैठे व्यक्ति से वैसे भी बहुत ज्यादा अपेक्षाएं रखना किसी भी काल मे ठीक नही रहा है, यही कारण है कि उस समय पड़ोसी से रिश्ते घनिष्ठ हुआ करते थे। पड़ोसी सबसे पहले सुख दुख के सच्चे सहभागी हुआ करते थे।

चिट्ठी में लिखे अक्षरों की बनावट और शब्दों का प्रयोग ये दोनों ही बहुत सोच समझकर चुने जाते होंगे, आखिर अक्षरों की बनावट से लिखने वाले की मनस्थिति को बहुत जल्दी समझा जा सकता है, ऐसे में ज़रा सी गड़बड़ दूर बैठे व्यक्ति को चिंता में डाल सकती है। वहीं उस चिंता का समाधान करने के लिए दोबारा लिख कर पत्र का जवाब देने तक लम्बा समय लगेगा और सामे वाला व्यक्ति अनावश्यक तनाव में गुज़र सकता है। निश्चित ही उस दौर में पत्रों में भावनाओं के साथ परिपक्वता का अद्भुत संतुलन देखने को अक्सर मिल जाता था।

शब्दों और भाषा का विवेकपूर्ण इस्तेमाल इसलिये भी बहुत महत्वपूर्ण रहता है कि उनका जीवन बहुत लंबा होता है। कुछ लोग तो इन्हें जीवन भर संभाल कर रखते हैं। धनुष से निकले तीर की तरह शब्द भी अपना असर करते ही हैं, फिर वे मौखिक हों या लिखित, लंबे समय तक व्यक्ति के भीतर उनकी खट्टी मीठी छाप अंकित हो जाती है ।

आज की तकनीक पहले से अधिक उत्कृष्ट और प्रभावी है परन्तु उसके उपयोग में हमारी वैचारिक समझ में कमी और हड़बड़ी खलती है। हर छोटी से सुख, दुख की सूचना, परेशानी, प्रेम और नाराज़गी तक कुछ सेकंड में ही दूर बैठे व्यक्ति को तुरन्त उद्वेलित कर सकती है। वक्त- बेवक्त सदैव शार्ट मैसेज सर्विस,ईमेल,ऑडियो- वीडियो कॉलिंग हमारी सेवा में उपलब्ध होते हैं। यह भी दिलचस्प है कि इस फास्ट फारवर्ड तकनीक ने हमे सात समंदर पार से आए अच्छी बुरी खबरों से पल पल बदलते मूड, धड़कनों की असहजता जैसे रोगों और अधीरता जैसा दंड भी दिया है।

चिट्ठी युग की मेरी दादी से जब मैं बात करती तो वे मात्र मेरी तरफ देख और सुन ही नही रही होती थी, चिट्ठी की ही तरह वह मुझे धैर्य से पढ़ भी रही होती थीं। मेरे चेहरे के भावों को देख,आवाज़ के उतार चढ़ाव को समझ मेरे मन को पढ़ उनके भीतर मौजूद अर्थों को समझ रही होती थीं। अब यह सहज सरल संवाद और मन पढ़ने की कला दुर्लभ होती जा रही है। हमे यह विचार करना चाहिए कि तकनीक जिस तरह समय के साथ बेहतर होती चली जा रही है क्या हम भी भीतर से उतने ही उत्कृष्ट हो पा रहे हैं। कही हम से कुछ बहुत ज़रूरी पीछे छूट तो नही रहा!

सेहत

डॉ. सत्यकांत त्रिवेदी

वरिष्ठ मनोचिकित्सक एवं स्तंभकार

एग्जिट पोल का गलत होना बढ़ाता है अविश्वास, तनाव और अंतर्द्वंद

अस्पताल से लौटते समय हरियाणा चुनाव परिणाम पर कैब ड्राइवर साहब बड़े बेचैन से दिखे, बोले सोचों कुछ आता कुछ है। किसी पर विश्वास ही नहीं किया जा सकता।

लोकसभा चुनाव में एक्जिट पोल के विपरीत नतीजें देखने के बाद आज एग्जिट पोल हरियाणा में भी फेल साबित हुए। कई मित्रों के भी इस पर कमेंट्स ने मुझे लिखने के लिए प्रेरित किया।

एग्जिट पोल चुनाव परिणामों की पूर्वानुमानित तस्वीर प्रस्तुत करते हैं, जो अक्सर चुनाव के बाद की कौतूहल को शांत करने के लिए किए जाते हैं। हालांकि एग्जिट पोल सही साबित हों या गलत, उनका समाज पर मानसिक प्रभाव गहरा होता है। एग्जिट पोल के परिणाम चाहे सही निकलें या गलत, यह समाज की मानसिक स्थिति, विश्वास, और पोलराइजेशन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकते हैं।

एग्जिट पोल जब बिलकुल ही गलत साबित होते हैं, तो लोग अनिश्चितता और मानसिक तनाव का अनुभव करते हैं। एग्जिट पोल जनता को एक परिणाम विशेष की होप देते हैं और जब वास्तविक परिणाम इससे विपरीत होते हैं, तो निराशा और भ्रम उत्पन्न होता है। लोग अपनी अपेक्षाओं के साथ जुड़ जाते हैं, और जब ये अपेक्षाएं पूरी नहीं होतीं, तो मानसिक असुरक्षा का अनुभव हो सकता है। खासकर राजनीति में गहरा इंटरेस्ट रखने वाले लोग इस प्रकार के मनोवैज्ञानिक दबाव से अधिक प्रभावित होते हैं।

बार-बार गलत एग्जिट पोल आने से लोगों के बीच मीडिया और विशेषज्ञों पर ट्रस्ट इश्यूज विकसित होते हैं। जब लोग चुनाव विश्लेषकों, पत्रकारों और सर्वेक्षण करने वाली संस्थाओं की सटीकता पर संदेह करने लगते हैं, तो समाज में सूचनाओं पर अविश्वास बढ़ता है। इससे मानसिक असुरक्षा की भावना उत्पन्न हो सकती है। लोग यह मानने लगते हैं कि उन्हें सही जानकारी नहीं दी जा रही है, जिससे उनके मानसिक संतुलन पर नकारात्मक असर पड़ता है। गलत एग्जिट पोल समाज में राजनीतिक ध्रुवीकरण को बढ़ावा देते हैं। विभिन्न राजनीतिक समूहों को जब अपने पक्ष में झुकाव दिखता है और फिर परिणाम इसके विपरीत

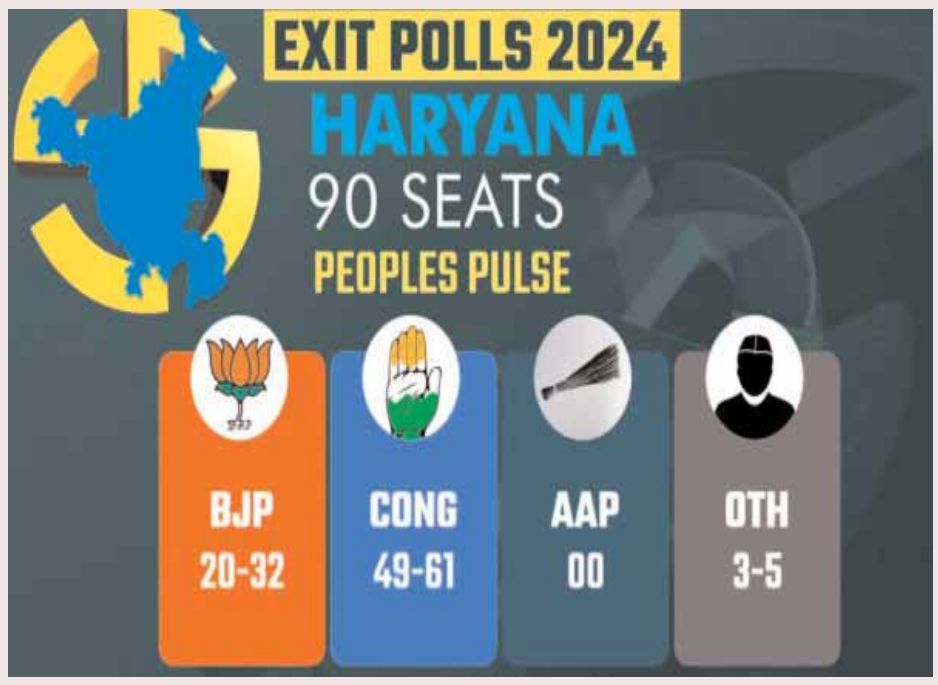

आते हैं, तो यह वैचारिक संघर्ष को बढ़ावा देता है। ऐसे ध्रुवीकरण से समाज में मानसिक तनाव और अविश्वास बढ़ सकता है। राजनीतिक धारणाओं के प्रति लोग और अधिक कट्टर हो सकते हैं, जिससे उनके मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। एग्जिट पोल गलत साबित होते हैं तो उनके समर्थकों के लिए बड़ा फ्रेसट्रेटिंग होता है । अगर किसी पार्टी या नेता की जीत की भविष्यवाणी होती है और परिणाम विपरीत आते हैं, तो उनके समर्थकों में निराशा और हताशा का भाव उत्पन्न हो सकता है। इससे मानसिक अवसाद की स्थिति पैदा हो सकती है, खासकर उन लोगों में जो राजनीति से गहराई से जुड़े होते हैं।एग्जिट पोल गलत होने पर राजनीतिक अस्थिरता का भय भी बढ़ जाता है। लोग यह सोचने लगते हैं कि चुनावी प्रक्रिया में कुछ गड़बड़ी हो सकती है, जिससे वे मानसिक रूप से असुरक्षित महसूस करते हैं। इससे समाज में चिंता और मानसिक तनाव का माहौल बन सकता है। कुल मिलाकर एग्जिट पोल के सही या गलत होने से समाज में मानसिक तनाव, ध्रुवीकरण और विश्वास में कमी जैसे प्रभाव दिखाई देते हैं।

नवरात्रि विशेष

चेतनादित्य आलोक

धार्मिक-आध्यात्मिक विषयों के लेखक एवं वास्तु ज्ञाता, रांची, झारखंड.

जड़ता को समाप्त करने मां दुर्गा ने धारण किया 'शक्ति' का 'प्रचंड' रूप

दो नवरात्रों को 'गुप्त नवरात्र' के रूप में जाना जाता है,जबकि तीसरे नवरात्र को चैत्र महीने में पड़ने के कारण 'चैत्र नवरात्र' कहा जाता है। वहीं, नवरात्र का चौथा पर्व आश्विन महीने में आता है, जिसे 'शारदीय नवरात्र' कहा जाता है। इस वर्ष शारदीय नवरात्र की शुरुआत आश्विन महीने के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि यानी गुरुवार 03 अक्तूबर से हो रही है, जिसका समापन शनिवार 12 अक्तूबर को होगा। देखा जाए तो गुप्त नवरात्रकी अपेक्षा चैत्र और शारदीय नवरात्रों का महत्व अधिक है। इसलिए देश ही नहीं, बल्कि दुनिया भर में जहां-कहीं भी सनातन धर्मावलंबी निवास करते हैं, इनका आयोजन बड़े ही धूमधाम और विधि-विधान से करते हैं।

सबसे पहले तो यह जान लेना आवश्यक है कि देवी शक्ति की साधना और आराधना के इस पर्व को 'नवरात्र'कहते हैं, न कि'नवरात्रि', क्योंकि संस्कृत व्याकरण के अनुसार 'नवरात्रि' कहना त्रुटिपूर्ण है। दरअसल, यह पर्व 09 रात्रियों का समुच्चय या समूह होता है। इसलिए इसमें द्वंद समास होने के कारण यह शब्द पुल्लिंग रूप में 'नवरात्र' ही शुद्ध माना जाएगा। वर्ष में चार बार नवरात्र का पर्व आता है। इनमें से दो नवरात्रों को 'गुप्त नवरात्र' के रूप में जाना जाता है,जबकि तीसरे नवरात्र को चैत्र महीने में पड़ने के कारण 'चैत्र नवरात्र' कहा जाता है। वहीं, नवरात्र का चौथा पर्व आश्विन महीने में आता है, जिसे 'शारदीय नवरात्र' कहा जाता है। इस वर्ष शारदीय नवरात्र की शुरुआत आश्विन महीने के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि यानी गुरुवार 03 अक्तूबर से हो रही है, जिसका समापन शनिवार 12 अक्तूबर को होगा। देखा जाए तो गुप्त नवरात्रकी अपेक्षा चैत्र और शारदीय नवरात्रों का महत्व अधिक है। इसलिए देश ही नहीं, बल्कि दुनिया भर में जहां-कहीं भी सनातन धर्मावलंबी निवास करते हैं, इनका आयोजन बड़े ही धूमधाम और विधि-विधान से करते हैं।

ये नवरात्र प्रत्येक वर्ष चार बार आने वाले संधि-कालों से जुड़े हुए है। गौरतलब है कि पृथ्वी जबअपनी धूरी पर घूमती हुई सूर्य की परिक्रमा करती है तो एक निश्चित अंतराल के बाद मौसम में बदलाव आता है। इसे 'ऋतु परिवर्तन चक्र' के रूप मेंजाना जाता है। मौसम परिवर्तन के इन कालों को संधि-काल कहते हैं। एक वर्ष में कुल चार संधि-काल होते हैं। इन संधि-कालों में प्रायः जीवाणुओं और विषाणुओं का आकमण काफी बढ़ जाता है। यही कारण है कि इस दौरान अक्सर लोग शारीरिक रूप से बीमार होते हैं। इसलिए हिंदू संस्कृति में इन संधि-कालों के दौरान स्वस्थ रहने के लिए शरीर को शुद्ध रखने के साथ-साथ मन को निर्मल रखना भी बहुत जरूरी माना गया है। इसके लिए हमारे ऋषि वैज्ञानिकों ने शक्ति की साधना-आराधना करने का निर्देश दिया है। बता दें कि देवी शक्ति की साधना-आराधना में भक्त के लिए शारीरिक और मानसिक रूप से शुद्ध रहना बहुत ही आवश्यक माना गया है। इसीलिए नवरात्र के दौरान पूरे 09 दिनों तक अल्प और शुद्ध-सात्विक आहार लेने यानी फ्लाहार करने का विधान है। माता के कई भक्त तो इस पूरी अवधि में उपवास रखकर पूर्णतः निराहार रहते हैं।

दरअसल, ऐसा करने से इन 09 दिनों में शरीर के साथ-साथ मन और मस्तिष्क को पुर्नजीवन प्राप्त होता है तथा व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक क्षमता काफी बढ़ जाती है। उसकी चेतना का विकास होता है और इस प्रकार देवी शक्ति की साधना-आराधना से व्यक्ति अगले छह महीने यानी अगले नवरात्र तक के लिए पूरी तरह से ऊर्जावान (चार्ज) हो जाता है। गौरतलब है कि नवरात्र में शक्ति स्वरूपा मांदुर्गा के 09 रूपों की पूजा-आराधना करने से भक्तों के जीवन में सुख, शांति,समृद्धि,वैभव और ऐश्वर्य का आगमन होने के साथ ही प्रतिकूलताओं का शमन होता है, जिससे उन्नति के मार्ग प्रशस्त होते हैं। हिंदू धार्मिक ग्रंथों में नवरात्र से जुड़ी मां दुर्गा और महिषासुर की कहानी का उल्लेख मिलता है। इस कहानी से हमें शक्ति और अधर्म पर धर्म की विजय का संदेश मिलता है। इस कथा के अनुसार महिषासुर नामक एक शक्तिशाली असुर ने कठोर तपस्या करके भगवान ब्रह्मा से यह वरदान प्राप्त कर लिया कि कोई भी देवता, दानव या मनुष्य उसे मार न सके। वरदान की शक्ति के नशे में चूर होकर महिषासुर स्वर्ग और पृथ्वी पर अत्याचार करने लगा। उसके अत्याचारों से त्रस्त होकर देवताओं ने भगवान ब्रह्मा, विष्णु और देवाधिदेव शिव से प्रार्थना की, जिसके बाद त्रिदेव ने अपनी-अपनी शक्ति से देवी दुर्गा को प्रकट कर उनको अपने श्रेष्ठ अस्त्र प्रदान किए।

तत्पश्चात् 09 दिनों तक भयंकर युद्ध लड़ने के बाद मां दुर्गा ने महिषासुर का वध किया। गौरतलब है कि महिषासुर का आधा शरीर मनुष्य और आधा भैंसे यानी पशु का था। तात्पर्य यह कि व्यक्ति या समाज में व्याप्तजड़ता को समाप्त करने हेतुमां दुर्गा 'शक्ति' का 'प्रचंड' रूप धारण करती हैं।दूसरे शब्दों में कहा जाए तो 'स्त्रीत्व' जब प्रचंड रूप धारण करती है तो पशुवत् प्राणी धराशायी हो जाता है। इसी प्रकार धूम्रलोचन का अर्थ होता है धुंधली दृष्टि अर्थात् माता ने धूम्रलोचन का वध कर समाज की धुंधली दृष्टिअथवा अंधविश्वास को समाप्त कर उसे दिव्य दृष्टि प्रदान की। चंड-मुंड लोगों के अनर्गल तर्क-वितर्क का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए माता ने इनकी हत्या कर समाज को बेमतलब के तर्क-वितर्क से आजाद कराया।समाज में नकारात्मक ऊर्जा के रूप में मनोग्रंथियां आ जाती हैं। रक्तबीज इन्हीं मनोग्रंथियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए जिस प्रकार माता दुर्गा ने बड़ी ही सावधानी से रक्तबीज को समाप्त किया था, उसी प्रकार नकारात्मक ऊर्जा को भी सावधानीपूर्वक समाप्त करना पड़ेगा, क्योंकि रक्तबीज की ही तरह ऊर्जा भी विखंडित होकर कई रूप धारण कर लेती है। **(इतिश्री)**

लोगों की सेहत पर पड़ रहा विपरीत प्रभाव, नगरपालिका नहीं दे रही ध्यान

सडक़ पर उड़ रहे धूल के गुबार, जनता परेशान

बैतूल। सडक़ों पर उड़ने वाली धूल-डस्ट शहर के लोगों के लिए समस्या बन गई है। यह समस्या सेहत के नजरिए से भी लोगों की मुश्किलें बढ़ा रही हैं। धूल सांसों के जरिए शरीर में जा रही है, जिससे स्वास्थ्य संबंधी मामले भी बढ़ रहे हैं। स्थानीय लोगों ने नपा के अधिकारी से शिकायत की है, लेकिन निराकरण नहीं किया जा रहा है। दरअसल शहर की कई सडक़ बारिश के बाद खराब हो गई है। सडक़ों पर गड्ढे हो गये है। वाहनों के आवागमन के दौरान गड्ढों में जमा धूल-डस्ट उडक़र लोगों की सेहत खराब कर रही है। धूल से लोगों को एलर्जी हो रही है और लोग बीमार भी पड़ रहे है। कोठी बाजार की मुख्य सड़क , गंज जेएच कॉलेज के सामने की सड़क, आबकारी के सामने की सड़क, रेलवे स्टेशन की सडक़ पर इतनी ज्यादा धूल और गड्ढे बढ़ गए हैं कि आंखों को कचरे और वाहन को गड्ढे से बचाते हुए चलाना बेहद कठिन हो गया है। अभी नवरात्रि त्योहार चल रहा है। सड़कों पर यातायात का दबाव बढ़ गया है। ऐसे में सडक़ पर उड़ती धूल-डस्ट से लोग परेशान है। लोगों का कहना है कि आगामी त्योहारों को दृष्टिगत रखते हुए सड़को का शीघ्र सुधार किया जाना चाहिए, ताकि लोगों को आवागमन के लिए अच्छी सड़क मिल सके।

कहीं गड्ढों, तो कहीं अधूरी सड़कों से परेशान लोग : बारिश से शहर की कई सडक़े गड्ढे में तब्दील हो गई है। खासकर लिंक रोड, इटारसी रोड, गुरुद्वारा रोड पर गड्ढे काफी बढ़ गए हैं। इन पर वाहन चलाते समय चालकों को परेशान तो होना ही पड़ता है, साथ ही वाहनों को नुकसान भी हो रहा है। इधर भगवान परशुराम चौक से गंज तक की सडक़ और कोठी बाजार में मुल्ला पेट्रोल पंप से कोतवाली तक की सडक़ का निर्माण अधूरा है। इन सडक़ों पर के गुबार हवा में उडऩे के कारण वहां पर काम करने वाले व्यापारी भी परेशान हैं। उनका कहना है कि धूल की वजह से सबसे ज्यादा परेशानी व्यापारी वर्ग को हो रही है। वे अपनी दुकान पर कोई भी सामान नहीं रख पा रहे हैं। क्योंकि वाहनों के निकलने पर सडक से उडने वाली दुकानों में समा जाती है। इससे सामान खराब हो रहा है। धूल से सनी हुई सामग्री को लेने में ग्राहक भी ऐतराज दिखाते हैं।

लोगों की सेहत पर पड़ रहा असर : धूल-डस्ट और सडक़ पर गड्ढों से लोगों की सेहत पर असर पड़ रहा है। लोगों को धूल से खांसी, दमा, एलर्जी, खुजली की समस्या होती है। मुंह पर कपड़ा बांधकर चलने के बाद भी धूल के बारीक कण नाक और आंखों में घुस जाते हैं। जिससे आंखों में जलन होती है। स्वास्थ्य चिकित्सकों ने बताया कि धूल की एलर्जी से अस्थमा के मरीजों को ज्यादा परेशानी है। नागरिकों का कहना है कि जिन सडक़ों को निर्माण अधूरा है और ज्यादा धूल-डस्ट उड़ रही है, उन सडक़ों पर सुबह-शाम पानी का छिडक़ाव किया जाना चाहिए, जिससे कि लोगों को धूल-डस्ट से कुछ राहत मिल सके। लेकिन विभाग इस ओर भी ध्यान नहीं दे रहा है। जिससे लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

इनका कहना है

दशहरे के बाद सडक़ का काम शुरू हो जायेगा। जहां तक सडक़ो पर पानी के छिड़क़ाव की बात है तो इससे सड़कों में नमी आ जायेगी, जिसके बाद डामरीकरण करना कठिन हो जाता है। इसलिए पानी का छिड़क़ाव नहीं कर पा रहे है। जहां गड्ढे हो गये है, वहां सरफेस को भरकर बराबर किया जायेगा। धूल-डस्ट ज्यादा न उड़े, इसकी व्यवस्था की जायेगी।

- नीरज धुर्वे,
एई, नगरपालिका, बैतूल

ट्रक के चुराते थे सामान, फरार आरोपियों की पुलिस कर रही तलाश

ट्रक कटिंग मामले में दो आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। ट्रक कटिंग (चलते ट्रक से सामान चोरी) के मामले में पुलिस ने दो आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। इसमें एक महिला भी शामिल है। पुलिस अन्य फरार आरोपियों की तलाश कर रही है। आरोपियों के खिलाफ पुलिस ने विभिन्न धारा के तहत मामला दर्ज कर विवेचना में लिया। विवेचना के दौरान आरोपी छोटेलाल पिता मन्नू परते (35 वर्ष) निवासी भक्तनढाना से पूछताछ की गई। उसने बताया कि कुछ दिन पहले राजकुमार, राकेश, हेमू, और टिल्ला के साथ मिलकर बरेठा घाट में ट्रक से दो बोरे लहसुन, दो बोरे आलू, तीन बोरे चावल और साइकिल के टायर का बड़ा बंडल चोरी किया था। चोरी का सामान राजकुमार ने पिकअप में ले जाकर अपनी मां अन्नू बाई के साथ मिलकर घर में रखा और उसे बेचने की योजना बनाई। चोरी से मिले पैसों को आधा खुद रखकर घर के खर्चे में उपयोग किया और बाकी पैसे साथियों में बांट दिए। पुलिस ने छोटेलाल के घर से चोरी का लहसुन जब्त किया और उसे तथा अन्नू बाई को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया। उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी शाहपुर निरीक्षक जयपाल इनवाती, उपनिरीक्षक सोनम साहू, सहायक उपनिरीक्षक सुनील कैथवास, प्रधान आरक्षक मुकेश सिंह साध, प्रधान आरक्षक सेवलाल कलमे, आरक्षक नीरज पांडे, आरक्षक विनय प्रताप, आरक्षक शुभम, महिला आरक्षक संध्या ने सराहनीय भूमिका निभाई।

यह है मामला ...

पुलिस ने बताया कि पिछले 23 सितंबर को अंकुश पिता श्रीरामदुलारे राठौर (33 वर्ष) निवासी आजाद वार्ड भौंरा ने शिकायत दर्ज करवाई कि ड्राइवर कमलेश सिहोर से दोपहर 2 बजे आयशर गाड़ी में लहसुन के कट्टे भरकर बैतूल के लिए रवाना हुआ था। रात करीब 11.30 बजे वह बरेठा घाट पहुंचा, जहां बरेठा घाट में मंदिर के सामने चढ़ाई पर कमलेश को साइड मिरर में दिखा कि कोई अज्ञात व्यक्ति ट्रक पर चढ़ रहा है। कमलेश ने गाड़ी रोकी और ऊपर चढ़क़र देखा तो एक व्यक्ति ट्रक पर चढ़ा हुआ था। कमलेश ने पूछा कि गाड़ी पर क्यों चढ़ा है, उसी समय चार अन्य लोग पास आ गए। इनमें से एक व्यक्ति सांवले रंग का था, सामान्य कद-काठी का, जिसकी ऊंचाई लगभग 5.5 फीट थी और उसके बाल खड़े थे। ट्रक पर चढ़े व्यक्ति ने चाकू दिखाया और उसके चार साथी गाड़ी के सामने आकर खड़े हो गए। उनमें से एक व्यक्ति के हाथ में भी चाकू था और वह कमलेश को धमकाते हुए जान से मारकर खाई में फेंकने की धमकी देने लगा। ट्रक पर चढ़ा व्यक्ति लहसुन के कट्टे नीचे गिराने लगा। डर के कारण कमलेश तुरंत गाड़ी लेकर वहां से भाग गया। घाट चढऩे के बाद उसने 100 नंबर पर पुलिस को सूचना दी और घटना की जानकारी अपने जीजा मुकेश राठौर को दी। बैतूल में गाड़ी खाली करने पर उसमें से 3 कट्टे लहसुन कम निकले, जिनका वजन कुल 135 किलो था। लहसुन की अनुमानित कीमत लगभग 37,800 थी।

कृषि विस्तार अधिकारी संघ ने सौंपा ज्ञापन

मांगों का निराकरण नहीं होने पर धरना प्रदर्शन की दी चेतावनी

बैतूल। कृषि विस्तार अधिकारियों का स्थाई यात्रा भत्ता 300 से बढ़ाकर 3 हजार रूपए प्रति माह करने सहित अन्य लंबित मांगों का निराकरण किए जाने की मांग को लेकर मप्र कृषि विस्तार अधिकारी संघ ने मंगलवार को मुख्यमंत्री एवं कृषि मंत्री के नाम जिला प्रशासन को ज्ञापन सौंपा है। ज्ञापन के माध्यम से संघ के जिलाध्यक्ष गिरीश गौरसे ने बताया कि कृषि विभाग की अंतिम कड़ी एवं हरित क्रांति के अग्रदूत कृषि विस्तार अधिकारी अपनी लंबित मांगों के लिए विगत 10 वर्षों से संघर्षरत है, लेकिन आज दिनांक तक संघ की मांगों को पूर्ण नहीं किया गया है। उन्होंने कहा कि यदि संघ की मांगों को पूर्ण नहीं किया गया तो आगामी 17 अक्टूबर को जिला मुख्यालय पर एक दिवसीय धरना देकर प्रदर्शन किया जाएगा। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष गिरीश गौरसे, जिला सचिव सुनील सलाम, राहुल यादव, सूरज जाट परसराम धुर्वे, वेदराम यादव, अनिल डाबर, सुरेश इरपचे, सोनाली धाकड़, किरण कनोजे एवं जिले के सभी विकासखंड के ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी उपस्थित रहे। ज्ञापन में मांग की है कि कृषि विस्तार अधिकारी जिस पद पर भर्ती होता है उसी पद पर सेवानिवृत हो जाता है, जबकि सभी विभागों में उच्च प्रभार के माध्यम से पदोन्नति की जा रही है। कृषि विभाग में भी उच्च प्रभार की प्रक्रिया प्रारंभ की जाए। नवनियुक्ति कृषि अधिकारियों को प्रथम वर्ष 70 प्रतिशत, द्वितीय वर्ष 80 प्रतिशत, तृतीय वर्ष 90 प्रतिशत एवं चतुर्थ वर्ष 100 प्रतिशत वेतन के स्थान पर 100 प्रतिशत वेतन एवं दो वर्षों की परीक्षा अवधि के आदेश जारी किए जाए। सेवा में आने के पश्चात विभागीय अनुमति प्राप्त स्नातक कृषि विस्तार अधिकारियों को नियुक्ति दिनांक से समयमान वेतनमान का लाभ दिया जाए।

वित्त विभाग के आदेश की अवहेलना

म.प्र. शासन वित्त विभाग के आदेश अनुसार सभी कर्मचारियों को जिनकी सेवाएं 01 जुलाई 2023 को 35 वर्ष की हो चुकी है, उन्हें नियुक्ति दिनांक से 35 वर्ष की सेवा पूर्ण होने पर चतुर्थ समयमान वेतनमान का लाभ नियुक्ति दिनांक से ही देने का स्पष्ट उल्लेख है, किन्तु विभाग द्वारा वित्त विभाग के आदेश की अवहेलना की जा रही है। इसी तरह राजस्व विभाग के मंत्रालय भोपाल के आदेश अनुसार कृषि विस्तार अधिकारी को पटवारी के समान अतिरिक्त भत्ता 500 के स्थान पर 1 हजार रुपए प्रतिमाह एवं एग्रीस्टेक भत्ता 4000 रूपये प्रतिमाह दिया जाए।

एडीएम ने अधिकारियों को नशा मुक्ति संबंधी शपथ दिलाई

बैतूल। नशा मुक्त अभियान के अंतर्गत मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में एडीएम राजीव नंदन श्रीवास्तव ने अधिकारी, कर्मचारियों को मद्यपान निषेध व नशा मुक्ति संबंधी शपथ दिलाई। इस दौरान एडीएम राजीव नंदन श्रीवास्तव ने कहा कि सभी विभाग जन जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करें। उल्लेखनीय है कि सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण संचालनालय म.प्र.भोपाल के निर्देशानुसार कलेक्टर श्री नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी के मार्गदर्शन में महात्मा गांधी जयंती 2 अक्टूबर से 8 अक्टूबर तक मद्य निषेध सप्ताह मनाया जा रहा है। इसके तहत मद्य निषेध के लिए जागरूकता कार्यक्रम जन अभियान परिषद, ग्रामीण आजीविका मिशन, शिक्षा, उच्च शिक्षा, महिला एवं बाल विकास, स्वास्थ्य, पुलिस सहित अन्य विभागों के सहयोग के साथ-साथ अशासकीय संस्थाओं, गायत्री परिवार ग्रामीण स्वावलंबी समितियों के समन्वय से नशा मुक्ति संबंधी गतिविधियां जिले में आयोजित की जा रही हैं।

निर्माण कार्यों में लापरवाही बर्दाश्त नहीं : हेमंत खण्डेलवाल

बैतूल विधायक ने राजस्व,नपा अधिकारियों के साथ ठेकेदारों को दिए निर्देश

•अतिक्रमण हटाने के बाद ही सड़क-नाली का करें निर्माण

बैतूल। जिला मुख्यालय बैतूल को सुंदर , स्वच्छ और सुविधा सम्पन्न बनानें के लिए सतत प्रयासरत बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल ने मंगलवार को बाल मंदिर सभाकक्ष में राजस्व नपा के अधिकारियों, इंजीनियरों,पटवारियों,सहित ठेकेदारों की अलग-अलग बैठकें लेकर साफ तौर पर कहा कि निर्माण कार्यो में न तो क्वालिटी से समझौता होगा और न ही लापरवाही बर्दाश्त की जाएगी। इसलिए सभी समन्वय स्थापित कर समय सीमा में गुणवत्तापूर्ण कार्य करें। राजस्व - नपा अधिकारियों और बैतूल नगर के पटवारियों की बैठक में बैतूल विधायक नें निर्देश दिए कि बैतूल नगर में स्वीकृत सड़क ,नाली निर्माण के कार्य शुरू करनें के पहले निर्माण स्थल का सर्वे कर अतिक्रमण अनिवार्य रूप् से हटाए। अतिक्रमण हटाए बिना एवं बगैर नाली निर्माण के सड़को का निर्माण न करें। सड़क-नाली निर्माण में बाधा उत्पन्न करनें वालों के खिलाफ नियमानुसार वैधानिक कार्यवाही करें। उन्होनें कहा कि सड़क के दोनों ओर की शेष भूमि को अतिक्रमण से बचाने के लिए रोड लेबिल के नीचे पेवर ब्लाक लगवाकर उस स्थान का उपयोग पार्किंग के लिए करवाएं। उन्होंने कहा की निर्माण कार्य शुरू होने से पहले निर्माण स्थल पर निर्माण कार्य से संबंधित जानकारी का साइन बोर्ड जरूर लगाएं।बैतूल विधायक नें ठेकेदारों की बैठक लेकर निर्माण कार्यो की प्रगति की समीक्षा की। उन्होनें ठेकेदारों से साफ तौर पर कहा कि निर्माण कार्य समय सीमा में और गुणवत्तापूर्ण करे। निर्माण कार्यो में लापरवाही बर्दाश्त नहीं करेगें,गड़बडी करनें वालों के खिलाफ कार्यवाही होगी। बैठक में नपा अध्यक्ष श्रीमति पार्वती बाई बारस्कर ,उपाध्यक्ष महेश राठौर सहित एसडीएम, तहसीलदार, सीएमओं, नपा के इंजीनियर ,पटवारी,ठेकेदार सहित अन्य कर्मचारी मौजूद रहे।

चौक-चौराहों का होगा चौड़ीकरण-सौन्दर्यीकरण: बैठक में बैतूल विधायक नें कहा कि बैतूल शहर के लगभग दर्जन भर बड़े चौक-चौराहों का सौंदर्यकरण - चौडीकरण किया जाना है। यह कार्य शुरू करनें के पूर्व नपा एवं राजस्व अधिकारियों की संयुक्त टीम चौक-चौराहों का सर्वे कर अतिक्रमण मुक्त करें। अतिक्रमण हटानें के बाद ही सौन्दर्यीकरण - चौडीकरण कार्य करनें की कार्यवाही की जाए। उन्होनें कहा कि चौराहों को सुविधासम्पन्न बनानें के लिए आसपास ''शॉप आन व्हील'' बनानें की प्लानिंग कर उसका क्रियान्वयन करें।

एक परिवार-एक दुकान पर सख्ती से करें अमल: बैतूल विधायक श्री खण्डेलवाल नें अधिकारियों से कहा कि बैतूल शहर को व्यवस्थित करनें के लिए अतिक्रमण मुक्त करना आवश्यक है। साथ ही अतिक्रामकों की रोजी रोटी की चिंता कर उनका व्यपस्थापना करना भी जरूरी है। इसलिए अतिक्रमण हटानें के दौरान ''एक परिवार एक दुकान'' की अवधारणा पर सख्ती से त्वरित अमल करें। उन्होनें कहा कि बैतूल जिले में कम से कम पांच वर्ष से निवास कर रहे तीन वर्ष पुराने अतिक्रामकों को अतिक्रमण हटानें के लिए चिन्हित करें तथा प्रत्येक अतिक्रमित परिवार के एक सदस्य के व्यवस्थापन की व्यवस्था करें। इसमें बैतूल शहर में पक्की दुकान नहीं होनें की अनिवार्यता भी रहे। उन्होनें कहा कि जिले के बाहर के अतिक्रामकों के अतिक्रमण सख्ती से हटाए।

बैतूल विधायक नें अधिकारियों को निर्देश दिए कि बैतूल शहर में जगह - जगह लग रही सब्जी-फलों की दुकानों से हो रही अव्यवस्था के मददेनजर शहर में फल मार्केट एवं प्रतिदिन सब्जी गूजरी के लिए स्थल चयन कर जल्द से जल्द फल मार्केट सब्जी गूजरी लगानें की व्यवस्था बनाएं।

स्किल एग्जीबिशन-2024 अंतर्गत छात्राओं ने दी प्रस्तुति

बैतूल। स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा जिले के विभिन्न विद्यालयों में संचालित व्यावसायिक ट्रेड के छात्र-छात्राओं द्वारा स्किल एग्जीबिशन 2024 अंतर्गत मंगलवार को जेएच कॉलेज के ऑडिटोरियम में मॉडल, चार्ट, पोस्टर के साथ सहभागिता की गई। उल्लेखनीय है कि जिले के विभिन्न विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न 14 व्यावसायिक ट्रेड संचालित हैं, जिसके अंतर्गत व्यावसायिक प्रशिक्षकों के माध्यम से छात्र-छात्राओं को तकनीकी ट्रेड से संबंधित अध्यापन, स्कूली शिक्षा के साथ कराया जाता है।

एग्जीबिशन में 102 छात्र-छात्राओं ने अपने ट्रेड से संबंधित मॉडल, पोस्टर एवं चार्ट का प्रदर्शन किया गया। इस कार्यक्रम में 07 विद्यालयों से ट्रेड आधारित लघु नाटिकाएं भी प्रस्तुत की गईं। लघु नाटिका अंतर्गत शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चिल्कापुर के छात्र-छात्राओं द्वारा साइबर क्राइम एवं ठगी के खतरों से अवगत कराते हुए जागरूक किए जाने संबंधी नाटिका प्रस्तुत की गई, जिसे उपस्थित समुदाय की सराहना प्राप्त हुई।

जिला शिक्षा अधिकारी डॉ.अनिल कुशवाहा, सहायक संचालक भूपेंद्र वरकड़े, एडीपीसी संजीव श्रीवास्तव, एपीसी सुबोध शर्मा, प्राचार्यगण एवं विभिन्न विद्यालयों के शिक्षक शिक्षिकाओं द्वारा प्रदर्शनी का अवलोकन कर छात्र-छात्राओं का उत्साहवर्धन एवं मार्गदर्शन प्रदान किया गया। जिला व्यावसायिक समन्वयक विनोद पड़लक एवं आरएमएसए के प्रोग्रामर विनोद लिखितकर द्वारा विस्तार से व्यावसायिक ट्रेड में चलने वाली ट्रेड रोल, जॉब रोल इत्यादि की जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम का संचालन संदीप ठाकरे द्वारा किया गया।

रामलीला मंचन के दौरान बड़ी संख्या में पहुंच रहे श्रद्धालु

लक्ष्मण ने काटी शूर्पनखा की नाक, रावण ने किया सीता हरण

बैतूल/ भौरा। रामलीला मंडल भौरा द्वारा रात्रि में रामलीला मंच पर रामलीला का मंचन रात 9 बजे से किया जा रहा है। सोमवार रात्रि में शूर्पणखा और लक्ष्मण में संवाद हुआ। शूर्पणखा ने लक्ष्मण के सामने प्रेम प्रस्ताव रखा और उससे शादी की बात रखी, लेकिन लक्ष्मण द्वारा उसके कान, नाक काट दिए गए। जिससे वे गुस्से से रोती हुई अपने भाई खर-दूषण के पास गई। जब उन्होंने अपनी बहन की यह हालत देखी तो पूरी सेना सहित राम से युद्ध करने पहुंचे, लेकिन राम ने सबको मार दिया। शूर्पणखा ने सारी बात अपने बड़े भाई रावण को बताई और रावण ने अपनी बहन से हुए दर्व्यवहार का बदला सीता का हरण करके लिया। रामलीला के मंचन को देखने के लिए सैकड़ों की संख्या में दर्शक रामलीला चौक पहुंचे थे। दर्शकों ने शूर्पणखा के किरदार पर बार-बार जोरदार तालियां बजाई। सुंदरी का किरदार अशोक राठौर, भरत शिवा राठौर, शूर्पणखा अमित तिवारी, खर का किरदार जीडी तिवारी, दूषण भुरू राठौर, तीसरा अर्पित तिवारी, रावण रूबल सलूजा, मामा मारीच चेतन विश्वकर्मा, बाबा जी मोनू झा, हिरण राहुल राठौर ने निभाया। मंडल के खरागराम नामदेव ने दर्शकों से अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होने की अपील की है।

वन्यजीव सप्ताह के तहत जागरूकता रैलियां और प्रतियोगिताएं आयोजित

650 से अधिक प्रतिभागियों ने लिया हिस्सा

बैतूल। वन एवं वन्यजीव संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से दक्षिण बैतूल (सा.) वनमंडल द्वारा 1 अक्टूबर से 7 अक्टूबर 2024 तक वन्यजीव सप्ताह का आयोजन किया गया। डीएफओ विजयानन्तम टी.आर. के नेतृत्व में आयोजित इस कार्यक्रम में वन्यजीव संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए विद्यार्थियों, संयुक्त वन प्रबंधन समितियों और आम जनता को शामिल किया गया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का संदेश, जिसमें उन्होंने प्रकृति के साथ सामंजस्य और जैवविविधता के संरक्षण की महत्ता पर जोर दिया, पढक़र सुनाया गया। वन्यजीव सप्ताह के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं से विद्यार्थियों में खासा उत्साह दिखा। इन प्रतियोगिताओं में चित्रकला, निबंध, प्रश्नोत्तरी, गीत, कविता और रंगोली जैसी गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिसमें 650 से अधिक छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से वन्यजीव संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने का प्रयास किया गया, ताकि समाज के हर वर्ग में इसके प्रति संवेदनशीलता विकसित हो।

सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागियों को मिला पुरस्कार ...

कार्यक्रम के समापन पर प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को वन विभाग द्वारा पुरस्कृत किया गया। डीएफओ विजयानन्तम टी.आर. ने विजेताओं को सम्मानित करते हुए कहा कि वन्यजीव संरक्षण हम सभी की जिम्मेदारी है और हमें इसके लिए सामूहिक प्रयास करने होंगे। कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को भी वन्यजीव संरक्षण के प्रति उनके योगदान के लिए सराहा गया।

निशांत को मिला राज्यस्तरीय वन्य जीव संरक्षण पुरस्कार

बैतूल। सतपुड़ा टाइगर रिजर्व फॉरेस्ट के निशांत डोसी वन परिक्षत्र अधिकारी, तवा बफर को राज्य स्तरीय वन्यजीव संरक्षण पुरस्कार से नवाजा गया है। निशांत ने अपनी कर्तव्यनिष्ठा से सभी का नाम रोशन किया है। उल्लेखनीय है कि निशांत ने जवाहर नवोदय विद्यालय से 12वीं तक शिक्षा प्राप्त की है। निशांत ने भोपाल से बीई और उज्जैन से एमई की उपाधि प्राप्त की है तथा मप्र राज्य सिविल सेवा में उत्तीर्ण होकर वर्तमान में रेंजर के पद पर कार्यरत है। निशांत के पिता महेशचंद्र डोसी शासकीय बालक माध्यमिक शाला सनावद में प्रधान पाठक हैं। निशांत डोसी वन परिक्षेत्र अधिकारी, तवा बफर सतपुड़ा टाइगर रिजर्व फॉरेस्ट में वन्य जीवों के संरक्षण, ग्रामो के विस्थापन के सफल संचालन और वन्यजीवों के आवास की सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान के लिए राज्य स्तरीय वन्यजीव संरक्षण पुरस्कार दिया गया। पिछले दिनों राज्य सरकार द्वारा भोपाल में आयोजित समारोह में निशांत को राज्यपाल द्वारा प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर निशांत ने कहा कि यह सम्मान उन्हें और अधिक दृढ़ता से वन्यजीव संरक्षण के कार्य में जुटे रहने की प्रेरणा देगा। उनकी उपलब्धियों पर सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के समस्त कर्मचारियों ने हर्ष व्यक्त किया है।

विश्व डाक दिवस

वैदेही कोठारी

स्वतंत्र पत्रकार

वो महकते-चहकते खत

आलमारी साफ करते-करते कुछ पुरानी चिट्ठियां हाथ में आई, उनको पढ़ते ही पुरानी यादें ताजा हो गई है। कुछ पिताजी के हिदायती अल्फाजों के पत्र मिले तो कुछ प्रेम भरी बातों की चिट्ठियां छोटी बहन की थी। जिसे आज पढ़ कर बचपन की यादें ताजा हो गई। बहन के एक पत्र ने तो मेरी जिंदगी के मायने ही बदल दिये। आज भी वह पत्र पढ़ कर वैसा ही महसूस हुआ, जैसे बीस साल पहले हुआ था। यह पत्र तब आया था जब मेरा आत्मविश्वास पूरी तरह टूट चुका था। उस समय यह पत्र पढ़ कर, मुझे जिंदगी जीने का मानो मकसद मिल गया हो। आज से लगभग तीस वर्ष पहले हस्त लेखन पत्र संचार का ऐसा माध्यम था, जो शहर से लेकर गांव तक में अपनी पेठ जमाए हुए था। उस समय ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्री शिक्षा का आभाव हुआ करता था। शहर में रहने वाले अपने अजीज को चिट्ठियां अधिकतर स्त्रियां डाकिया बाबू से ही लिखवा कर भिजवा देती थी। शहर से आने वाली चिट्ठियां भी डाकिया बाबू ही पढ़ कर सुनाते थे।

आया डाकिया डाक लाया खुशी का पैयाम लाया। यह गाना शायद ही आज की पीढ़ी ने सुना होगा,उस समय डाकिया (पोस्टमेन) के आते ही मन में उत्साह आ जाता था। किन्तु कई बार दुःखद चिट्ठी से मन उदास भी होता था। जब भी किसी की चिट्ठियां आती थी,सुनने के लिए सभी एकत्रित हो जाते थे, चिट्ठी खोलते समय सभी का ध्यान मेरे हाँथो पर होता था, क्या-क्या लिखा? सभी सुनने के लिए बेकरार रहते थे। मां-पिताजी के आशिष भरे पत्र, भाई-बहन के प्रेम, दोस्तों की दोस्ती भरा पत्र साथ ही पारिवारिक चिट्ठियां हुआ करती थी।

पत्र जितनी बार भी पढ़ो नया सा ही लगता है। बहन, मां, भाई, पिताजी,या अन्य रिश्तेदारो को पत्र लिखना बड़े आनंद की बात हुआ करती थी।

जब भावनाओं को कलम के माध्यम से कागज़ पर बिखेरा जाता है, तब वह कागज़ चिठ्ठी का रूप धारण कर लेता है।

कभी ह्रदय का दुःख कागज़ पर बिखरता है,
तो कभी धड़कते ह्रदय का प्रेम,
तो कभी ह्रदय का गुबार, सभी भावनाओं
को कलम बखूबी कागज़ पर हूबहू उतार देती है।

जब भी चिट्ठी पढ़ी जाती तो ऐसा महसूस होता जैसे चिट्ठी बोल रही हो। हर दुःख और सुःख को पढ़ने वाला महसूस करने लगता है। हर चिट्ठी का अपना अलग महत्व हुआ करता था। पत्र लिखने के सम्बोधन भी अत्यंत प्रिय लगते थे। जेसे-बड़ो को सम्बोधन में लिखा जाता परम पूजीय-पूज्य, आदरणीय,श्रद्धेय। अपने बराबर वालो को प्रिय-मित्र, प्रिय-सखी,मित्रवर,बंधुवर। इसी तरह अपरिचित लोगों को भी अत्यधिक सम्मानपूर्वक मान्यवर,माननीय, श्रीमान, श्रीमती,महोदय लिखा जाता था।

प्रेम भरी चिट्ठियां आज भी दिल को गुदगुदाती है। प्रेमी-प्रेमिका को लिखा गया प्रेम पत्र वह तो सबसे आनंदायक एवं प्रिय होता था। अगर प्रेम पत्र दोस्त का हो तो छीन कर पत्र पढने में मजा ही कुछ अलग आता था। आशिकों की इश्क वाली चिट्ठी भी बड़ी रंगीन हुआ करती थी। मुहब्बतनामा को इत्र और फूल रखकर भेजना। अगर खुद को अच्छी शायरी वाला ख़त लिखना नही आता तो दोस्त से लिखवाना। फिर किस तरह प्रेमिका के पास भेजना? यह सबसे बड़ी चुनौती हुआ करती थी। फिर कैसे भी डरते-डरते प्रेमिका के पास भेज तो दिया। किंतु भेजने के बाद बेचैन होना, मिला के नही। मिल गया तो जवाब अभी तक क्यों नही आया? फिर उसके जवाब का इंतजार करना। प्रेम पत्र लिखना एक अद्भुत कला होती थी, जिसमें प्रेमी का प्रेम,भावनाएं,दिल के जज़्बात, कुछ अनकही,अनछुई बातें जिसे पढ़ते ही पूरे शरीर में सिरहन महसुस होती थी। दिल से लिखें अल्फाज जिसे प्रेमिका बार-बार पढ़कर भी नही थकती थी।

सत्तर अस्सी के दशक में प्रेम पत्र पर कई चर्चित गीत भी

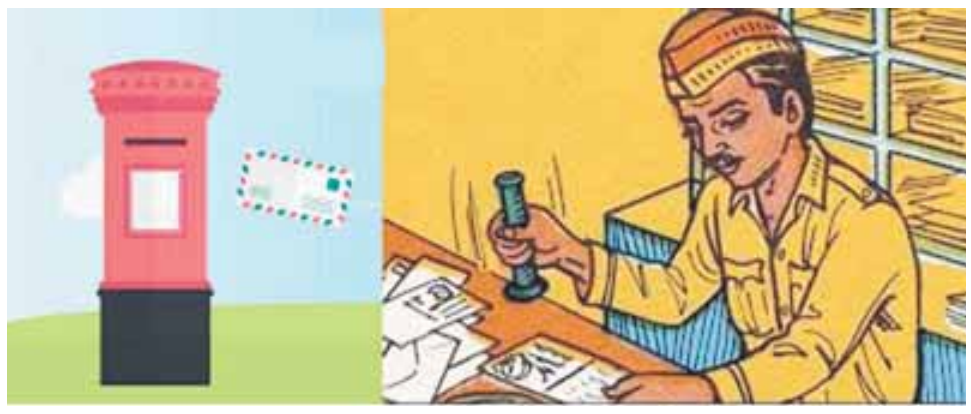

बने, आज भी हम गुनगुनाने से स्वंय को रोक नही पाते है। जैसे- 'मेरा पत्र पढ़कर तुम नाराज मत होना...।' 'फूल तुम्हें भेजा है खत में, फूल नही मेरा दिल है...! पल-पल दिल के पास तुम रहती हो...! नब्बे के दशक में भी फिल्मों में प्रेम पत्रों पर खूब गीत ग़ज़ल बनाए गये थे। सबसे चर्चित ग़ज़ल 'चिट्ठी आई है,...आई है...! चिट्ठी न कोई सन्देश...!' 'प्यार का पहला खत लिखा है दिल की कलम से...।' सबसे प्रसिद्ध गीत कबूतर जा...जा जा...।' इसी तरह कई गीत बनाएं गए थे।

हम इतिहास पर नज़र डालें तो पत्र लेखन विद्या अत्यंत प्राचीन कला है। पहले राजा-महाराजा अपने दूतो के द्वारा संदेशों को राजशाही पत्रों के द्वारा आदान-प्रदान करते थे। जिन्हे राजदूत कहते थे। मुगलों व राजाओं के शासन काल में कहीं-कहीं संदेशवाहक (पोस्टमेन) के रूप में कबूतरों ने भी कार्य किये थे। इन कबूतरो को विशेष प्रशिक्षण दिया जाता था। ताकी वह संदेश पत्र को सही जगह पहुंचा सके। उस काल में संचार का माध्यम एक मात्र यही हुआ करता था। सामान्य जनता अपने संदेशो को दूसरी जगह भेजने के लिए अपने ही गांव का कोई एक व्यक्ति होता था जो दूसरे गांव जा कर संदेश देकर व लेकर आता था।

संचार व्यवस्था को सरल बनाने के लिए भारत में पहली बार पोस्ट आफिस 1 अक्टूबर 1854 में राष्ट्रीय रुप से डायरेक्टर जनरल के संयुक्त नियंत्रण के अंर्तगत मान्यता मिली थी। इसके पश्चात 1863 में रेल डाक आरंभ हुआ। भारत में 1876 पार्सल पोस्टल युनियन में शामिल हुआ। 1877 में वी.वी.पी.पार्सल सेवा शुरू की गई। 1879 में पोस्टकार्ड आरंभ किया गया। फिर मनीऑर्डर सेवा,पिन कोड नम्बर,डाक जीवन बीमा, स्पीड पोस्ट डाक,इस तरह डाक का दौर तेजी से चलने लगा।

संचार को और अधिक सुगम एवं बढ़ाने हेतु हमारे देश में इंटरनेट का आगमन हुआ। आज इंटरनेट को आए हुए लगभग छब्बीस वर्ष हो चुके है। शुरूआत समय में तो फिर भी पत्र लेखन जारी था, जब से हमारे जीवन में इंटरनेट जी (जनरेशन) आया तब से संचार की वृद्धि में क्रांति आ गई। वन जी से फाइव जी के सफर ने तो मानो पूरे देश में संचार की गति को पलक झपकना बना दिया है। अर्थात् पलक झपकते ही संदेश किसी भी जगह पहुंच जाता है। लगभग बीस सालों से पत्र लेखन पूर्णतः समाप्ति की कगार पर आ चुका है।

आज फेसबुक वाट्सएप इंस्टाग्राम टेलीग्राम जैसे कई प्लेटफार्म आ चुके है। विडियों कॉलिग या विडियो कॉन्फ्रेंस करके देश विदेश में भी बात हो जाती है। समय एवं खर्चा बचाने के लिए कई बार शादी व शोक पत्रिकाएं भी मेसेंजर व्हाट्सप्प पर भेज दी जाती है। आज के समय में तो ऐसा लगता है चिट्ठियां मानों अंतिम सांसे गिन रही हो। आधुनिकता और भागदोड़ की दुनियां में हमारे हाथों से डायरी-पेन पीछे छूट गई है। इस सुंदर कला से हमारी आने वाली पीढ़ी वंचित होती जा रही है। हाल ही में कुछ स्कूलो में जाकर सर्वे किया गया तो देखा 80 प्रतिशत बच्चों ने तो पोस्टकार्ड व अंतरदेशी पत्र देखे भी नही है। उन्हें इनकी कोई जानकारी नही है। आज की स्थति देखते हुए ऐसा लगता है, आने वाले दस पंद्रह सालो में पोस्ट कार्ड, अंतरदेशी पत्र और डाक की कई सामग्रीयों को म्यूजियम में रखी जाएगी, क्यूंकि आने वाली पीढ़ी को इसकी कोई जानकारी नहीं रहेगी। यह उनके लिए आश्चर्य की बात होंगी। पत्र लेखन एक खूबसूरत कला है जिसे लुप्त होने से बचाना चाहिए।

डायमंड परिवार ने किया सेवानिवृत्त सैनिकों का सम्मान

देवास। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी शारदीय नवरात्रि पर्व पर डायमंड चौराहा जनता बैंक स्थित माताजी की महाआरती सेवानिवृत्त सैनिकों कैप्टन रामभाऊ पटेल, कैप्टन वी एस रावत, हवलदार राजेंद्रसिंह पवार, रविन्द्र सिंह पवार, दिनेश सिंह,एलकारसिंह देवड़ा, राजबहादुर राठौड़ आदि द्वारा की गई। महाआरती के पश्चात डायमंड परिवार द्वारा समस्त सैनिकों का आत्मीय अभिनन्दन, मेघराज पंजाबी, विजयसिंह ठाकुर, जीतेन्द्र सिंह मोंटू, दीपसिंह पवार, जनक बहादुरसिंह भदौरिया,दीपक धर्माधिकारी,मयंक पवार,अंकित जोशी, आनंदसिंह ठाकुर,प्रकाश सेठिया,सरदारसिंह ठाकुर, अजयसिंह पवार, शिवसिंह ठाकुर ने किया। उक्त जानकारी हेमेन्द्र निगम काकू ने दी।

महाष्टमी के साथ महानवमी का संयोग, अष्टमी पूजन 10 - 11 दोनों दिन कर सकते हैं : डॉ. अशोक शास्त्री

धार। शारदीय नवरात्रि में अष्टमी पूजन के साथ नवमी पूजन का भी विशेष महत्व होता हैं । इसमें भी भ्रम की स्थिति निर्मित हो रही हैं । इस संदर्भ में ज्योतिष गुरु डॉ. अशोक शास्त्री ने बताया की इस वर्ष दुर्गा अष्टमी और नवमी दोनों 11 अक्टूबर को मनाई जाएगी । इस बार शारदीय नवरात्रि में अष्टमी तिथि 10 अक्टूबर को दोपहर 12:31 बजे से लग रही हैं । जो अगले दिन 11 अक्टूबर की दोपहर 12:06 बजे तक रहेगी । उदया तिथि के अनुसार अष्टमी व्रत का पूजन 11 अक्टूबर को करना शुभ रहेगा । 11 अक्टूबर को पूजा का मुहूर्त प्रातः 06:20 से 10:41 बजे तक पूजन कर सकते हैं । साथ ही जो अष्टमी को रात्रि में पूजन करते हैं वे 10 अक्टूबर की रात्रि में करना चाहिए । डॉ. अशोक शास्त्री के मुताबिक़ इस बार शारदीय नवरात्रि की नवमी तिथि 11 अक्टूबर की दोपहर 12:06 बजे से आरंभ होकर अगले दिन 12 अक्टूबर को सुबह 10:57 बजे तक रहेगी । ऐसे में उदया तिथि के आधार पर नवमी तिथि का व्रत भी 11 अक्टूबर को अष्टमी तिथि के दिन रखा जाएगा ।

बेअरलॉकर उद्योग की सहायता से लगेगा दृष्टिहीन कन्या शाला की छत पर सोलर सिस्टम

देवास/मोहन वर्मा। जिलाधीश ऋषव गुप्ता के दिशानिर्देश पर शहर के उद्योग अपने सीएसआर मद से जिले के विकास कार्यों मे निरंतर अपनी भागीदारी कर रहे है। इसी कडी में आज शहर के एक उद्योग बेअरलॉकर एडिटिव्स इंडिया द्वारा दृष्टिहीन कन्या शाला की छत पर लगाये जा रहे सोलर सिस्टम का भूमिपूजन जिलाधीश ऋषव गुप्ता ने किया। कंपनी प्रबंधक प्रवीण शर्मा और सीएसआर सहयोगी एक्ट ईव फाउंडेशन के अध्यक्ष मोहन वर्मा ने बताया कि बेअरलॉकर उद्योग इसके पूर्व माता टेकरी पर सोलर सिस्टम लगा चूकी है तथा जिला अस्पताल में काम प्रगति पर है। दृष्टिहीन कन्या शाला की जरुरतों को देखते हुए जिलाधीश श्री गुप्ता के आदेशानुसार यहाँ छह किलोवॉट के सोलर सिस्टम का भूमिपूजन आज किया गया। कार्यक्रम में दृष्टिहीन कन्या शाला के संरक्षक बलजीतसिंह सलूजा, अध्यक्ष राजेन्द्र मूँदडा,राधेश्याम सोनी,दिलीप चौधरी,गंगासिंह सोलंकी, प्राचार्या सीमा सोनी, बेअरलॉकर उद्योग के एचआर हेड अभिनव जाधव,हीरेश ओझा,प्रदीप सिंह,तथा सीएसआर टीम के किशन सिंह कुशवाह, तथाशीराम जाट उपस्थित थे।

न्याय की आस में फिर गुहार लगाई ब्राह्मणों ने, इंदौर रेंज आईजी से मिला प्रतिनिधि मंडल

मेहगाँव प्रकरण में दोषियों को बख्शा ना जाए, जाँच में तेजी लाई जाए

धार। धार जिले के मेहगाँव प्रकरण में दोषियों को बख्शा ना जाए और जाँच में तेजी लाई जाए, न्याय की आस में गुहार लगाते हुए ब्राह्मणों का प्रतिनिधि मंडल इंदौर रेंज आईजी से मिला। बावीसा ब्राह्मण समाज धार के अध्यक्ष पंडित गोटू शुक्ला के नेतृत्व में करुण जोशी, रोहन व्यास, निखिल उपाध्याय (रायपुर) एवं प्रतिनिधिय मंडल, इंदौर अध्यक्ष प्रकाश(कपूर) पुराणिक एवम नरेन्द्रकांत जोशी, प्रवीन जोशी, अभिषेक जोशी, एडवोकेट मनोज व्यास, केंद्रीय उपाध्यक्ष मान्वेंद्र त्रिवेदी, सर्व ब्राह्मण समाज प्रतिनिधि अनूप शुक्लाजी, एडवोकेट प्रदीप, एवं मृतक अजय दुबे के पुत्र वैभव दुबे तथा भाई ललित दुबे मेहगांव द्वारा पुलिस महानिरीक्षक इंदौर (ग्रामीण) से मेहगाँव प्रकरण मे मुलाकात की । शीघ्र से शीघ्र कार्यवाही करते हुए पुरे

प्रकरण को संज्ञान में लेते हुए पारदर्शिता के साथ कार्यवाही की मांग की।

समाज के प्रतिनिधि माण्डल ने 2 प्रमुख माँगो को पुलिस महानिरीक्षक के समक्ष रखा-

1- सभी फ़रार आरोपीयो, प्रज्ञा पाटीदार, नरेंद्र पाटीदार एवं गजेंद्र पाटीदार को अतिशीघ्र गिरफ़्तार किया जाये

2- उप निरीक्षक नरपत सिंह ठाकुर का नाम एफआईआर में जोड़ा जाये।

8 दिवस के अंदर उपरोक्त बिंदुओं पर कोई कार्यवाही नहीं होने पर धामनोद बंद एवं प्रभारी मंत्री का बंगला/कार्यालय घेरने की चेतावनी दी गई।

ब्राह्मण समाज इस बात से नाराज है कि दोषियों को बचाया क्यों जा रहा है? अगर शीघ्र कार्रवाई नहीं हुई तो ब्राह्मण समाज सड़कों पर उतरकर उग्र आंदोलन करेगा।

संभाग स्तरीय प्रतियोगिता में भी खानापूर्ति..

नर्मदापुरम। पूर्व निर्धारित संभाग स्तरीय प्रतियोगिता मुख्यालय पर आज दिनांक 08/10/2024 होनी थी। इसमें सबसे गंभीर बात यह देखने में आई कि संभाग स्तरीय होने वाली प्रतियोगिता सम्पन्न कराने वाले अधिकारीयों की सूची जिला क्रीड़ा अधिकारी ने अधिकृत रूप से आफीशियल्स सूची दिन को ग्यारह बजे ग्रुप में डाली। जबकि प्रतियोगिता शुरू होने का समय साढ़े दस बजे तय था इसे देखकर समझा जा सकता है कि विभाग और क्रीड़ा अधिकारी मुख्यालय हेडक्वार्टर पर खेल और होने वाली प्रतियोगिता को लेकर कितने गंभीर है। आज मुख्यालय पर संभाग स्तरीय कबड्डी, योग, फुटबॉल एवं हॉकी की प्रतियोगिताएं होनी थी फिर ये सभी प्रतियोगिता अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग आयोजित थी। प्रतियोगिता सम्पन्न कराने वाले अधिकारीयों की आफीसियल्स सूची आज सुबह विकास खण्ड खेल ग्रुप में डी.एस.ओ द्वारा क्या खानापूर्ति के लिए डाली गई..? जबकि खेल शिक्षक जिनकी ड्यूटी लगी है उनको पूर्व में सूचना दी जाना जरूरी थी। प्रतियोगिता शा.कन्या उ.मा.वि नर्मदापुरम में कबड्डी 17 वर्ष बालक बालिका का आयोजन किया जा रहा है और उसकी संयोजक प्राचार्य शा.सी. एम.राइज को बनाया गया है ..? फिर कबड्डी प्रतियोगिता शासकीय नर्मदा महाविद्यालय में प्रस्तावित था वहां से हटाकर गर्ल्स स्कूल में यह प्रतियोगिता कराई गई उसमें भी सबसे बड़ा मजाक कब्बड्डी प्रतियोगिता की चयनकर्ता वॉलीबॉल कोच ने किया ऐसा ही वालीबाल आफिशियल में बच्चे साइड लाइन एम्पायर की भूमिका में चार्ट लेकर खड़े मिले।

रेल्वे स्टेशन की समस्याओं को लेकर क्षेत्रीय सांसद को ज्ञापन सौंपा

सोहागपुर। क्षेत्रीय सांसद दर्शनसिंह के सोमवार नगरागमन के अवसर पर नागरिक संघर्ष समिति के वकील शिवकुमार पटैल ने सोहागपुर रेल्वे स्टेशन की समस्याओं एवं रेल स्टापेज को लेकर ज्ञापन सौंपा। उल्लेखनीय है कि श्री पटैल लगातार ओवरब्रिज निर्माण आदि समस्याओं को लेकर लम्बे समय से ज्ञापनों के माध्यम से जाग्रति जगाते रहते हैं।

हरियाणा में लगातार तीसरी बार भाजपा को बहुमत मिलने पर भाजपा ने जीत का जश्न मनाया

धार। भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज सोमानी के नेतृत्व में मंगलवार वार को भाजपा जिला कार्यालय पर हरियाणा में लगातार तीसरी बार भाजपा को बहुमत मिलने पर जश्न मनाया और भाजपा के नारे लगाए। इस दौरान जिला कार्यालय मंत्री जगदीश जाट भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा भाजपा नगर मंडल विपिन राठौर और नितेश अग्रवाल दीपक शर्मा शिव पटेल नगर महामंत्री सन्नी होड़ा कैलाश पिपलोदिया अनिल यादव गौरव जाट विकास शर्मा खरसोडा,देवेंद्र रावल दीपक बौरासी, गौरव जाट, जतिन मौर्य, नवीन भंवर, मनीष पांडे, मनोज प्रजापत, श्रवण गोयल राजेश सिसोदिया, अभय वसुनिया,

शांतिलाल शर्मा सहित अनेक भाजपा नगर पदाधिकारी मौजूद रहें। भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष विपिन राठौर और नितेश अग्रवाल ने संयुक्त रूप से बताया कि भारतीय जनता पार्टी के लिए आज फिर ऐतिहासिक दिन है। हरियाणा में लगातार तीसरी बार भाजपा की सरकार बनने जा रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व को हरियाणा की जनता ने आशीर्वाद दिया है।हरियाणा की जनता ने विपक्षी दलों को अहसास करा दिया है कि हरियाणा के दिल में सिर्फ भाजपा बसती है।

शारदीय नवरात्रि में टेकरी पर स्काउट गाइड व स्काउटर गाइड दे रहे हैं सेवाएं

देवास। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी मां चामुंडा व मां तुलजा भवानी के मंदिर में भारत स्काउट एवं गाइड मध्य प्रदेश जिला संघ देवास के स्काउट गाइड व स्काउटर गाइडर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। हेमेंद्र निगम काकू ने बताया कि जिला शिक्षा अधिकारी एवं जिला कमिश्नर स्काउट हरिसिंह भारतीय के निर्देशानुसार एवं जिला कलेक्टर ऋषव गुप्ता के मार्गदर्शन में 3 अक्टूबर गुरुवार से प्रतिदिन प्रातः 6 बजे से रात्रि 8 बजे तक 4 शिफ्ट में विभिन्न संस्थाओं के स्काउट गाइड व स्काउटर गाइडर अपनी सेवाएं माता जी की टेकरी पर भक्त जनों को पंक्ति बध दर्शन करवाने, यातायात व्यवस्था, व दिव्यांग लोगों को माताजी जी के दर्शन करवाने में सहयोग कर रहे हैं । जिला प्रशासन व पुलिस प्रशासन देवास के साथ कंधे से कंधा मिलाकर मनोज पटेल जिला संगठन आयुक्त स्काउट, जितेंद्र मंडलोई जिला सचिव, देवकरण सोलंकी, शिवचरण अंगोरिया, भूपेंद्र शर्मा ट्रेनिंग काउंसलर, कोमल चौधरी डी ओ सी गाइड,रिंकू कुशवाह, उर्मिला गुनाया के साथ-साथ अन्य ब्लॉक जैसे बागली ब्लॉक से मनोज जोशी जिला अध्यक्ष, अश्विन घोरपडे जिला सह सचिव, अमिता घोरपडे, भारती जोशी, ब्लॉक अध्यक्ष बागली, चेतन शर्मा, मुकेश गोस्वामी,कमल सिंह राजपूत,अनिल चौहान, प्रेमसिंह राजपूत,खातेगांव ब्लाक से मनोज उपाध्याय, गजानंद यादव, शिव पवार, दिनेश जाट, सोनकच्छ ब्लाक से नंदलाल राठौर, बुद्धविलास यादव, हेमलता सौलंकी आदि अपनी सेवाएं निरंतर दे रहे हैं। सेवा शिविर का औचक निरीक्षण हरीसिंह भारतीय जिला कमिश्नर स्काउट, विष्णु वर्मा जिला मुख्य आयुक्त,शिवनंदन प्रजापति व सावन पाटीदार सहा संचालक एवं अजय सोलंकी विकास खण्ड कमिश्नर स्काउट ने किया ।

तोड़ी गई बजरिया स्कूल के स्थान पर बनने जा रहे ऑडिटोरियम कार्य का विधायक ने मौका मुआयना किया

नर्मदापुरम- संजीव डे राय

होशंगाबाद के विधायक आखिर पार्टी को ठग रहे हैं या जनता को यह सवाल तोड़ी गई बजरिया स्कूल का मुआयना करने से सामने आई। नगरपालिका ने यहां ऑडिटोरियम निर्माण के लिए काम प्रारंभ कर दिया जिसका मुआयना बकायदा विधायक जी ने किया। इसे लेकर फल बाजार वाले फिर सड़क पर आ गए जिन्हें नगरपालिका ने बजरिया स्कूल के सामने बसाया था। सोशल मीडिया पर आई यह जानकारी वाकई हदप्रद करने वाली है। इससे समझ आता है विधायक जी पार्टी के दिए गए पावर का उपयोग तो कर लेते लेकिन और जनता के मुद्दों की अनदेखी कर रहे। अब सवाल उठता है जब सतरास्ते पर दो टप को मिलकर एक किया गया तब विधायक जी ने यहां टेप लेकर नाप-जोख किया था। गवर्नमेंट स्कूल के पीछे नर्मदा

तट के 100 मीटर दायरे में बन रहे छात्रावास के मामले में बाकायदा टेप लगाकर नाप-जोख कर निर्माण कार्य बंद करवा दिया। खुद के द्वारा किए गए भूमि पूजन के बाद डे केयर सेंटर का काम भी रुकवा दिया बढ़िया है..? लेकिन जिस ऑडिटोरियम निर्माण कार्य के लिए उन्होंने तोड़ी गई बजरिया का अवलोकन किया लेकिन उससे लगकर शासकीय एस एन जी स्कूल का निरीक्षण तो उन्होंने आज तक नहीं किया..! 1949 में इस ऐतिहासिक स्कूल को अंग्रेजों के जाने के बाद नर्मदा शिक्षा समिति को शिक्षा चलाने, उसके व्यापक इंतजाम के लिए सरकार ने सौंपा था लेकिन शर्तों का उलंघन करने पर 1972 में सरकार ने दिया स्कूल वापस ले लिया, विधायक जी ने इस शासकीय संपत्ति का रिकॉर्ड दुरुस्त कराने में तो रुचि नहीं दिखाई ..? ना उसके रखरखाव को लेकर कोई चिंता जाहिर की ऐसा क्यों.? क्या सरकारी संपत्ति की सुरक्षा का दायित्व विधायक का नहीं..? इटारसी में उन्होंने जरुर अतिक्रमण हटवाने प्रशासन के विरुद्ध सड़क पर उतरे प्रशासन को लेकर कई अतिक्रमण हटवाकर बेहतर काम किया फिर मुख्यालय पर नगरपालिका की 59400 वर्ग फुट जमीन पर अतिक्रमण कर बनी 56 दुकानों को हटावाने का दायित्व तो नहीं निभाया ..? ना विधानसभा में कोई प्रश्न उठाया। नगरपालिका के नाम दर्ज जो जमीन आज तक किसी दूसरे के नाम पर नहीं चढ़ी उसकी जाली खरीद फरोख्त की रजिस्ट्री लगाकर जमीन नामांतरित करवाने के मामले में भी उन्होंने ऐसी ही शांति बरकरार रखी आखिर ऐसा दोहरा चेहरा क्यों..?

राइट क्लिक

भाजपा का नया गढ़ हरियाणा और कश्मीर में लोकतंत्र की सुखद वापसी

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के वरिष्ठ संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

लोकसभा चुनाव के ठीक चार महीने बाद हुए हरियाणा और जम्मू कश्मीर विधानसभा चुनाव के नतीजों से कुछ संकेत साफ हैं। पहला तो यह देश में गुजरात और मध्यप्रदेश के बाद हरियाणा ऐसा राज्य बन गया है, जहां भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) लगातार तीसरी बार सत्ता में लौटी है। यानी उत्तर भारत में हरियाणा भाजपा का नया मजबूत किला बन गया है। नतीजों ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की उस भविष्यवाणी को भी हकीकत में बदल दिया कि हरियाणा में कांग्रेस का हश्र मध्यप्रदेश जैसा ही होगा। वैसा ही हुआ भी। दूसरे, लोस चुनाव के नतीजों से सबक लेकर भाजपा ने अपनी रणनीति में कई बदलाव किए, जिसमें टिकटों के बंटवारे से लेकर बाहरी नेताओं का समावेश और वोटों का प्रति जाट ध्रुवीकरण शामिल है। नतीजों ने यह भी साबित किया कि कांग्रेस और विपक्षी पार्टियों ने किसान, जवान और पहलवान का जो नरेटिव सेट किया था, वह सतही था। राज्य में ओबीसी जातियों का यह डर भाजपा के पक्ष में काम कर गया कि यदि कांग्रेस सत्ता में लौटी तो जाटों की दबंगई फिर शुरू हो जाएगी। इसी तरह जो दलित लोस चुनाव में कांग्रेस की तरफ बड़े पैमाने पर चले गए थे, वो इस बार बंट गए और फायदा भाजपा को मिला। यही स्थिति जाट वोटों की भी रही। इसके विपरीत कांग्रेस की कोई सुस्पष्ट रणनीति नहीं दिखी, सिवाय इस भरोसे के कि जनता इस बार उसे जिताने के लिए तैयार बैठी है। दूसरे राज्य के प्रभावशाली और मुखर जाट समुदाय की नाराजी को जनता की नाराजी मान लेना भी गलती थी। कांग्रेस की दृष्टि से देखें तो लोकसभा चुनाव में संविधान और आरक्षण बचाने तथा जाति जनगणना का जो नरेटिव कुछ राज्यों में जबर्दस्त ढंग से काम कर गया था, वो इन विधानसभा चुनाव में फेल रहा। इन नतीजों का कांग्रेस के लिए सबक यह है कि अगर राज्यों में किसी एक नेता पर आंख मूंद कर भरोसा कर कमान उसके हाथ में देने और बाकी की उपेक्षा की जाए तो खेल बिगड़ जाता है। यह हम इसके पहले मध्यप्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनावों में देख चुके हैं, जहां पार्टी ने क्रमशः कमलनाथ, अशोक गहलोत और भूपेश बघेल पर असंदिग्ध भरोसा किया और हाथ आती सत्ता फिसल गई। इन परिणामों का कांग्रेस और खासकर राहुल गांधी के लिए बड़ा सबक यह है कि जब तक वो संगठन को ऊपर से नीचे तक नहीं कसेंगे, उसमें लड़ाकू तेवर पैदा नहीं करेंगे, तब तक छुटपुट सफलताओं से ज्यादा हासिल कुछ नहीं होगा। मोदी और भाजपा को हिलाना इतना आसान नहीं है। लोस में भाजपा द्वारा संविधान बदलने और आरक्षण खत्म करने वाला दांव विधानसभा चुनावों में इस बार नहीं चल पाया, क्योंकि वो नरेटिव एक आशंका पर ज्यादा आधारित था। हकीकत में वैसा कुछ हुआ नहीं और शायद होगा भी नहीं।

हरियाणा विस चुनाव के नतीजे काफी कुछ 2023 में हुए मप्र विस चुनाव से मिलते हैं। मप्र में भी कांग्रेस मान बैठी थी कि जनता उसे ही जिताने वाली है। यहां तक कि जीतने के बाद कौन क्या बनेगा, यह भी एडवांस में तय हो गया था। पोस्टल बैलेट की गिनती में कांग्रेस की बढ़त को पार्टी ने कुछ देर के लिए पूरा सच मान लिया। जबकि भाजपा ने बूथ मैनेजमेंट, लाड़ली बहना योजना और अपनी सफल चुनावी रणनीति से कांग्रेस के अरमानों पर पानी फेर दिया। कुछ ऐसा ही हरियाणा में होता दिख रहा है। भाजपा सरकार के प्रति 10 साल की एंटी इनकम्बेंसी के बावजूद लोस चुनाव से पहले ओबीसी नायब सिंह सैनी को सीएम बनाकर पार्टी ने जहां लोस चुनाव में हुए राजनीतिक नुकसान को कम किया, वहीं विधानसभा चुनाव के लिए जमीन तैयार कर दी। खास बात यह है कि हरियाणा में विस चुनाव के पहले भाजपा ने ऐसी कोई बड़ी रेवड़ी भी नहीं बांटी, जैसे कि मप्र में बांटी थी। भाजपा की रणनीति साफ थी कि प्रभावशाली जाट वोटों का बंटवारा करो और एंटी जाट वोटों को भाजपा के पक्ष में गोलबंद करो। वही होता दिख भी रहा है। पार्टी ने न केवल अपना वोट बैंक बचाया बल्कि उस जाट लैंड में भी सेंध लगा दी, जहां से कांग्रेस बंपर समर्थन की उम्मीद लगाए हुए थी। हरियाणा के यादव बहुल अहीरवाल अंचल में भाजपा की भारी जीत के पीछे भाजपा द्वारा मप्र में एक यादव डॉ. मोहन यादव को मुख्यमंत्री बनाना भी बड़ा कारण हो सकता है। दूसरी तरफ कांग्रेस ने बेरोजगारी, किसान आंदोलन, अग्निवीर जैसे मुद्दे जोर-शोर से उठाए, लेकिन मतदाताओं ने उन्हें खास तवज्जो नहीं दी। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि वोटर इन मुद्दों पर अपनी राय लोस चुनाव में पहले ही व्यक्त कर चुका था। अति आत्मविश्वास भी कांग्रेस को ले डूबा। हालांकि यह कहना कठिन है कि अगर वो दूसरी जाट पार्टियों और आप के साथ गठबंधन करती तो नतीजे बदल सकते थे। लेकिन चुनाव के दौरान दलित नेता कुमारी सैलजा की नाराजगी कांग्रेस को डुबो गई। हालांकि बाद में राहुल गांधी ने सैलजा को मनाया, लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। सत्ता पाने से ही सीएम पद की लड़ाई का जनता में गलत संदेश गया। वैसे यह लड़ाई भाजपा में भी दिखी। वहां अनिल विज ने सीएम पद की दावेदारी ठोक दी थी, लेकिन उसे किसी ने गंभीरता से नहीं लिया। यह तय है कि सीएम का ताज नायब सिंह सैनी को मिलेगा। यानी मप्र की तर्ज पर भाजपा हरियाणा में फिर ओबीसी कार्ड ही खेलेगी।

उधर जम्मू-कश्मीर में भाजपा का सरकार बनाने का सपना दूर की कौड़ी ही था। वहां चुनाव जीतते ही सत्ता में आ रहे नेशनल कांफ्रेंस कांग्रेस गठबंधन के नेता फारूख अब्दुल्ला ने कहा कि यह जनादेश राज्य से धारा 370 व 35 ए हटाने और भाजपा के खिलाफ है। इससे स्पष्ट हो गया कि जम्मू कश्मीर में आगे भी टकराव की राजनीति होने वाली है। इस मामले में कांग्रेस दुविधा में रहेगी, क्योंकि वह जम्मू कश्मीर से धारा 370 हटाने के मुद्दे पर चुप है, लेकिन प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा दिए जाने की हामी है। दरअसल बीजेपी प्रदेश में शांति, अमन, पर्यटन को बढ़ावा जैसे मुद्दों पर घाटी में भी समर्थन की उम्मीद कर रही थी, लेकिन वैसा नहीं हुआ। मुसलमानों में भाजपा के प्रति जो नाराजी है, वह खत्म नहीं हुई है। अलबत्ता 2014 के विधानसभा चुनाव की तुलना में राज्य में बीजेपी की सीटें और वोट दोनों बढ़े हैं। लेकिन बीजेपी के साथ कभी सरकार बनाने वाली महबूबा मुफ्ती की पार्टी पीडीपी का सफाया और भाजपा ने घाटी में निर्दलियों के समर्थन से सरकार बना सकने की संभावना पर नतीजों ने पानी फेर दिया है। अच्छी बात यह है कि जम्मू-कश्मीर के मतदाताओं ने अलगाववादी निर्दलियों और अन्य पार्टियों को चुनने की जगह नेकां-कांग्रेस गठबंधन को समर्थन दिया। जिससे सरकार पांच साल तक चलने की उम्मीद ज्यादा है। धारा 370 हटाने की मांग नेकां के घोषणा पत्र में जरूर है, लेकिन उसे भी पता है कि यह अब व्यावहारिक नहीं है। लिहाजा उसका जोर पूर्ण राज्य के दर्जे पर ही ज्यादा रहेगा। वैसे भी केन्द्र की मदद के बगैर जम्मू-कश्मीर में सरकार चलाना नामुमकिन है। हालांकि वहां भाजपा के सरकार न बना पाने से यह संदेश दुनिया में जरूर गया है कि राज्य के लोग अभी भी धारा 370 हटाने से खुश नहीं हैं और इसके अलग-अलग कारण हैं। अलबत्ता सकारात्मक संदेश यह है कि आंतकवाद से प्रभावित इस राज्य में चुनाव निष्पक्ष तरीके से हुए हैं और लोकतंत्र मजबूत हुआ है। अहम बात यह है कि जो तत्व कभी भारतीय संविधान और चुनावों को ही नकारते थे, वो मजबूरी में ही सही पर लोकतांत्रिक प्रक्रिया में लौट रहे हैं। एक बात साफ है कि राज्य में जो संवैधानिक बदलाव किए गए हैं, उसका राजनीतिक और सामाजिक असर भी हमें जल्द दिखाई देगा। इस बात की संभावना कम है कि जम्मू कश्मीर की अवाम आए दिन आंतकी हमलों, पत्थरबाजी और बंद के दौर में लौटना चाहेगी।

इन चुनाव परिणामों के बाद इंडिया गठबंधन में कांग्रेस की सौदेबाजी की ताकत घटेगी। सहयोगी दलों ने उस पर अभी से निशाना साधना शुरू कर दिया है। इसका असर आगामी महाराष्ट्र और झारखंड के विस चुनाव पर भी पड़ेगा। कांग्रेस सहयोगी दलों के दबाव में रहेगी। लोस चुनाव में राहुल गांधी का कद जिस तरह बढ़ा था, उस पर भी मानो ब्रेक लग गया है।

इन नतीजों ने एग्जिट पोल की विश्वसनीयता पर फिर प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। जम्मू कश्मीर में तो नतीजों सर्वे के हिसाब से आए हैं, लेकिन हरियाणा में तमाम सर्वे फेल हुए हैं। राजनेताओं को भी समझ आ गया है कि सर्वे के आधार पर मन में लड्डू भले फूट रहे हों, लेकिन हकीकत में पूरे नतीजे आने के बाद ही लड्डू खाना और बांटना चाहिए।

भोपाल में एमडी ड्रग बनाने का रा मटेरियल जब्त

30 लाख के माल से तैयार होती 300 करोड़ की ड्रग, एनसीबी दिल्ली ने की थी कार्रवाई

भोपाल (नप्र) भोपाल में 5 अक्टूबर को पकड़ी गई सिंथेटिक ड्रग फैक्ट्री से जुड़ी एक दुकान का मंगलवार को ताला तोड़ा गया। एसीपी मिसरोद के नेतृत्व में हुई कार्रवाई में दुकान में केमिकल के भरे हुए ड्रम में कई संदिग्ध वस्तुएं पाई गई।

दुकान में केमिकल स्टोर कर रखा था। इस केमिकल का ही उपयोग एमडी ड्रग बनाने में किया जाता है। बाजार में इस रा मटेरियल की कीमत अधिकतम 30 लाख रुपए है। माल तैयार होने पर उसकी कीमत 200 से 300 करोड़ होती है।

एनसीबी की रेड के दौरान गिरफ्तार आरोपी अमित चतुर्वेदी ने यह दुकान रापड़िया निवासी विष्णु पाटीदार से किराए पर ली थी। जो शुभम वेयर हाउस के सामने गणेश मार्केट रापड़िया चौराहे पर स्थित है। यहां अमित देर रात कुछ सामान गाड़ी से बगरोदा फैक्ट्री में ले जाया करता था। इधर, एनसीबी की टीम गिरफ्तार दोनों आरोपियों को बागरोदा स्थित फैक्ट्री में लेकर पहुंची।

थाने में शिकायत करने पर बदमाशों ने चाकू मारा

घर के सामने तलवारें लहराईं; धमकाया- जब-जब रिपोर्ट करेगा, हमला करेंगे

जबलपुर (नप्र) । जबलपुर में थाने में शिकायत करने से नाराज बदमाशों ने पीड़ित को दोबारा चाकू मारकर घायल कर दिया। घर के सामने तलवारें लहराईं। इसकी मंगलवार को एसपी ऑफिस में की गई। शहर के न्यू आनंद नगर में रहने वाले सैयद शाकिर अली ने बताया कि

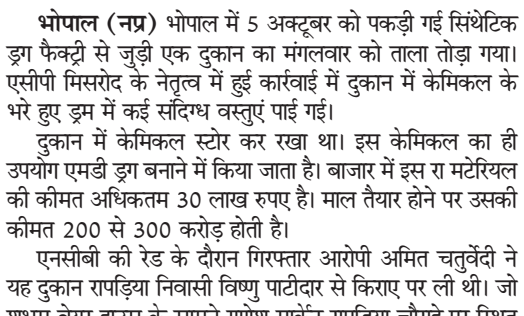

बदमाशों ने उन्हें धमकी देते हुए कहा कि तू जब-जब रिपोर्ट करेगा, ऐसे ही चाकू मारेंगे। देखते हैं कि तू शिकायत लेकर कहां-कहां जाता है। 42 साल के शाकिर पेशे से मजदूर हैं। उन्होंने बताया कि बदमाश घर के आसपास तलवार लेकर घूम रहे हैं। इस कदर परेशान हो चुका हूं कि अब घर छोड़ने तक को तैयार हूं। पुलिस के पास जाता हूं, पुलिस रिपोर्ट भी लिखती है, लेकिन उनको पकड़ती नहीं है। आज भी एसपी ऑफिस आकर बदमाशों के खिलाफ शिकायत की है।

गाली-गलौज से मना करने पर चाकू मारा था

शाकिर ने बताया, रविवार को उनके घर के बाहर बदमाश बब्लू, अमजद और सलीम पंडा कुछ लोगों के साथ गाली-गलौज कर रहे थे। उन्हें समझाया, इसके बाद उन्होंने मुझ पर तलवार और चाकू से हमला कर दिया। दूसरे दिन सोमवार को हनुमानताल थाने में केस कराया। इसी दिन की रात 11 बजे तीनों बदमाश तलवारें लेकर आ गए। शाकिर ने बदमाशों की शिकायत आज एसपी ऑफिस में की। एएसपी ने हनुमानताल थाना प्रभारी को एक्शन लेने को कहा है।

एएसपी ने दिए गिरफ्तारी के निर्देश

शाकिर का कहना है कि अमजद और उसके साथियों का न्यू आनंद नगर में आतंक है। वे आए दिन किसी न किसी के साथ मारपीट करते रहते हैं। एएसपी सूर्यकांत शर्मा ने शिकायत को गंभीरता से लेते हुए हनुमानताल थाना प्रभारी को बदमाशों को गिरफ्तार करने के निर्देश दिए हैं।

दशहरा पर नए शहर आएगी बाबा महाकाल की पालकी

शमी पूजन कर वापस मंदिर लौटेगी, वर्ष में एक बार फ्रीगंज आने वाली सवारी

उज्जैन (नप्र)। विजया दशमी पर्व के अवसर पर 12 अक्टूबर शनिवार को शाम चार बजे श्री महाकालेश्वर मंदिर से बाबा महाकाल की सवारी नए शहर में भ्रमण के लिए आएगी। चांदी की पालकी में भगवान महाकाल विराजित होकर विभिन्न मार्ग से होकर दशहरा मैदान पहुंचेंगे। यहां पर शमी पूजन के बाद सवारी वापस महाकाल मंदिर लौट जाएगी।

दशहरा पर्व पर वर्ष में एक बार शाम को 4 बजे राजाधिराज श्री महाकाल नए शहर में भी प्रजा को दर्शन देने के लिए चांदी की पालकी में सवार होकर आते है। 12 अक्टूबर को मंदिर के सभा मंडप में पूजन-अर्चन के बाद सवारी दशहरा मैदान के लिए रवाना होगी। मंदिर परिसर के बाहर सशस्त्र पुलिस बल के जवान राजाधिराज महाकाल को सलामी देगें। सवारी के साथ पुलिस बैंड, पुलिस घुड़सवार दल, सशस्त्र पुलिस के जवान, मंदिर के पंडे-पुजारी, अधिकारी-कर्मचारी व भक्त रहेंगे। हालांकि इस बार संभव है कि राजसी स्वरूप में सवारी निकालने के लिए चुनिंदा भजन मंडलियों को भी शामिल किया जाए। सवारी शहर के विभिन्न मार्गों से होकर दशहरा मैदान पहुंचेगी। यहां पर रावण दहन के पूर्व दशहरा मैदान पर बाबा महाकाल का विधि-विधान से पूजन के बाद शमी वृक्ष का पूजन होगा। इसके बाद सवारी पुनः मंदिर के लिए रवाना हो जाएगी। दशहरा मैदान पर पूजन की व्यवस्था मंदिर समिति द्वारा ही की जाती है।

इन मार्गों से होकर निकलेगी सवारी

श्री महाकालेश्वर मंदिर से शुरू होकर सवारी महाकाल घाटी, पटनी बाजार, गोपाल मंदिर, छोटा सराफा, सती गेट, कंठाल, नई सड़क, दौलतगंज, मालीपुरा होती हुई देवास गेट, चामुंडा माता चौराहा से ओवर ब्रिज होते हुए, फ्रीगंज टावर चौक, माधव नगर चिकित्सालय के सामने पुलिस कंट्रोल रूम होकर दशहरा मैदान पहुंचेगी। यहां पर पूजन के बाद सवारी वापसी में कंट्रोल रूम के सामने से घास मंडी चौराहा, शहीद पार्क, टावर चौक फ्रीगंज ओवर ब्रिज से संख्या राजे धर्मशाला, देवास गेट, दौलतगंज, तोपखाना से महाकाल घाटी होकर वापस मंदिर पहुंचेगी।

महाकाल मंदिर के शिखर पर चढ़ेगी नई ध्वजा

विजया दशमी के अवसर पर श्री महाकालेश्वर मंदिर के शिखर पर ध्वजा बदली जाएगी। प्रतिवर्ष दशहरा के अवसर पर मंदिर परिसर में स्थित श्री पंचायती महा निर्वाणी अखाड़ा द्वारा ध्वजा का पूजन कर शिखर पर ध्वजा बदली जाती है। तहसील कार्यालय नई ध्वजा, रस्सी, बांस, पूजन सामग्री व दक्षिणा उपलब्ध कराता है। दशहरा पर्व पर सुबह सात बजे आरती के बाद नई ध्वजा का पूजन कर शिखर पर फहराई जाती है।

नए शहर में साल में एक बार इसलिए जाती है सवारी

नया शहर जिसे आजकल फ्रीगंज कहा जाता है। लेकिन फ्रीगंज पुराना शहर ही रहा है और यही नगर की अंतिम सीमा रही है। भगवान महाकाल की सवारी साल में एक बार दशहरा मैदान तक सवारी के रूप में आती है। वहां पर राजा शस्त्र पूजा, शमी पूजा करते थे तो सानिध्य उपस्थिति भगवान महाकाल की मानी जाती थी। भगवान महाकाल के सानिध्य में शस्त्र पूजन, शमी पूजा होने के बाद वहां उपस्थित लोग शमी वृक्ष से शमी की पत्तियां लूटते थे और घरों में ले जाकर मित्रों को शमी की पत्तियों को स्वर्ण मानकर एक-दूसरे को दिया जाता था। यह परंपरा अनादि समय से चली आ रही है। इस परंपरा का निर्वाहन आज भी मंदिर के पुजारी-पुरोहितों द्वारा किया जा रहा है।

इसलिए दशहरा पर शमी पूजन में शामिल होते हैं बाबा महाकाल

श्री महाकालेश्वर मंदिर के पुजारी पं. महेश पुजारी ने बताया कि भगवान महाकाल उज्जैन नगरी के राजा हैं। राजा होने के नाते जितने भी पर्व-त्योहार होते है, उसमें राजा की उपस्थिति अनिवार्य होती है। जिस तरह से श्रावण मास, कार्तिक मास में पुराने शहर में सवारी के रूप में भगवान की उपस्थिति नगर में देखते हैं। इसी तरह विजय दशमी पर्व दशहरा पर भी भगवान महाकाल की उपस्थिति नगर में रहती है। पहले उज्जैन का राज्य ग्वालियर राजघराने से चलता था। दशहरा पर्व पर जब भी शमी पूजा और शस्त्र पूजा होती थी, उसमें ग्वालियर के राजा आते थे। लेकिन भगवान महाकाल अवंतिका के राजा हैं। इसलिए उन्हें आमंत्रित किया जाता था।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव 10 अक्टूबर को करेंगे सम्पदा 2.0 का शुभारंभ

ई-साइन एवं डिजिटल हस्ताक्षर से दस्तावेज होंगे तैयार : वाणिज्यिक कर मंत्री श्री देवड़ा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव पंजीयन एवं मुद्रांक विभाग के सम्पदा 2.0 सॉफ्टवेयर का शुभारंभ 10 अक्टूबर 2024 को करेंगे। कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कन्वेंशन सेन्टर में दोपहर एक बजे शुभारंभ होगा। वित्त एवं वाणिज्यिक कर मंत्री श्री जगदीश देवड़ा ने बताया कि संपत्ति

- **आधार और पेन से क्रेता और विक्रेता की होगी पहचान**
- **रजिस्ट्री प्रक्रिया होगी आसान, प्रदेश में रजिस्ट्री के नये नियम होंगे लागू**

पंजीकरण प्रक्रिया को डिजिटल बनाने की दिशा में राज्य शासन का यह एक महत्वपूर्ण कदम है। प्रदेश में रजिस्ट्री के नये नियम लागू किये गये है। इस उन्नत सॉफ्टवेयर का पायलेट प्रोजेक्ट का क्रियान्वयन गुना, हरदा, डिण्डौरी और रतलाम जिलों में सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया गया है। आगामी गुरूवार को इसे प्रदेश के सभी 55 जिलों में लागू किया जायेगा।

सम्पदा 2.0 से ई-केवाईसी से होगी पहचान

सम्पदा 2.0 से ई-केवाईसी से पहचान होगी। इसकी विशेषताओं में संपत्ति की जीआईएस मैपिंग, बायोमैट्रिक पहचान और दस्तावेजों का स्वतः प्ररूपण शामिल है। इस प्रणाली में दस्तावेजों का निष्पादन ई-साइन और डिजिटल सिग्नेचर से किया जाएगा, जिससे गवाह लाने की अनिवार्यता समाप्त हो जाएगी। कुछ दस्तावेजों के पंजीकरण के लिए अब उप पंजीयक कार्यालय में व्यक्तिगत उपस्थिति की आवश्यकता नहीं होगी। पंजीयन अधिकारी से संवाद वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से किया जाएगा, और कई मामलों में किसी भी प्रकार के इंटरैक्शन की आवश्यकता नहीं होगी। व्यक्ति की पहचान के लिए वीडियो केवाईसी का प्रावधान भी रखा गया है।

सम्पदा 2.0 - विशेष मोबाइल एप

सम्पदा 2.0 विशेष मोबाइल एप भी लॉन्च किया जा चुका है। यह नवाचार न केवल आम जनता के लिए सुविधाजनक होगा, बल्कि मध्यप्रदेश को ई-गवर्नेंस की दिशा में एक अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित करने में भी मदद करेगा। यह पहल साइबर तहसील और डिजिटल प्रक्रियाओं से प्रदेश के राजस्व संग्रहण को भी सुचारू रूप से संचालित करेगी।

ई-साइन एवं डिजिटल हस्ताक्षर से होगा दस्तावेज का निष्पादन

पंजीयन के लिये ई-साइन एंव डिजिटल हस्ताक्षर से दस्तावेज का निष्पादन होगा। दस्तावेजों की ई-कॉपी डिजी लॉकर, व्हाट्सएप, और ई-मेल के माध्यम से उपलब्ध होगी। साथ ही ई-स्टाम्प सृजित करने की सुविधा भी होगी। संपत्ति की सर्च प्रक्रिया को और अधिक सरल बनाया गया है।

जम्मू-कश्मीर में बहुमत पर कांग्रेस ने स्टॉल लगाकर जलेबी बनाई

हरियाणा में भाजपा को बढ़त पर सीएम यादव ने कहा- राहुल गांधी फेल हुए

भोपाल (नप्र)। हरियाणा में तीसरी बार भाजपा को बहुमत मिलने पर मध्यप्रदेश के सीएम डॉ. मोहन यादव ने एक्स पर लिखा, 'ये चुनाव कांग्रेस का कभी था ही नहीं, बल्कि ये चुनाव राहुल गांधी के फेल होने का था।' भोपाल में प्रदेश भाजपा कार्यालय में प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा को नेताओं ने जलेबी खिलाकर मुंह मीठा कराया।

जम्मू कश्मीर में नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस गठबंधन को बढ़त के बाद पीसीसी कार्यालय के बाहर कांग्रेस प्रवक्ता अमित शर्मा ने स्टॉल लगाकर लोगों को खुद जलेबी बनाकर खिलाई।

सीएम बोले- जनता भी विकास को पसंद करती है- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने एक्स पर लिखा- हमें उम्मीद थी कि निश्चित रूप से भाजपा की सरकार ने जो 10 साल में काम किया है। पीएम मोदी की कार्यपद्धति का असर पड़ा है और यही कारण है कि हरियाणा में तीसरी बार भाजपा की सरकार बनने जा रही है। सभी निर्वाचित जनप्रतिनिधियों को मैं बधाई देता हूं।

मैंने खुद भी वहां का दौरा किया था और पहले भी कहा था कि असल में ये चुनाव कांग्रेस का नहीं था, बल्कि राहुल गांधी के फेल होने का था। भाजपा ने विकास के एजेंडे को आगे बढ़ाया है। हम सब मिलकर

विकास की बात करते हैं। जनता भी विकास की बात को ही पसंद करती है और इसलिए आज भाजपा का कमल फिर खिलने जा रहा है।

वीडी शर्मा ने कहा- भाजपा को ऐतिहासिक बहुमत मिला- वीडी शर्मा ने कहा, आज भाजपा के लिए ऐतिहासिक दिन है। दो राज्यों के चुनाव में भाजपा को सफलता मिली है। हरियाणा में ऐतिहासिक बहुमत मिला है। जम्मू कश्मीर में भी भाजपा ने नया इतिहास रचा है। हरियाणा की जीत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व को जनता ने आशीर्वाद दिया है। अमित शाह की कुशल रणनीति और जेपी नड्डा के साथ भाजपा के कार्यकर्ताओं की मेहनत और परिश्रम से हरियाणा में जनता ने आशीर्वाद देकर तय कर दिया कि आज भारत का विश्वास मोदी जी पर है। जम्मू कश्मीर में भाजपा ने अच्छा प्रदर्शन किया। सीएम मोहन यादव ने हरियाणा में बीजेपी को तीसरी बार बहुमत मिलने पर कार्यकर्ताओं को बधाई दी।

कांग्रेस प्रवक्ता बोले- जम्मू-कश्मीर में तानाशाही का अंत हुआ- अमित शर्मा का कहना है कि जम्मू कश्मीर में 10 साल तक हिटलरशाही, तानाशाही और लोगों को तोड़ने की मंशा से मोदी जी सरकार चला रहे थे। आज उसका अंत हुआ है। राहुल गांधी ने लाल चौक पर कहा था- ये देश भाईचारे, एकता और संविधान से चलने वाला है। आज संविधान और उस भाईचारे की जीत है।

किसानों, पहलवानों को रोकने बीजेपी ने कीलें बिछाईं- अमित शर्मा ने कहा, मोदी सरकार ने हरियाणा में महिला, किसान नौजवान और पहलवान को रोकने के लिए बड़ी-बड़ी कीलें और हथियार लगाए थे। किसानों ने उसका जवाब दिया है। हरियाणा में भी कांग्रेस की सरकार बनेगी। जम्मू-कश्मीर की जलेबी सिक चुकी है। जलेबी की मिठास भाजपा के नेताओं ने जम्मू कश्मीर में चखी नहीं थी। वहां जनता को खट्टे बेर खिलाए थे।

कश्मीरी पंडित भी जलेबी से मुंह मीठा कर रहे- शर्मा ने कहा- आज जलेबी का दिन है। जम्मू कश्मीर की आवाम ने उस मिठास से लोकतंत्र को जागृत किया है। जिन कश्मीरी पंडित पर राजनीति की जा रही थी, आज वो कश्मीरी पंडित भी मीठी जलेबी खा रहे हैं।